"ढाक के तीन पात" की सभी कहानियां जीवन के सत्य की परिचायक है। इन कहानियों की शैली अत्यंत रोचक और मर्मस्पर्शी है। भाषा में गति शीलता के साथ साथ प्रौढ़ता है।

ढाक के तीन पात

हमारे कुछ अन्य प्रकाशन

पंख हीन	उपन्यास	श्री शरण	३॥)
जूही की कली	"	" "	२।)
काला ब्राह्मण		" "	२॥।)
सांचा	"	प्रभाकर माचवे	२।)
वह हार गई	"	सत्य देव शर्मा	२।)
साहित्य सुमन	निबन्ध	श्री शरण	४)
विचार और समस्यायें	"	" "	६)
निबन्ध कौमुदी	"	" "	३॥।)
पगली	कहानी संग्रह	मोपासां	२)
जनरव	कहानी संग्रह सं०	रामानन्द 'दोषी' रमाकान्त 'कान्त'	३॥)
तुरप चाल	" "	मिन्टो अनु० "कान्त	२॥)
ढाक के तीन पात	" "	रमाकान्त 'कान्त'	२)
तूलिका	कविता संग्रह सं०	'कान्त" मधुर शास्त्री	१॥)
समय के स्वर	एकांकी संग्रह	मोहन चोपड़ा	२॥)

ढाक के तीन पात

[विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय कहानीकार मोपासाँ के आधारसहित]

रमाकान्त 'कान्त'

नव साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली-१

प्रथम संस्करण

नवम्बर १९५५

आवरण पृष्ठ श्री बी० ए म० आनन्द

मूल्य दो रुपये

प्रकाशक :—नव साहित्य प्रकाशन ६२७६ मुलतानी ढाँडा, नई दिल्ली-१

मुद्रक :—कुमार फाईन आर्ट प्रेस, चाह रहट, देहली ।

उन अपनों को ----

जिन्होंने जीवन के हर मोड़

पर

धोका दिया

'कान्त'

भूमिका

"ढाक के तीन पात" की सभी कहानियाँ मैंने पढ़ी हैं। ये कहानियाँ विश्व-विख्यात कथाकार मोपासाँ की प्रसिद्ध कहानियों के आधार पर लिखी गईं हैं। मोपासाँ की प्रतिभा और अद्वितीय शैली चमत्कार से विश्व साहित्य कृत-कृत्य हुआ है। मेरे विचार में संसार का एक भी साहित्य-रसिक ऐसा नहीं होगा जिसने मोमासाँ की कहानियों के अनुवाद न पढ़े हों। हिन्दी में भी प्रायः उनकी सभी प्रमुख कहानियाँ अनूदित हुई हैं। लेकिन "ढाक के तीन पात" की कहानियां अनुवाद नहीं हैं बल्कि इनमें "कान्त" जी की अपनी मौलिकता भी विद्यमान है। कथा वस्तु मोमासाँ की है तो कहानी का सारा वातावरण उनका अपना है। उनके पात्र भारतीय हैं, उनके व्यवहार भारतीय हैं, वेष भूषा और आचार-विचार भारतीय है तथा इन कहानियों को पढ़ने के दौरान में पाठक को कहीं ऐसा आभास नहीं होता कि ये घटनायें उसके इर्द-गिर्द नहीं घटी हैं या वह इन कहानियों के बहुत से पात्रों से परिचित नहीं है। सारा सूत्र पकड़ा--सा जान पड़ता है और इस प्रकार रसचर्वणा में कोई व्याघात उपस्थित होने की संभावना नहीं होती।

मैं नहीं जानता कि इस प्रकार के साहित्य का आकलन आलोचक किस प्रकार करेंगे, इसका मूल्यॉकन होगा भी या नहीं पर मेरा विश्वास है कि इसे सत्साहित्य की संज्ञा मिलनी चाहिये। ऐसे प्रयासों में एक बात कभी-कभी खटक जाती है। और वह बात यह है कि लेखक महोदय मूल लेखक का आभार तक प्रकट करने की अनुकंपा भी नहीं करते। लेकिन "ढाक के तीन पात" के लेखक ने मोपासाँ का नाम देकर अपनी साहित्यिक ईमानदारी का सबूत दिया

है। मैं समझता हूँ इस प्रकार की स्वीकृतियाँ कलंक नहीं हैं वरन् वे सत्य की उद्घोषणाएं हैं।

इन कहानियों के शीर्षक बड़े ही रोचक और उपयुक्त हैं। उनमें एक सैन्स है और इस तरह ये सभी जीवन के प्रतीक हैं। इन कहानियों की महानता के बारे में तो कुछ भी न कहना ही सब कुछ कहना है, कि संसार ने एक स्वर से अमर फ्रांसीसी लेखक मोपासाँ की कला का लोहा मान लिया है। फिर भी "ढाक के तीन पात" की अपनी कुछ विशेषताएं हैं जिनका जिक्र करना असंगत नहीं होगा। इन कहानियों की शैली अत्यंत रोचक और मर्मस्पर्शी है। भाषा में गतिशीलता के साथ-साथ प्रौढ़ता भी है। इनमें देश काल और वातावरण का पूरा ध्यान रक्खा गया है। केवल मात्र पात्रों के नाम ही भारतीय नहीं कर दिये गये हैं बल्कि उनका सारा आवेष्टन भारतीयता से भरा है। इन कहानियों में विदेशीय समाज, वातावरण और संस्कृति की बू नहीं आती। इस दृष्टि से यह तो कहा ही जा सकता है कि इस पुस्तक के लेखक में अपनी एक मौलिक प्रतिभा है। मैंने लेखक की कुछ मौलिक कहानियाँ भी पढ़ी हैं, और उनके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि गल्प-साहित्य के क्षेत्र में हमें उनसे अच्छी कहानियाँ प्राप्त करने की आशा है।

आज, इस ये प्रयास के लिए मैं लेखक को बधाई देता हूँ। इससे पूर्व भी ऐसे प्रयत्न हुए हैं लेकिन उनमें इतनी सफलता नहीं मिली। आशा है हिन्दी के पाठक और लेखक भी इसका स्वागत करेंगे।

रामावतार त्यागी

६—१०—५५
रंग महल होटल
दरियागंज, दिल्ली।

अनुक्रमणिका

ढाक के तीन पात

कमल और आनन्द एक होटल में दोपहर का भोजन कर रहे थे, आंखें सड़क की भीड़ पर लगी हुई थी ! नैनीताल की शाम तो निराली होती है । उसकी ठंडी-ठंडी हवा में जादू का असर होता है । सैर करने वाले की इच्छा करती है कि घूमते हुए कहीं दूर निकल जाये और ज़ंगल के बीच ऊंचे ऊंचे पेड़ों में कहीं आनन्द लें । वे चाँदनी में नहाते हुए झरने, चमकते हुए जुगनू और बुलबुलों की दर्द भरी पुकार, हृदय में कुछ अजीब-अजीब सा होने लगता है !

कमल ने आह भरते हुए कहा :

मैं बूढ़ा हो रहा हूँ मित्र ! अब तो केवल जिन्दगी में मायूसी ही मायूसी है । एक दिन था, जब ऐसी संध्यायें मुझे पागल बना देती थी, मैं अपने काबू में न रहता था ! पर अब तो केवल पछतावा है । कभी कभी मैं सोचता हूँ जवानी इतनी जल्दी कहाँ चली गई ? पर अब सोचने से भी क्या, सब खत्म हो गया, वह प्यार, वह पागलपन, जवानी सब खत्म हो गया !

कमल करीब ४० वर्ष का था ! शरीर मोटा और बाल खिचड़ी नुमा ! उसका दोस्त आनन्द उससे कुछ छोटा था, पर मोटा कम और कमल से अधिक जिन्दादिल !

कमल ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा :

पहले मुझे कभी महसूस भी न हुआ था कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। हमेशा ही मैं खुश और स्वस्थ रहता था। शीशे में हर रोज अपनी शक्ल देखने वाला अपने शरीर के होने वाले परिवर्तन को महसूस भी कैसे कर सकता है ? परिवर्तन होता जरुर है, मगर उसकी गति इतनी धीमी होती है; कि उसे पहले पहल पहचाना ही नहीं जाता। इसलिए जब हम एक दम आप को बदला हुआ देखते हैं तो एक दम चौंक उठते हैं। और जहां तक स्त्रियों की बात है मुझे उन पर तरस आता है, जब तक उनका रूप रंग है, तभी तक उन में मदहोशी है, आकर्षण है, जिन्दगी है। और यह रूप-रंग अधिक से अधिक दस वर्ष तक रहता है।

हाँ, तो इस तरह मैं बूढ़ा होता गया ! पर अपने आप को जवान ही समझता रहा, मस्त, बेफिक्र क्यों कि कोई भी शारीरिक दुर्बलता मुझ में नहीं थी। मगर एक दिन की घटना ने मेरी आंखें खोल दी और मुझे पता चला कि वास्तव में मैं बूढ़ा हो गया हूँ।

जवानी के दिनों में प्यार और रोमान्स किसकी जिन्दगी में नहीं होता ? मेरी भी जिन्दगी में था। मैं उसे प्यार करता था, पर यह बात आज से २२ वर्ष पुरानी है !

मैं उसे एक झील के किनारे मिला था सुबह के वक्त वहां नहाने वालों के कारण अच्छी खासी रौनक रहती है। झील पर जाने के दो रास्ते हैं एक आने का और एक जाने का ! झील के किनारे पर एक बहुत बड़ी चट्टान है यहां से बैठ कर स्त्री पुरुषों को नहाते खूब अच्छी तरह से देख सकते हैं,

जब पहली बार मैंने उस जादूगरनी को नहाते हुए देखा तो मैं उसके वश में हो गया, क्या भराव था उसके शरीर का, कितना आकर्षण था उसमें। कुछ औरतों में इतना आकर्षण होता है, जिन्हें देखते ही हमारी धमनियां झंकृत हो जाती है ! और ऐसा महसूस होता कि जिसकी तलाश में

हम में वह यही है । सरोज से जिस समय मेरी आंखें मिली तो इसी तरह के भावों से भरे हृदय में उथल-पुथल होने लगी ।

उससे परिचय होने के बाद पूरी तरह मैं उसके जादू में बंध गया, उसके पास एक ऐसी मोहिनी थी जिसने मुझे बरबाद कर दिया । पर उस समय इस बरबादी में भी एक आनन्द का अनुभव होता था ! उस हृदय की पीड़ा को मैं ईश्वरीय वरदान समझता था, सरोज की बड़ी-बड़ी आंखें, कटाक्ष, मुस्कराहट, गरदन के पिछले भाग पर खेलती हुई छोटी छोटी घुंघराली लटें, इन सब ने मुझे पागल बना दिया था ! उसकी सफेद सलवार और कुर्ता मुझे संसार के सब वस्त्रों से सर्वश्रेष्ठ लगती ।

कुछ दिन बाद उस का विवाह हो गया पर उसका पति सुन्दर न था काला हब्शी की तरह, पर न जाने क्यों उसने उससे शादी कर ली ।

मैं सरोज से प्यार करता था !

उसमें कितना सौन्दर्य और नजाकत थी मानों वह यौवन और सौन्दर्य की देवी हो । उससे पहले इस गहराई को मैंने कभी महसूस नहीं किया था, कि यह कोमलता, कमनीयता, और सौन्दर्य की देवी है । और उसमें जादू ही जादू भरा पड़ा है । मुझे अनुभव नहीं था कि उसके गालों की गोलाई में, होठों के कंपन में, सीप जैसे कानों के घुमाव में, मोटी मोटी आंखों में यहां तक कि शरीर के उस अंग में जिस में कोई खास विशेषता नहीं हो सकती यानी नाक में भी इतना आकर्षण था कि मन को चंचल कर दे !

हमारी मित्रता ३ वर्ष तक रही, आखिर उनकी बदली अमृतसर हो गई और मैं टूटा हृदय ले कर यहीं रह गया । मगर उसकी याद

सदव मुझे सताती रहती उसमें और मुझ में मीलों का अन्तर था मगर मुझे ऐसा लगता था मानों वह मेरे बिल्कुल पास है। साल पर साल गुजरते चले गये दिन आता और चला जाता मगर मैं उसे भूल न सका। उसकी सूरत मेरी आंखों में समाई रहती !

बारह वर्ष आदमी के जीवन में क्या होते हैं, वह एक के बाद एक तेजी से बिना पता दिये बीतते चले है। वर्ष लगता है ! कितना समय है पर जब बीत जाता है तो लगता है कल की ही तो बात है।

बारह वर्ष बीत गये। मगर नैनीताल के सुहावने दिन याद करके ऐसा लगता, मानो अभी की ही तो बात हैं।

पिछले बसन्त की बात है। कहीं विशेष कारणों से मैं अपने घर जा रहा था। गाड़ी छूटने ही वाली थी कि हमारे डिब्बे में एक भारी भरकम स्त्री चढ़ी जिसके साथ चार बच्चे भी थे। मैंने उसकी तरफ नजर डालने की जरुरत न समझी। उसका शरीर भारी था मुँह चपटा, और बालों को एक मैले से फीते से बाँध रक्खा था। गाड़ी पकड़ने के लिए उसे दौड़ना पड़ा था इस लिए हांफ रही थी, बच्चे डिब्बे में आते ही कचकच करने लगे। मैं ने अपना ध्यान बदलने के लिए अखबार खोल कर पढ़ने लगा।

गाड़ी नैनीताल से आगे बढ़ रही थी ! अकस्मात उसने मुझ से पूछा !

आपका नाम "कमल" तो नहीं है ?

मैंने हाँ' की तो वह खिलखिला कर हँस पड़ी। हँसने पर मुटापे के कारण उसकी आंखें छिप गईं। वह हँस रही थी; मगर उसकी हँसी में भी पश्चात्ताप का भाव प्रगट हो रहा था।

आपने पहचाना नहीं मुझे ? उसने पूछा।

याद आ रहा था—मैंने इसे कहीं देखा है, पर कहाँ ? दिमाग पर बहुत जोर डालने पर भी यह याद न आया।

मैंने झिझकते हुये उत्तर दिया। मैं आपको जानता तो हूँ मगर नाम ध्यान से उतर गया है। उसने शरमाते हुये कहा:—मैं सरोज हूँ।

मुझे एक गहरा धक्का लगा। जिन्दगी में मुझे यह दिन भी देखना था! मेरी आंखों के सामने पड़ा परदा जैसे किसी ने फाड़ कर जिन्दगी का भयंकर रूप मेरे सामने उपस्थित कर दिया हो।

वह मोटी और बदसूरत औरत सरोज थी और पिछले सालों में वह चार पिल्लों को भी पैदा कर चुकी थी। कहाँ गई वह मोटी मोटी आंखें, सुन्दर शरीर, बेजोड़ घुंघराले बाले जो सीधे बंधे हुए भी सुन्दर लगते थे।

अभी कल ही की सी तो बात है। वह सौन्दर्य की देवी थी, लेकिन आज यह क्या, क्या यह सब सच है? ईश्वर के प्रति मेरा हृदय विद्रोही हो उठा। प्रकृति की पाशविकता, क्रूरता, और ध्वंसात्मकता देख कर मुझे क्रोध आ रहा था।

मैं अचम्भे से उसे देख रहा था!

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और मेरी आंखों में उस की जवानी के लिए, उसकी जवानी की मौत के लिए आँसू उमड़ पड़े!

उसका हृदय बहुत दुखी था। वह भर्राये गले से बोली!

मैं बदल गई हूँ ना? पर कमल! अब मैं एक माँ हूँ, केवल माँ। पहले के दिन तो छोड़ कर चले गये, जो कुछ उस समय था वह नहीं रहा। मुझे मालूम था अगर कभी तुम मुझे मिलोगे तो पहिचान भी न सकोगे। मेरी बड़ी लड़की बारह साल की हो गई है।

मैंने उसकी लड़की को देखा उसने सरोज के सौन्दर्य की हल्की सी स्पष्ट झलक थी और मैंने महसूस किया कि जिन्दगी उस तेज दौड़ती रेल की तरह है जो देखते ही देखते सामने से गुजर जाती है।

नियत स्टेशन पर डिब्बे से उतरते समय मैंने एकबार उसकी ओर देखा और चल दिया, उससे कहने के लिए मेरे पास कुछ न था।

घर पहुँच कर सब से पहले अपना चेहरा देखा, और काफी देर तक अपने तीस साल पहले चेहरे को याद करता रहा।

जब पिछली गर्मियां बिताने के लिये बम्बई के एक धनी मानी परिवार की एक सुन्दर स्त्री एक पहाड़ी स्थान पर पहुची तो धनियों की सोसायटी में प्रचलित रीति-रिवाज के अनुसार उनके पति उस स्थान पर नहीं गये थे।

खानदान की प्रतिष्ठा रखते हुए और साथ ही साथ धन-दौलत के महत्व को पहिचानते हुए उस स्त्री ने उस समय के एक धनी युवक से विवाह किया था। परन्तु यह सैद्धांतिक विवाह पति-पत्नी के हृदय में प्रेम की जड़ें मजबूत करने में असमर्थ रहा और इसी लिये खानदानी प्रतिष्ठा व मान को कायम रखने के एक उतराधिकारी को जन्म देने के बाद पति-पत्नि ने अलग अलग राहें अपना ली। नौजवान और आराम पसन्द पति ने नाइट क्लब, रेस-कोर्स और नाटकों की रंग रलियों में अपने आपको डुबो दिया, और उस स्त्री ने अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को नाच-घरों सैर सपाटे के स्थानों और पहाड़ों की बर्फीली आराम जगहों को समर्पित कर दिया।

अब की बार जब वह पहाड़ से लौटी तो अपने साथ एक उच्च परिवार के मुस्लिम युवक को भी साथ ले आई, यह नौजवान भी इस स्त्री पर इतना अधिक मोहित था कि इसके इशारों पर नाचता था।

समय की चाल को पहिचान ते हुए इस स्त्री ने बम्बई के पास ही

एक सजा सजाया कमरा किराये पर ले लिया और छिप-छिप कर अपने प्रेमी से इस बंगले में रंगरलियां मनाने लगी।

पर सर्दियों के आते-आते वह इन चोरी छिपे की मुलाकातों से ऊब गई! उसकी इच्छा थी कि इस प्रकार का प्रबन्ध हो जाए कि वह दोनों शान्ति पूर्वक अधिक से अधिक देर मौज-मौज में एक दूसरे के साथ रह सके! वह चाहती थी कि कोई ऐसी युक्ति निकल आये कि वह दौनों क्षण भर के लिये भी एक दूसरे से विलग न हो, और पूर्णतः आजादी के साथ एक ही मकान में रह सकें!

लेकिन यह कोई अधिक पेचदार बात न थी। स्त्री के लिये कोई भी कठिनाई, कठिनाई नहीं होती, स्त्री अनहोनी को होनी बना सकती है। दो एक दिन दिमाग पर जोर डालने के बाद उसने इस कठिनाई को बड़े सुन्दर ढंग से सुलझा लिया और एक चतुर खिलाड़ी की भांति शतरंज पर मोहरे जमा कर अपना नक्शा बिठा लिया।

उस मुस्लिम युवक की सूरत साधारण पुरुषों से बिल्कुल अलग थी। उसके सौन्दर्य में लड़कियों जैसी कोमलता थी, उसकी लम्बाई साधारण, शरीर पतला किन्तु भरा हुआ। यदि उसे स्त्री के कपड़े पहना दिये जायें तो एक सुन्दर स्त्री होने में किसी को सन्देह नहीं हो सकता था।

इन स्त्री जैसे गुणों के कारण उसने उस युवक से कहा कि वह स्त्री जैसे कपड़े पहना करें जिससे वह एक सुन्दर नवयुवती प्रतीत हो, और बिना किसी रोक-टोक के वेश बदल कर जब जी चाहे मिल सके।

लगभग जाड़ों के दिन थे, उस स्त्री ने अपने प्रेमी के लिये स्त्रियों जैसे गर्म कपड़े सिलवाने का आदेश दे दिया; और इस बीच में अपने पति से कह दिया कि उसकी एक बहुत प्यारी सहेली जिससे उसने

पिछली गर्मियों में पहाड़ पर नई २ मित्रता की थी, वह जाड़े बिताने के लिये बम्बई आई हुई है, और समय-समय पर उससे मिलने यहां आती रहेगी। पति ने उपेक्षा से सर हिला दिया, सदैव की भांति वह नाइट-क्लब चला गया।

पति के चले जाने के आधे घण्टे बाद एक बन्द गाड़ी बंगले में दाखिल हुई और उस में से एक कोमल स्त्री मुंह पर नकाब डाले उतरी और नरम-नरम कालीनों से ढकी हुई सीढ़ियों को पार करती हुई बंगले में चली गई। यह स्त्री के वेश में छुपा हुआ और कोई नहीं उस स्त्री का प्रेमी वह मुस्लिम युवक ही था। इस प्रकार की रंगरलियां अब नित्य प्रति होने लगी।

वह मुस्लिम युवक शीघ्र ही स्त्रियों जैसे कपड़े पहनने में अभ्यस्त हो गया; और कुछ इतने अच्छे ढंग से स्त्रियों का पार्ट अदा करने लगा कि शीघ्र ही शहर के विलासी-धनियों की लोलुप आंखें उसकी ओर उठने लगी। और इस नाटक में उसे भी उतना ही आनन्द आता था; जितना स्त्रियों को पुरुषों को उल्लू बनाने और तड़पाने में आता है।

मुसलिम युवक अब नित-नये गुल खिलाने लगा, वह पुरुषों से आँखें लड़ाता और उन्हें उल्लू बनाता।

एक दिन वह "मट्रो" सिनेमा के बाक्स में बैठा था उसने बहुत सुन्दर रंगीन फिराक पहन रखी थी, उसके बनावटी लम्बे घुंघराले बाल उसकी पीठ पर नागिन की तरह बल खा रहे थे। उसे बैठे अभी मुशकिल से पाँच ही मिनट हुए होंगे कि उसने देखा कि सामने के बाक्स में बैठा एक युवक उसे घूर रहा है। वह भी खनखियों से उसे देखने लगा, और उसे बढ़ावा देने लगा! "इन्टरवैल" होने पर बाक्स वाय ने उसे फूलों का गुच्छा लाकर दिया उसके साथ एक कार्ड था; जिस पर लिखा था।

"भगवान की कसम तुम संसार की सब से सुन्दर स्त्री हो, मुझ पर दया करो और मुझे एक बार अपनी सेवा में उपस्थित होने का मौका दो"।

मुस्लिम युवक ने उस प्रेमी का नाम पढ़ा जो इतना शीघ्र उसकी तीखी चितवन का शिकार हो गया था। वह होठों ही होठों में मुस्कराया और उसने अपना कार्ड जिस पर उसका बनावटी नाम बिलासिका लिखा था, इतना और लिख दिया, शो खत्म होने पर गेट के बाहर, और कार्ड लाने वाले को दे दिया।

खेल खत्म होने पर उस मुस्लिम युवक ने जो मुंह पर हलका नकाब डाले था अपने मूर्ख प्रेमी को अपनी गाड़ी के पास खड़ा पाया! स्त्रीरूपी युवक ने दया दिखाते हुये उसे अपनी गाड़ी में बैठने की आज्ञा दे दी। रास्ते भर वह उससे बड़ी मीठी मीठी बातें करता आया परन्तु जब घर के नजदीक पहुँचा तो उसने बड़ा अशिष्टता का व्यवहार किया, जिससे उस नवयुवक को निराश होना पड़ा।

अब वह हर रोज सिनेमा जाता, हर रोज उस प्रेमी युवक के प्रेम भरे पत्र मिलते, हर रोज वह उसे गाड़ी में बिठलाता, पर इस सब के बाद भी उस युवक को निराश लौटना पड़ता। यह खेल महीनों चलता रहा, और न जाने कब तक चलता रहता परन्तु अचानक एक दिन ऐसी घटना घटी जिससे सारा भांड़ा फूट गया।

वह युवक जो उसके प्रेम में बुरी तरह फंसा हुआ था, संयोग से उस स्त्री का पति निकला जिससे वह मुस्लिम युवक प्यार करता था।

एक दिन जब वह मुस्लिम युवक और वह स्त्री बड़े शान्ति पूर्वक एक दूसरे की बांहों में बाहें डाले चुम्बनों का आदान-प्रदान कर रहे थे; सहसा स्त्री का पति आ धमका। यह दृश्य देख कर उसकी आंखों में खून उतर आया, दीवार से लटकी हुई तलवार उतार ली, और उस मुस्लिम युवक की ओर लपका; स्त्री तो अधमरी हो कर सोफों पर लुढ़क

गई और बेहोश हो गई। मुस्लिम युवक ने शीघ्र ही मेज पर पड़े हुए बनावटी वालों को सर रख लिया, और रेशमी लबादा ओढ़ लिया जिसे पहन कर वह महल में दाखिल हुआ था।

इस रूप को देख कर पति भौंचक्का रह गया, उस ने आश्चर्य से हकलाते हुए पूछा—तुम........तुम कौन हो ?

श्रीमान् ! मैं विलासिका हूँ ! और मैं यहां इस लिये उपस्थित हुआ हूँ कि आप के लिखे हुये प्रेम पत्र आपकी पत्नी को........!

नहीं...नहीं इसकी कोई आवश्यकता नहीं। उसने घबराते हुये प्रस्तावित स्वर में कहा :

उसकी तलवार म्यान में जा चुकी थी ! उसने आगे बढ़ते हुये कहा :—

आओ हम तुम समझौता करलें।

बहुत अच्छा ! मुस्लिम युवक ने धीरे से उत्तर दिया। मगर यह न भूल जाना मेरे पास तुम्हारे विरुद्ध कितना भयानक अस्त्र है !

इसके बाद दोनों व्यक्तियों ने एक दूसरे के सामने गर्दन झुका ली और यह अनहोनी बात खत्म हो गई।

उस दिन से दोनों पति-पत्नी के जीवन में शान्ति हो गई। उस स्त्री को फिर इस बात की आवश्यकता न हुई कि अपने प्रेमी से मिलने के लिये जनाने कपड़े पहना कर उसे बंगले में बुलाये, इसके अतिरिक्त पति और पहले की बनावटी...विलासका...मुस्लिम युवक से काफी घनिष्ठता हो गई। अब वह दोनों प्रायः साथ साथ दिखाई देने लगे।

बाढ़ और बन्धन

श्मशान फौजी अफसरों से भरा हुआ था। चमकीली और भड़कीली वर्दियों में वह चारों ओर इस प्रकार खड़े थे मानों—धरती पर फूल बिखेर दिये हों। हरी पीली टोपियां, रंगीन पट्टीदार पतलूनें, कंधों पर चमकते हुए सुनहरी बटन लगाये कुछ कब्रों के बीच की तंग राहों पर इधर उधर टहल रहे थे। कब्रों पर की सलेबें कुछ संगमरमर, कुछ लकड़ी और कुछ लोहे की बनी थी। जो मनुष्य जाति की गई-गुजरी यादगारों पर बांहें फैलाये खड़ी थी।

कर्नल हनीफ की पत्नी को अभी अभी मिट्टी की भेंट किया गया था, दो दिन पूर्व वह नदी में नहाते हुये डूब कर मर गई थी। कब्रिस्तान से एक एक करके सब लोग वापस जा रहे थे, यहां तक कि मुल्ला भी चला गया था। लेकिन कर्नल अभी तक अपने दो साथी अफसरों के बीच उनका सहारा लिये खड़ा था, और टिकटिकी लगाये कब्र को इस प्रकार देख रहा था मानो उसकी नौजवान पत्नी कब्र से उठ कर फिर उसकी ओर मुस्करायेगी। बूढ़ा कर्नल लम्बे कद और छरहरे बदन का आदमी था, उसके सभी बाल सन की तरह सफेद हो चुके थे। तीन वर्ष पूर्व उसने अपने मित्र कर्नल जलाल की अनाथ लड़की से इस बुढ़ापे में विवाह किया था।

उसके दो साथी अफसरों ने जिनका वह सहारा लिये खड़ा था उसे

वापिस ले चलने का प्रयत्न किया। पर कर्नल हारे जुआरी की तरह आशा में गोते लगा रहा था, कि शायद 'वह'' फिर जाये ! उसने कहा—

नहीं ! अभी नहीं ! कुछ क्षण तो और ठहर लेने दो ! उसकी आंखें छलछला आईं, परन्तु वह अपनी वीरता की लाज के मारे आंसुओं को पलकों में ही पिरोये रहा। उसकी टांगें उसे सहारा देने से इनकार कर रही थीं। परन्तु फिर भी वह खड़ा था, और एकटक उस खाली स्थान की ओर देख रहा था जहां उसका प्यार, उसका जीवन, उसका स्वर्स्व खो चुका था !

पीछे से जरनल हरीश ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुये कहा—

लौट चलो मेरे मित्र। लौट चलो, यहां खड़े रहने से क्या लाभ है ? जाने वाले वापिस नहीं आया करते ! कर्नल ने उसकी ओर देखा और अपने क्वाटर की ओर चल दिया। वह उदास मन ज्यों ही कमरे में घुसा उसे मेज पर एक पत्र पड़ा दिखाई पड़ा, उसने उस पत्र को देखा तो वह आश्चर्य और अचम्भे से गिरता-गिरता बचा, यह तो लिखाई उसकी पत्नी की थी, जिसे वह अभी दफ्ना कर आ रहा है ! उस लिफाफे पर उसी दिन की डाकखाने की मोहर लगी हुई थी ! उसने पत्र पढ़ना आरम्भ किया !

मेरे प्यारे पापा !

मैं आपको बचपन में भी पापा कह कर पुकारा करती थी इसी लिए आज भी उसी नाम से सम्बोधन कर रही हूँ। जिस समय यह पत्र आपको मिलेगा, उस समय मैं मर चुकी हूँगी, और मनों मिट्टी ने अपनी गोद में मुझे आश्रय दे दिया होगा ! इसलिए शायद आप मुझे क्षमा कर दें !

मैं न आप से सहानुभूति की इच्छा रखती हूँ और न ही अपने पापों को आपकी नजरों से छिपाना चाहती हूँ ! मैं एक घंटे में आत्म-हत्या करने वाली हूँ, और चाहती हूँ कि मरने से पूर्व ईमानदारी के साथ अपनी आत्महत्या का कारण आपके सामने रख दूँ !

जिस समय आपने मेरे ऊपर अहसान करने के लिये; मुझ अनाथ से विवाह किया था तो मैंने आपको अपना सबसे बड़ा उपकारी समझते हुए अपना सर्वस्व आपको अर्पित कर दिया था ! मैं बिल्कुल अबोध बच्चों की तरह आपको प्यार करने लगी थी ! बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मैं अपने स्वर्गीय पिताजी को करती थी ! एक दिन जब मैं आपकी गोद में लेटी हुई थी, और आप मेरे होंटों पर चुम्बनों की बौछार कर रहे थे तो मैंने अचानक आपको पापा कहकर पुकारा था विश्वास कीजिए वह स्वर मेरे अन्तरतम से निकला था ! वास्तव में मैं आपको बाप की तरह ही प्यार किया करती थी ! आपने यह सुन कर हंसते हुये कहा था ।

मेरी······बच्ची······मुझे इसी नाम से पुकारा करो ।

फिर हम लोग शहर चले आये ! और पापा !······आप नाराज न हों तो कहूँ, मैं शहर आकर उसके प्रेम में फंस गई ! उफ ! मैंने लगातार दो वर्ष तक अपने आप पर काबू रक्खा. पर अधिक दिन तक मैं अपने आप को न सम्भाल सकी और बहुत प्रयत्न करने पर भी बदनामी की उस खाई में गिर पड़ी जहां मेरी इज्जत छीर-छीर हो गई !

वो कौन था ? पापा । आप कभी न जान सकेंगे क्यों कि मेरे चारों ओर कम से कम एक दर्जन फौजी अफसर मंडराया करते थे, जिनके विषय में आप ही बहुदा कहा करते थे; यह सब तुम्हारे अंग रक्षक है।

पापा । आपको मेरे सर की कसम उस नौजवान की खोज लगाने

का प्रयत्न कभी न करना क्योंकि उसने वही किया जो एक नौजवान पुरुष ऐसी परिस्थितियों में करता है। मुझे पक्का विश्वास है कि वह मुझे हृदय से प्यार करता था।

एक दिन जब प्रतिदिन की भाँति हम दोनों बेकेसे के टापू पर मिलने वाले थे। "आप जानते हैं कि यह टापू फैक्टरी के पास है,, मैं तैर कर टापू पर पहुंची वह वहाँ पहले से ही पहुँच जाता था और संध्या तक वहीं झाड़ियों में छिपा रहता था जिससे हम दोनों को कोई साथ आता जाता न देखले। हम दोनों प्यार के आलिंगन में बंधे थे, कि एक ओर झाड़ी के पीछे से एक व्यक्ति सामने आया, उसे देखकर मैं तो बुरी तरह घबड़ा गई और अचानक ही मेरे मुंह से चीख निकल गई! वह नया आने वाला व्यक्ति और कोई नहीं आपका अर्दली था! यह देख कर मेरे प्रेमी ने कहा! डार्लिंग! तुम जल्दी से तैर कर लोट जाओ, मैं सब ठीक कर लूंगा!

मैं इतनी घबड़ाई हुई थी कि डूबते-डूबते बची, और बहुत परेशानी की हालत में घर पहुँची! मुझे ऐसा लग रहा था मानो कोई भयंकर घटना घटित होने वाली हो!

एक घन्टे के पश्चात ड्राइंग रूम के बाहर गेलरी में "फिलप" मुझे मिला और धीमे स्वर में उसने मुझ से कहा--

मैडम! आप बिलकुल परेशान न हो, मैं आपका सेवक हूँ यदि कोई पत्र या सन्देशा भेजना हो तो मुझे आदेश दीजिये। मैं सब समझ गई, वह रुपये के लालच में बिका चुका था, मेरे प्रेमी ने उसे खरीद लिया था। मैंने उसे पत्र देने आरम्भ कर दिये, और वह हम दोनों के बीच हरकारे का काम करने लगा। दो माह तक इसी तरह चलता रहा। हम दोनों को उस पर इतना विश्वास हो गया था, जितना आपको उस पर!

पापा ! एक दिन प्रतिदिन की भाँति मैं इसी टापू पर तैर कर उस से मिलने गई तो देखा वह अभी तक नहीं आया था; और उसके स्थान पर आपका अर्दली मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने मुझ से साफ शब्दों में कहा कि अगर मैं उसे अपने साथ संभोग करने का समय नहीं दूंगी तो वह भांडा फोड़ देगा ! और सब पत्र आपको दिखा देगा !

उफ !...... पापा ! यह सुनकर मेरे पैर से जमीन निकल गई, और मैं डर से कांपने लगी। मैं सोच रही थी अगर इसने कह दिया तो मैं कहीं मुंह दिखाने योग्य भी नहीं रहूंगी। सब से अधिक डर मुझे आपका पता लग जाने का था, आप मुझे कितना प्यार करते हैं और मैंने आपको धोका दिया था ! मैं मरने से नहीं डरती थी यदि आप मुझे गोली से उड़ा देते, पर मैं डरती थी आपकी घृणा से ! मैं नहीं कह सकती कि उस समय मेरी क्या हालत थी मैं बिल्कुल पागल हो गई थी। अन्त में जब मेरी समझ मेरा साथ छोड़ गई तो मैं उस बदमाश का मुंह बन्द करने के लिये इस पाप पर उतारू हो गई ! उफ ! कितनी शर्मनाक बात थी !

हम औरतें भी कितनी कमजोर हैं; समय पड़ने पर पुरुषों की तरह कठोर कदम नहीं उठा सकती ! औरत यदि एक बार गिरती है तो गिरती ही चली जाती है ! मैं नहीं जानती थी कि मैं क्या कर रही हूँ, मैंने चुपचाप अपने आप को उस कमीने की इच्छा पर छोड़ दिया !

पापा ! मैं अपने आपको कभी भी क्षमा नहीं कर सकती।

आखिर को वही हुआ जिस का डर था जब भी उस बदमाश का मन चाहता वह मुझे धमकियां देने लगता, और मैं उसकी इच्छा के सामने घुटने टेकने पर विवश हो जाती ! उफ ! मुझे पाप ने कितना

बुजदिल बना दिया था; मैंने आत्म-हत्या की पहले ही क्यों नहीं सोची ? क्या दण्ड हो सकता है मेरे इस पाप का ?

मेरी इज्जत तार-तार हो गई थी, मैं संसार को मुंह दिखाने योग्य भी नहीं रह गई थी. मैं अपने पाप को आप के सामने स्वीकार भी तो नहीं कर सकती थी !

अब मेरे सामने केवल एक ही रास्ता था; वह था मौत का रास्ता ! क्यों कि जो मैंने पाप किया है, उसका एक मात्र प्रायश्चित है आत्म-हत्या ? क्योंकि न अब मैं किसी से प्रेम कर सकती हूँ; और न स्वय ही किसी के प्रेम के योग्य रह गई हूँ !

मैं नदी में स्नान करने जा रही हूँ ! जहां से कभी नहीं लौटूगी ! मैं इस पत्र को अपने ' उन '' के पास भेज रही हूँ, और मेरे वसीयत नामे के अनुसार यह पत्र आपके पास मेरी मौत के बाद पहुँचेगा । और आप को यह पत्र श्मशान भूमि से लौटने के बाद मिलेगा !

भगवान तुम्हें प्रसन्न रखे पापा ! मैं और कुछ नहीं कहना— चाहती बस एक अन्तिम इच्छा है आप उसे क्षमा कर दें !

कर्नल ने माथे से पसीने के चमकते कण पूछे, उसने ऐसा ा संतोष का अनुभव किया जैसे वह युद्ध भूमि में किया करता था ! उसने— घंटी बजाई ।

नौकर ने प्रवेश किया ।

'' फिलप को मेरे पास भेजो !

नौकर के चले जाने के बाद उसने मेज की दराज से पिस्तोल निकाल ली !

अर्दली कमरे में दाखिल हुआ और सेल्यूट मार कर खड़ा हो गया ! वह हृष्ट पुष्ट था; और उसकी आंखों से शरारत टपक रही थी!

कर्नल ने उसकी आंखों में आंखें डालते हुये कहा !

मेरी पत्नि का प्रेमी कौन था ?

परन्तु ...... कर्नल ।

जो मैं पूछ रहा उसका उत्तर दो, जानते हो मैं अवज्ञा सहन करने का आदि नहीं हूँ, कर्नल ने पिस्तौल की नली अर्दली की ओर करते हुये कहा !

अच्छा .....ब...त...ला...ता...हूँ; वो अलबर्ट........! अभी शब्द पूरा भी न होने पाया था, धांय, धांय, धांय, कर्नल की पिस्तोल आग उगलने लगी-और अर्दली का शव उसके—चरणों में था !

मैं उस से प्यार करता था !

एक आदमी क्यों प्यार करता है ? देखने में यह कितना अजीब सा लगता है कि इतनी लम्बी–चौड़ी दुनियां में एक आदमी केवल एक आदमी से ही प्यार करता है, एक के बारे में सोचता है, और एक ही की इच्छा करता है, एक ही नाम उसकी जबान पर होता है, और उसी नाम को वह बार २ दुहराता रहता है ।

अब मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाता हूं, अपने उस प्रेम की, जिसकी केवल एक कहानी होती है ।

जब उससे मेरी मुलाकात हुई तब से मैं उसके प्रेम में बुरी तरह खो गया, इस बुरी तरह से कि मुझे पता भी न चलता कि कब दिन होता है, और कब रात, मैं जीवित हूँ, या मर रहा हूँ ।

और फिर एक रोज वह मर गई । कैसे मर गई ? मैं नहीं जानता, क्योंकि अधिक दिन तक कोई चीज मुझे याद नहीं रहती । पर इतना जरूर याद है, एक शाम को जब वह घर लौटी तो बारिश के पानी से बुरी तरह भीगी हुई थी । दूसरे दिन उसने खाट पकड़ली, उसे जोर की खांसी थी, डाक्टर आये, और नुस्खा लिखकर चले गये । दवा आई

और पिलादी गई। उसके हाथ गर्म थे, माथा जल रहा था और आंखों से व्यथा टपक रही थी। उससे मैंने पूछा. और उसने उत्तर दिया। मगर इस समय मुझे याद नहीं आरहा कि हम दोनों में उस समय क्या क्या बातें हुईं। अब तो मैं सब कुछ भूल चुका हूँ, हां सब कुछ, फिर वह मर गई। उसकी अन्तिम हिचकी मुझे वैसी ही अब भी याद है। नर्स के मुंह से निकला था, उफ..., और मैं उसकी इस उफ का मतलब समझ गया था।

मगर इससे अधिक मैं कुछ भी न जान सका। मैं एक पादरी से मिला, उसने कहा··········शायद यह तुम्हारी पत्नी ··········?

पर उसके यह शब्द मेरे हृदय में उतर गये, मुझे ऐसा लगा मानो वह उसका अपमान कर रहा हो। मैं नहीं चाहता था कि जब वह मर चुकी है तो कोई भी उसे इस नाम से पुकारे। मैंने उसे भगा दिया।

फिर उसके पश्चात दूसरा पादरी आया वह बहुत भला आदमी था। जब उसने मुझसे उसके बारे में पूछा तो मैं रो पड़ा। फिर उसने मुझे अंतिम संस्कार करने के लिये कहा। क्या कहा? यह तो मुझे याद नहीं, मगर वह बक्स जिसमें उसका शव रखा था, और वह हथौड़ों की आवाज, जो उसको बक्स में बन्द करने के लिये कीलें ठोकने के कारण हो रही थी, मुझे अच्छी तरह से याद है। फिर उसे दफना दिया हाँ, उसे··············।

मेरे पास कुछ युवतियां आईं, मित्र युवतियां। मैं उनसे बचकर भागा और फिर अगले दिन यात्रा पर निकल पड़ा।

और कल जब पेरिस से लौटकर मैं अपने कमरे में आया, उस कमरे में जहाँ हम दोनों साथ २ रहते थे। मैंने उस बिस्तरे को देखा जहां हम साथ-साथ सोते थे, उस फर्नीचर को देखा जिस पर हम साथ-साथ बैठते

थे, और उन सभी चीजों को जो एक आदमी के मर जाने के बाद उसकी याद दिलाती है। तो उस समय मेरे हृदय को कितना धक्का लगा कि जिसे मैं बयान नहीं कर सकता। एक बार तो मन में आया कि खिड़की खोलूं, और बाहर सड़क पर गिर कर मर जाऊं। अब में वहां उस कमरे में, उन सब चीजों के बीच, उन दीवारों के बीच जहां उसने सांसें ली थीं अधिक खड़ा नहीं हो सकता था।

मैंने अपना हैट उठाया और दर्वाजे की ओर बढ़ा, सहसा मेरी नजर हाल में लगे एक बड़े शीशे पर पड़ी। इसे यहाँ उसने इसलिये लगाया था कि जब भी वह इधर से गुजरे तो अपने आपको सर से पैर तक देख सके।

कुछ क्षण के लिये मैं इस शीशे के सन्मुख आकर रूका, उस शीशे के सामने जिसमें वह हर समय अपनी सूरत देखा करती थी। इतनी बार मानो उसकी सूरत उस शीशे में समा गई हो। मैं वहाँ खड़े र कांप रहा था। मेरी आंखें शीशे पर थीं, उस शीशे पर जो उसे पूरी तरह अपने आप में समा लेता था, और जिसका अधिकार भी उस पर उतना ही था, जितना कि मेरा।

मुझे कुछ ऐसा लगा जैसे मैं उस शीशे से प्यार करने लगा हूँ। मैंने उसे छुआ तो उसके ठंडे स्पर्श ने मेरी चेतना को झकझोरा, और फिर मैं कब्रिस्तान की ओर चल पड़ा अब में कब्रिस्तान में पहुंच चुका था जहां उसकी संगमरमर की कब्र बनी थी उसपर लिखा था।

" वह, जिसने किसी को प्यार किया, जिसे किसी ने प्यार किया"। वह इस कब्र के नीचे दबी पड़ी थी। उफ भगवान, मैं जमीन पर माथा टेककर रो पड़ा और बहुत देर तक इसी स्थिति में पड़ा रहा, तभी मैंने

देखा अंधेरा हो चला था मेरे मन में सहसा ही एक इच्छा उत्पन्न हुई एक अजीब इच्छा, एक पगली इच्छा। ऐसी इच्छा जो एक निराश प्रेमी को हुआ करती है। मैंने वह रात, आखिरी रात रोते रोते कब्र पर गुजारने की सोची। पर मुझे किसी ने देख लिया तो? तो मैं यहां से निकाल दिया जाऊंगा, फिर''फिर,''मैं तरकीब सोचने लगा।

मैं कब्रिस्तान में टहलने लगा, टहलता रहा, मैं सोचता रहता था, और शहरों की अपेक्षा यह शहर कितना छोटा है, उन शहरों की अपेक्षा जिनमें हम लोग रहते हैं। हम जिन्दा आदमियों को रहने के लिये बड़े २ महल चाहिये, लम्बी चौड़ी सड़कें चाहिये।

अपनी मर्जी के हम बादशाह होते हैं जब जिसके जी में आये सोता है, जब जी में आये उठता है, मगर वह जो मर चुके हैं और कब्रों में सो रहे हैं, यह सब एक साथ निकलते हुए सूरज को देखते हैं। चश्मों का पानी पीते हैं और अपनी कब्रों पर उगी हुई अंगूर की बेलों से शराब लेते हैं।

मैं अकेला था, इसलिए पेड़ की हरी शाखाओं के पीछे जा छिपा जब काफी अंधेरा हो गया तो वहाँ से निकला और धीरे-धीरे घूमने लगा।

बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा पर उसकी कब्र नहीं मिली। मैं दोनों हाथ फैलाये कब्रें टटोलता हुआ चला जा रहा था, कहीं ठोकर लगती, तो कहीं सर टकराता। मैं कब्रों को इस तरह टटोल रहा था जैसे कोई अंधा अपना रास्ता टटोलता है। मैंने जान लिया कहाँ पत्थर हैं, कहाँ घास है, कहां फूल हैं, यहां तक मैंने उंगली फिरा फिरा कर नाम भी पढ़ लिये, मगर उसकी कब्र नहीं मिली।

ओहो! कितनी अंधेरी रात थी, और साथ डरावनी भी, मैं डर

गया था, बुरी तरह डर गया था। मेरे चारों ओर कब्रें थीं। आगे पीछे, दांये, बायें जिधर भी देखो कब्रें ही कब्रें।

अब मैं थक गया और सुस्ताने के लिये पास की एक कब्र पर बैठ गया, मुझे अपने हृदय की धड़कनें साफ सुनाई दे रही थीं, सहसा मेरे कान में एक अस्पष्ट सी आवाज पड़ी, मेरे मस्तिक में हलचल मच रही थी। मैंने चारों ओर देखा पर कुछ नहीं था- मैं बहुत अधिक घबड़ा गया था।

और फिर अचानक, बिल्कुल अचानक मुझे लगा, कि वह संगमरमर का पत्थर जिस पर मैं बैठा था खिसक रहा है। मैं उछल कर बराबर वाली कब्र पर जा बैठा। वहां से मैंने देखा वह पत्थर जिसको मैंने अभी-अभी छोड़ा था सीधा ऊपर उठ रहा था और वह मरा हुआ आदमी जो अब केवल हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया था, अपनी झुकी हुई कमर से उसे नीचे धकेल रहा था। कब्र के उस पत्थर पर लिखा था।

"यह कब्र उस 'जैक्स आलिवैन्ट" की है, जो बहुत ही रहम दिल और ईमानदार था, वह अपने घर वालों को बहुत अधिक प्यार करता था जिसकी मृत्यु ईश्वर की सेवा करते करते हुई।

उस मरे हुए आदमी ने उसे पढ़ा, और अचानक ही राह से एक नुकीला पत्थर उठाकर उन लिखे हुए अक्षरों को खरोचने लगा। धीरे-धीरे उन अक्षरों को मिटा देने के बाद उसने अपनी सीधी उंगली से जो अब केवल हड्डी मात्र रह गई थी, बड़े चमकदार अक्षरों में लिखा।

यह कब्र उस "जैक्स आलिवैन्ट" की है जो अपने पिता का हत्यारा था, जिसने अपनी पत्नी को दुख दिये, अपने बच्चों को सताया,

पड़ोसियों को धोका दिया, जिसको भी वह लूट सकता था, उसे लूटा और फिर वह अभागा मर गया।

यह लिख कर वह मृतक अपने काम की ओर देखते हुए बिना हिले-डुले खड़ा रहा। अब मैंने घूम कर चारों ओर देखा, तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा. सब की सब कब्रें खुली पड़ी थीं और सारे के सारे मृतकों ने अपनी कब्रों में से निकल कर अपनी कब्रों पर खुदे पतले अक्षरों को मिटा दिया था और उसके स्थान पर जो कुछ सत्य था वह लिख दिया था।

मैंने देखा ये अच्छे पिता, ये पतिव्रत पत्नियां, ये पालक बेटे, निर्दोष लड़कियां, व्यापारी, ये मर्द औरतें जिन्हें शरीफ बताया गया था, इन में से कोई भी शरीफ नहीं था, इन में से बहुत से पापी थे, अपने पड़ोसियों को सताने वाले, बहुत से बेईमान, झूठे, लुटेरे अव्वल दर्जे के चुगलखोर, जलेतन। उन्होंने चोरियां की थीं, डाके डाले थे, लोगों को धोका दिया था और दुनियां में जो भी बुरा काम हो सकता था उन्होंने किया था। जिन्दा रहते जिस सच्चाई से वह अपरिचित थे पर मर जाने के बाद उन्होंने अपनी कब्रों पर सब लिख दिया था।

मैंने सोचा उसने भी जरूर कुछ न कुछ अपनी कब्र पर लिखा होगा।

मैं अब निडर होकर उन अधखुली कब्रों और लाशों के बीच से होता हुआ उसकी कब्र की ओर भागा। उसके चेहरे को मेरे बिना देखे ही पहिचान लिया. जहां कुछ देर पहले लिखा था।

"वह, जिसने किसी को प्यार किया था, जिसे किसी ने प्यार किया था।" अब मैंने पढ़ा।

"अपने प्रेमी को धोका देने के लिये एक दिन जब वह वर्षा में जा रही थी, उसे ठंड लग गई और वह मर गई ।

मुझे कुछ कुछ याद है कि मैं अगली सुबह उसी की कब्र पर बेहोश पाया गया था ।

रामसिंह डाकिया हर रोज की तरह नियत समय पर गोपालपुर के डाकखाने से रवाना हुआ। उस छोटे से कस्बे से निकल कर यह पुराने घुड़सवार की तरह लम्बे लम्बे डग मारता हुआ गोपाल पुर के मैदान को पार कर जमुना नदी के किनारे पहुंचा। नदी के किनारे-किनारे मन्सूरपुरा गाँव की ओर चला, जहाँ उसे डाक बाँटनी थी। और जमीदार ठा० रामसिंह का खत पहुँचाने के लिए उसे जंगल पार करना था।

ठा० रामसिंह जिले के सबसे बड़े जमींदार थे, नदी के किनारे किनारे का सारा जंगल उन्हीं का था। करीब डेढ़ मील लम्बा और घना जंगल, जिसमें बहुत पुराने पेड़ थे।

शामसिंह ने अपनी चाल धीमी की और लाल किनारी की पुरानी टोपी उतारते हुए माथे का पसीना पोंछा, अभी सुबह आठ ही बजे थे मगर धूप ने तेजी पकड़ ली थी।

जरा सुस्ता कर उसने अपनी चाल तेज की ही थी कि उसे एक पुराने पेड़ की जड़ के पास छोटा चाकू पड़ा दिखाई दिया। उसके थोड़ी दूर पर ही एक सूइयों की डिबिया और पोटआ पड़ा था। उसने सोचा यह सब चीजें ठाकुर साहब को जाकर दे देगा।

अभी थोड़ी ही दूर चला था कि उसने एक ऐसी चीज देखी, जिसे देखकर उसके मुंह से चीख निकल गई, यह एक कम उम्र सुन्दर लड़की का शव था। यह लड़की बिलकुल नंगी चित पड़ी थी। उम्र १२ वर्ष १३ वर्ष, बाहें फैली हुई, टांगें अलग-अलग, चेहरा रूमाल से ढका हुआ, जांघों पर खून के छींटे। वह चुपचाप आगे बढ़ा जहाँ वह लड़की पड़ी थी, उसने उसे छूकर देखा, उसका बदन बर्फ की तरह ठंडा था, शामसिंह का मुंह सूख गया। वह जल्दी से उठ कर ठाकुर साहब के घर की ओर चल दिया।

ठाकुर साहब का मकान जंगल के उस आखिरी छोर पर था। मकान बहुत बड़ा था, पुराने काले पत्थरों का बना हुआ, पास ही एक बहुत बड़ी मीनार थी जो शायद उनके बाप दादाओं ने लहरों का आनन्द लेने के लिए बनवाई थी।

डाकिया रसोई घर की ओर दौड़ा जहां नौकर नास्ता कर रहे थे; उसने घबड़ाते हुये पूछा; "ठाकुर साहब ऊपर हैं?" मुझे उन से अभी मिलना है।

शामसिंह खास आदमियों में गिना जाता था, नौकरों ने फौरन समझ लिया कि कोई असाधारण घटना घटित हो गई है।

ठाकुर साहब को ज्यों ही खबर मिली उन्हों ने डाकिये को ऊपर बुलवा लिया। शामसिंह जर्द चेहरा लिये हांफता हुआ, टोपी हाथ में लिये सामने आया तो उसने देखा कि ठाकुर साहब एक मेज के पास बैठे जमींदारी के कामों में व्यस्त थे।

ठाकुर रामसिंह लम्बा तगड़ा आदमी था, मोटा ताजा, बैल की तरह मजबूत। लालमुंह, चिड़चिड़ा मिजाज, फिर भी जिले भर में मान्य। छः महीने हुये उसकी पत्नी का देहान्त हो गया था। अपनी

बदमिजाजी से रामसिंह कई बार मुसीबतों में फंस गया था, मगर उसके मित्र शहर के मजिस्ट्रेट ने उसकी कई बार मदद की थी।

रामसिंह ने डाकिये की ओर देखते हुए पूछा, ' क्या मामला है ?"

मैंने आपके जंगल में एक लड़की मरी हुई देखी है।

रामसिंह लाल पत्थर सा चेहरा लिये उठ खड़ा हुआ। क्या कहा, लड़की ?

हाँ सरकार ! लड़की, बिलकुल नंगी और खून से लथ-पथ।

वह रधिया ही होगी। मुझे अभी मालूम हुआ है कि कल रात वह अपनी माँ के पास नहीं पहुँची। कहाँ मिली तुम्हें ?

डाकिये ने जगह का पता बता दिया। और कहा वह उन के साथ चल कर जगह दिखा सकता है

रामसिंह ने असहमति प्रगट की; नहीं मुझे तुम्हें तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। तुम गस्त पर जाओ ! और हाँ ! उधर से कारिन्दा साहब और डाक्टर से कहते जाना कि मुझे मौके पर मिलें।

चिट्ठीरसा बेचारा आज्ञा का पालन करने चल दिया। पर वह हृदय में दुखी था कि तहकीकात के समय हाजिर नहीं रह सकेगा।

ठाकुर साहब चलने की तैयारी करने लगे। उन्होंने अपना साफा उठाया। थोड़ी देर ठिठके और चल दिये। हवेली की सीढ़ियों पर से उतर कर बांई तरफ मुड़े, और कमर पर हाथ रखकर धीरे-धीरे चलने लगे, कभी-कभी पीछे मुड़ कर भी देख लेते थे कि उनके बुलाये हुये आदमी आ रहे हैं या नहीं।

वह पेड़ों के नीचे पहुँचे तो रुके, साफा उतार कर पसीना पोंछा, क्योंकि धूप अपनी पूरी जवानी पर थी। एकाएक झुककर नदी में

अपना रुमाल भिगोया और साफे के नीचे फैला दिये। रुमाल का पानी उनके कानों को छूता हुआ चौड़ी गरदन पर गिरने लगा। उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा अभी तक कोई नहीं आ रहा था। उन्होंने आवाज लगाई, दाहिनी ओर से जवाब में आवाज आई, और पेड़ों के झुरमुर से डाक्टर आता दिखाई दिया।

रामसिंह ने डाक्टर से पूछा—तुम्हें मालूम है क्या मामला है?

हां! डाकिये को जंगल में एक लड़की मरी मिली है।

हां, ठीक है। चलो चलें।

खोज की दिलचस्पी के कारण डाक्टर के पैर तेजी से पड़ रहे थे। जब वह लाश के पास पहुंचे तो डाक्टर जांच के लिये झुका। उसने लाश को पलट कर देखा और बोला बलात्कार और कत्ल। लड़की लगभग जवान है, देखो उसका गला।

उसके दोनों कुच लगभग पूर्ण विकसित थे और मौत के कारण ढीले होकर पड़े हुए थे। डाक्टर ने धीरे से उसके मुंह पर पड़ा हुआ रुमाल हटाया। उसकी जबान निकली हुई थी। डाक्टर फिर बोला, यकीनन कुकृत्य के बाद ही इसका गला घोंटा गया है।

इसने गरदन देखी गला हाथों से इस तरह घोंटा गया है कि उंगलियों या नाखूनों के निशान तक नहीं आये। वास्तव में यह लड़की राधिया है।

उसने रुमाल से चेहरा फिर ढक दिया।

मेरे करने का इसमें कोई काम नहीं है। इसे मरे करीब एक [illegible] होगया, इसकी सूचना हमें अधिकारियों को दे देनी चाहिये।

रामसिंह हाथ पीछे किये लड़की को एकटक घूर रहा था. वह बड़बड़ाया :

अभागिन ! हम इसके कपड़े तो ढूंढें।

वह जरूर यहां नहा रही होगी। कपड़े यहीं कहीं किनारे पर होने चाहिये। डाक्टर बोला।

इस पर रामसिंह ने हुक्म दिया कि, हीरालाल कपड़े ढूँढे और करिन्दा साहब शहर जाकर मजिस्ट्रेट और पुलिस को बुला लायें।

दोनों आदमी अपने अपने काम पर तेजी से रवाना होगये। उन दोनों के चले जाने पर रामसिंह ने डाक्टर से पूछा "क्यों डाक्टर ! किस बदकार ने इस स्थान पर ऐसा काम किया होगा ?"

डाक्टर बड़बड़ाया। कौन जाने ? हर कोई कर सकता है। खास-तौर से हर आदमी। आमतौर से कोई नहीं। कोई बदमाश या बेकार मजदूर रहा होगा।

रामसिंह ने कहा—कोई अजनबी ही होगा, बिना घर गृहस्थी वाला, हृदय हन, आवारा।

डाक्टर मुस्करा कर बोला—सरकार ! यह ऐसा आदमी भी तो कर सकता है जिसके न घरवाली हो और न सोने बैठने का ठिकाना। दुनियाँ में न जाने ऐसे कितने लोग ऐसे हैं जिनका पता नहीं कब जाने क्या जुर्म कर बैठें। हां ! "क्या आप को मालूम था कि यह लड़की गायब होगई है ?"

हां ! उसकी मां रात को नौ बजे के करीब उसे देखने आई थी। हम आधी रात तक उसे ढूँढते रहे।

डाक्टर ने सिगरेट निकालते हुये कहा : सिगरेट पीजियेगा ?

नहीं ठाकुर साहब ने सर हिलाया ।

वे दोनों उस लड़की की पीली और निश्चल लाश को एकटक निहारते रहे ।

एकाएक तेज आवाज से वह चौंक उठे । एक औरत पेड़ों के बीच से भपटी हुई चली आ रही थी । वह उस लड़की की मां थी । रामसिंह को देखते चीख उठी । मेरी बेटी कहां है मेरी बेटी, उसकी नजरें उठी हुई थी कि उसने नीचे लाश को देख नहीं पाया । एकाएक इसने लाश देखी और हाथ ऊपर उठा कर इतनी जोर से चीखें मारने लगी । जैसे हजारों बाणों से बिन्धी हुई हिरणी चीखें मारती है ।

डाक्टर धीमे और करुणा स्वर में बोला बेचारी ।

रामसिंह के हृदय में एक अजीब आलोडन हो रहा था । उसने आँसू रोकने के लिये एक खांसी मिश्रित छींक ली ! और मूंह को पोछने के बहाने रुमाल निकाला वह खांसता जाता था और सुबकता जाता है ।

चमार लौट आये उसे कहीं कपड़े नहीं मिले थे । उसे फिर हुक्म हुआ कि वह फिर ढूंढने जाये और कपड़े ढूंढ कर लायें । चमार जानता था कि ठाकुर साहब के सामने बोलने का क्या मतलब होता । वह चल दिया ।

गांव की ओर से भीड़ का शोर सुनाई दिया । डाकिये ने अपने गश्त के दौरान में इस खबर को घर घर जाकर बतला दिया था । जिस-जिस को खबर का पता लगता वह लाश देखने के लिए जंगल की ओर चल पड़ता । ठाकुर साहब को इस भीड़ का आना बुरा लगा

और उन्होंने डाक्टर के हाथ से डंडा लेकर भीड़ की तरफ को घुमाया जिससे भीड़ कई सौ गज पीछे हट गई।

रधिया की मां को उठाया गया, वह दोनों हाथ मुँह पर रखे रो रही थी।

भीड़ में घटना की चरचा चल रही थी, और जवान छोकरे लड़की के नंगे बदन को उत्सुक नजरों से देख रहे थे। रामसिंह ने इस बात को भापा और अपना साफा उतारकर रधिया के नगे बदन पर डाल दिया। लाश उन सैकड़ों निगाहों से ढक गई।

लोग धीरे २ फिर लाश के पास आने लगे थे। इस पर ठाकुर साहब डंडा दिखाते हुये बोले "अगर तुम में से कोई भी आगे आया तो उसका सर कुत्ते की खोपड़ी की तरह तोड़ दूंगा"। किसान डर कर पीछे हट गये।

इतने में दो पुलिस के सिपाही घोड़े दौड़ाते हुये इधर आते नजर आये, बीच में उनका कप्तान और मेजिस्ट्रेट था। मेजिस्ट्रेट ने आकर ठाकुर साहब से हाथ मिलाया।

डाक्टर ने जो विवरण दिया था रामसिंह ने वह अपनी डायरी में नोट कर लिया था, वह सब मजिस्ट्रेट को बताया। मामले पर बहुत देर तक वहस होती रही मगर इस मामले का कोई सुराग न लगा।

ठाकुर साहब ने जज से पूछा यह क्योंकर हुआ कि कोई कम्बख्त कपड़े छिपा दे या चुरा लेजाये और लाश को खुली हवा में छोड़दे।

उधर से चतुराई और जानकारी भरा जवाब मिला। यह तो केवल ध्यान बटने के लिये है। यह कत्ल किसी चतुर बदमाश ने किया है, खेद, हम उसका पता आसानी से लगा लेंगे।

एकाएक रामसिंह ने कहा, आप सब साहब आज खाना मेरे साथ खायेंगे। करीब सभी ने मुस्करा कर यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया। मजिस्ट्रेट ने जब यह देखा कि यह मामला आज का दिन तो खा ही लेगा तो उसने रामसिंह से पूछा-अगर आप कहें तो यह लाश आपके घर पहुंचा दी जाये। आपके पास अलग एक कमरा है ही, उसमें आज शाम तक रखी रहेगी ? रामसिंह बड़ी उलझन में पड़ गया और बड़बड़ाया, हाँ, नहीं २ सच बात तो यह है कि मैं भूतों से बहुत डरता हूँ। आप इस लाश को शहर ही पहुंचा दीजिये .

मेजिस्ट्रेट मुस्कराया। अच्छा तो सरकारी जांच के लिये मैं इसे शहर के अस्पताल में भिजवाये देता हूँ।

सब उस स्थान पर आये, जहां लाश पड़ी थी। लाश को उठते देख रधिया की माँ लाश के दोनों हाथ पकड़ कर चिल्लाने लगी, नहीं, नहीं मैं इसे नहीं ले जाने दूगीं! यह मेरी है, और मेरी ही रहेगी! इसे मैं रखूँगी! सब लोग दुखी थे! रामसिंह ने उसे समझाया, सुनो माँ! यह जरूरी है ? इस बात का पता लगाने के लिये कि इसें किसने मारा। इसके बगैर कैसे मालूम होगा। इसे जाने दो, जिससे हत्यारे का पता लग सके, और उसे दण्ड मिले। उसने लाश को छोड़ दिया। और सिपाही उसे गाड़ी में डाल कर शहर की ओर ले चले। मेजिस्ट्रेट साहब भी कल सुबह आने का वादा कर के लौट गये।

ठाकुर साहब जंगल में धीरे धीरे टहलते रहे और रात होने पर घर लौटे। घर लौट कर वे जल्दी ही सो गये और देर तक सोते रहे। जब सुबह मेजिस्ट्रेट साहब कमरे में दाखिल हुये और ठाकुर साहब को जगाते हुये बोले आप अभी तक सो रहे हैं. आज सुबह-सुबह खबर मिली है। ठाकुर साहब ने बिस्तरे से उठते हुये बड़ी उत्सुकता से पूछा, "क्या ?"

और बड़ी अजीब खबर है। बुढ़िया के आहाते में लड़की की चप्पलें मिली हैं, इससे पता लगता कि हत्यारा बड़ा दयालू आदमी है। डाकिये ने कैंची और सुइयों की डिबियां मुझे ला कर दी है। शायद हत्यारा जब कपड़ों को छिपाने जा रहा होगा तो यह चीजें उसमें से गिर गई होंगी। मैं तो खास महत्त्व चप्पलों को देता हूँ जिससे हत्यारे की नैतिक-संस्कृति और कोमलता पर प्रकाश पड़ता है। इस लिये अगर आप को ऐतराज न हो तो हम दोनों मिल कर जिले के मुख्य नागरिकों की जांच पड़ताल करें!

क्यों नहीं, मैं तैयार हूँ, काम अभी से आरम्भ कर दें।

अच्छा तो अपने जिले के मुख्य २ नागरिकों के सुभाव से मुझे परिचित कराते चलिये।

हाँ, तो सब से पहले लीजिये, जिले के सब से बड़े जमींदार रामसिंह को, जो बहुत ही चिड़ चिड़े स्वभाव का है, और सब किसानों को बुरी तरह से मारता है।

मैजिस्ट्रेट हंस पड़े; बस, बस, इतना काफी है अब औरों को बतलाइये।

अच्छा! एक पास ही के गाँव का जमीदार है गजराज सिंह, अच्छा धनिक है, पैसे के मामले में अधिक कंजूस, पर वह हत्यारा नहीं हो सकता है।

और बतलाइये।

ठाकुर साहब सभी अच्छे आदमियों का मुआयना कराते रहे। दो घन्टे की बहस के बाद मैजिस्ट्रेट साहब का ध्यान तीन व्यक्तियों पर टिक गया।

मुजरिम की खोज बड़े ओर शोर से होने लगी, कुछ आदमी पकड़े भी

गये किन्तु सबूत न मिलने के कारण उन्हें छोड़ दिया गया। मगर इस खून ने सारे जिले को हिला दिया, हर छोटे बड़े की जबान पर इसी की चर्चा थी। वह जंगल एक भयानक स्थान बन गया था लोग उसमें भूतों का बासा मानने लगे थे। पर ठाकुर साहब बड़े गमगीन से उस जंगल में घूमा करते हैं। लोग आपस में चर्चा करते कि ठाकुर साहब को इस खून का बहुत गम है। और एक दिन यह खबर गांव में बिजली की तरह फैल गई कि ठाकुर साहब जंगल कटवा रहे हैं। सचमुच ही दूसरे दिन बीस काटने वाले जंगल काटने के काम पर लगा दिये गये। यह काम स्वयं ठाकुर साहब की देख रेख में आरम्भ हो गया। हर रोज जंगल हल्का होने लगा, उसके पेड़, युद्ध में सिपाहियों की भाँति गिरने लगे। ठाकुर साहब स्वयं अपने इन बेजान सिपाहियों की मौत देखते, और जब कोई पेड़ गिरता तो उस पर इस प्रकार पैर रखते जैसे कोई मुर्दा हो। एक के बाद दूसरा पेड़ वे इस तरह कटवाते मानो इसके बाद उन्हें शान्ति मिल जायेगी।

काटने वाले एक रोज शाम के समय उस स्थान पर पहुँचे जहाँ रधिया की लाश मिली थी। संध्या हो जाने के कारण उन्होंने काटना बन्द कर दिया। इसका कारण यह भी था कि जिस पेड़ के नीचे रधिया की लाश मिली थी वह इतना बड़ा और पुराना था कि उस थोड़े समय में काटा न ही जा सकता था। मगर ठाकुर साहब न माने और बोले ये पेड़ अभी काटा जाय क्योंकि इसी मनहूस के नीचे ही उस बेचारी रधिया का खून हुआ था।

पेड़ पर दनादन प्रहार पड़ने लगे और ठाकुर साहब उसकी टहनी पकड़े गिरने की बड़ी उद्विग्नता से प्रतीक्षा कर रहे थे। एक मजदूर ने कहा, ठाकुर साहब आप हट जाइये, आप के चोट आ सकती है। मगर

वह चुपचाप पत्थर की प्रतिमा की तरह खड़े थे मानों उस पेड़ को अपनी भुजाओं में भर कर पहलवान को तरह जमीन पर पछाड़ देंगे। एक दम वृक्ष गिरा, ठाकुर साहब पहले कुछ आगे बढ़े किन्तु यकायक फिर पीछे को हट गये। किन्तु हटते २ भी उनके कुछ खरोंच आ ही गई थी। काम करने वाले लोग उन्हें उठाने दौड़े, किन्तु वे चुपचाप उठकर बैठ गये थे। उनकी आँखे एक टक उस पेड़ को देख रही थी।

उन्होंने कटाई बन्द करवा दी और अपने घर की ओर चल दिये। घर पहुंच कर कमरे के किवाड़ बन्द किये और चुपचाप सुसकने लगे। थोड़ी देर रोने के बाद उन्होंने आंखे पोंछी, घड़ी देखी, अभी ६ बजे थे। वह बड़बड़ाये "भोजन से पहले तो मेरे पास बहुत समय है!" दरवाजे की ओर बढ़े और एक मोटा सा ताला डाल दिया फिर मेज के पास आकर बैठ गये, बीच की दराज खोल कर एक रिवालवर निकाली और पास ही रखली। रोशनी को तेज किया, जिससे रिवालवर की नली चमकने लगे! ठाकुर साहब कुछ देर तक उस रिवालवर को एक पिये हुये आदमी की तरह देखते रहे फिर उठे और कमरे में चहल कदमी करने लगे। कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाते और फिर लौट आते। किन्तु जब मेज के पास से गुजरते तो, मेज पर रखा हुआ रिवाल्वर उन्हें अपनी ओर खेंचता, किन्तु वे फिर रुक जाते और सोचते "अभी तो समय है।"

घड़ी ने साड़े छै बजाये उन्होंने रिवाल्वर उठाई खोफनाक आकृति बनाते हुए मुंह फाड़ा और उसमें रिवाल्वर की नली डाल दी मानो उसे खा जाना चाहते हैं। वे थोड़े ही देर इस मुद्रा में रहे उनकी उंगली घोड़े पर थी, कि यकायक उन्होंने पिस्तोल को गलीचे पर फेंक दिया और दरी पर गिर कर रोने लगे। हे भगवान! ये मुझसे न होगा मैं आत्म-हत्या नहीं कर सकता। यकायक किसी ने दरवाजा खटखटाया, बाहर बूढ़ा

नौकर चिल्ला रहा था। सरकार ! खाना तैयार है। उन्होंने गला साफ करते हुये कहा। अच्छा, मैं नीचे आ रहा हूं।

उन्होंने पिस्तौल उठाई और दराज में बन्द कर दी। फिर उठे और अपना चेहरा शीशे में देखा कि कहीं चेहरे पर घबराहट तो विद्यमान नहीं है। वे नीचे उतर आये और खाना खाने लगे। वह खाना धीरे २ खा रहे थे मानो कोई उनके साथ जबरदस्ती कर रहा हो। ऐसा लगता कि उनका खाना उन्हें खाये जाता हो।

खाना खाने के बाद फिर वह अपने कमरे में आ गये। अकेला होने पर उन्होंने अपना बिस्तरा देखा, अलमारियां देखीं, कमरे का कोना-कोना छान मारा, सारा सामान इधर-उधर कर दिया। और चारो ओर बड़ी घबड़ाई और डरी-डरी दृष्टि से देखने लगे ! उन्हें डर लग रहा था कि कहीं हर रात को तरह वह लड़की आज फिर न दिखाई दे। जिस पर उन्होंने बलात्कार किया था।

हर रात को भयानक स्वप्न उन्हें दिखते, उन्हें लगता जैसे उसका कोई गला घोट रहा हो। वह चीखते और उठ बैठते। कत्ल वाले दिन से आज तक सो न पाया था। उस दिन का सारा सीन उनकी आंखों के सामने से गुजरने लगा।

उस भयंकर दिन, जिस दिन रधिया का खून हुआ था। जब वह सुबह उठे तो उन्हें चक्कर आने लगे। उन्होंने सोचा शायद गर्मी के कारण ऐसा हो रहा है। और वह जंगल वाले तालाब पर नहाने चल दिये। जब वह तालाब पर पहुँचे तो एक हल्की सी आवाज आई, उन्होंने चुपचाप उचक कर देखा, रधिया नहा रही थी, बिलकुल नंगी, भरा हुआ शरीर, कुछ उठे हुये कुच, वह बचपन और जवानी के संगम पर खड़ी थी, जिसे देख कर उनका हृदय जोर-जोर से धड़कने लगा।

रधिया पानी से निकल कर अनजाने ही उन की ओर आने लगी, जहां वह खड़ा हुआ था। और अपने कपड़े पहनने लगी, जब वह कपड़े पहन कर उसकी ओर आने लगी तो उसे ऐसा लगा कि अपने आप को रोकने पर भी वह उसकी ओर खिंचा जा रहा है। उसकी हैवानियत भड़क उठी, और उसकी विवेक शक्ति लुप्त हो गई। वह एकाएक रधिया की ओर झपटा और उसे अपनी बांहों में लपेट लिया, वह इतनी डर गई थी कि उसका प्रतिरोध भी न कर सकी। वह उस पर छा गया और..........!

जब वह जुर्म करके उठा तो उसे लगा, कि वह कोई भयानक सपना देख कर उठा हो। रधिया फूट फूट कर रोने लगी।

वह बोला 'चुप, रह, चुप, मैं तुझे रुपये दूंगा!" मगर वह रोती रही। और छूटने के लिए बल करने लगी। एकाएक उसने उसकी गरदन पकड़ली जिससे वह उस की हृदय-कंपा देने वाली चीखों को रोक सके। रधिया उस मौत से बचने के लिये छटपटाई, मगर इसने अपने विकराल हाथों से उसका गला फूल की नली की तरह तोड़ दिया।

जब रधिया को मारकर उठा तो उस पर भयंकर आतंक छाया हुआ था। इसने भाग जाना चाहा फिर सोचा, लाश नदी में क्यों न फेंक दे। मगर ऐसा उसने नहीं किया। फिर न जाने क्या सोच कर उसने रधिया के सब कपड़े उतार कर पोटली बनाई और पास ही नाले में एक भारी पत्थर के नीचे दबा दी। फिर वह घर की ओर तेजी से भागा।

उस रात गहरी नींद सोया जैसे कभी कभी फांसी की सजा पाया हुआ कैदी सोता है। सुबह जल्दी ही उस की आंख खुल गई, मगर वह पड़ा रहा कि कहीं भेद न खुल जाये।

अगर उसका हृदय पसीजा था तो रधिया की मां की चीखें सुन कर,

उस समय उसके मन में आया कि रधिया की मां के पैरों में गिर कर कहे कि गुनाहगार मैं हूं। लाश ले जाते समय बुढ़िया अपनी लड़की के कपड़ों के लिये बिलखती रही, जिससे अपनी प्यारी बेटी की कोई तो निशानी अपने पास रख सके। बुढ़िया के इस बिलखने से प्रभावित हो कर उसी रात जंगल से रधिया की चप्पलें निकाल कर बुढ़िया के आहाते में डाल आया था।

जब तक खोज चलती रही, वह शान्ति संयत बना रहा मैजिस्ट्रेट के दिमाग में जो संभावनाएं गुजरती वह उन पर बहस करता उनकी रायों का विरोध करता जिन पर लोग शक करते उनकी निर्दोषता दर्शाता। लेकिन खोज खत्म हो जाने के बाद दुर्बलता ने उसके हृदय में घर कर लिया। यकायक होने वाली आवाजों पर वह डर के मारे उछल पड़ता। कभी माथे पर मक्खी भी बैठ जाती तो वह डर के मारे कांप उठता।

इस हत्या से पहले तो वह ऐसा न था। किसी को कुश्ती, लड़ाई-झगड़े या बदले में मार डालना उसके बायें हाथ का खेल था। इसका उसको इतना भी दुख न होता था जितना किसी खरगोश पर गोली चलाने का। लेकिन रधिया की हत्या ने उसके हृदय के तन्तुओं को हिला दिया था, हर क्षण उसके विचार उस दृश्य की ओर लौट र जाते। हजारों उपाय करने पर भी उस दृश्य को भुला न पाया।

एक रात उसे नींद नहीं आ रही थी इस लिये वह आराम कुर्सी पर आ बैठा था। यकायक उसे ऐसा लगा जैसे कि खिड़की का पर्दा हिल रहा है, उस का दिल धड़कने लगा। उसने बड़ी आतुरता से पर्दे की ओर देखा, पर्दा हिलना बन्द हो गया, यकायक फिर हिलने लगा। रामसिंह चुपचाप उठा और पर्दे की ओर बढ़ा, उसने दोनों

हाथ से खिड़की पर पड़े पर्दे को तार २ कर दिया। पहले तो उसे सिवाय अंधेरे के कुछ नहीं दिखा। फिर यकायक रोशनी चलती दिखाई दी। रोशनी फैली और उसने एक खूबसूरत लड़की की शक्ल धारण करली, जो नंगी और खून से लथपथ थी। वह डर के मारे पत्थर सा होकर कुर्सी पर गिर पड़ा। चन्द मिन्ट इसी अवस्था में पड़ा रहा फिर उठा और गिलास में शराब डालकर पीने लगा। उसने घूमकर देखा कि दूसरी खिड़की का पर्दा फिर उसी प्रकार हिलने लगा। वह उठा और एक २ करके सब खिड़कियों के पर्दे फाड़ दिये और बेहोश होकर पलंग पर गिर पड़ा।

उस दिन वाली रात से उसका जीना दुर्लभ हो गया था। हर रात को वही डरा देने वाली छाया उसे दीखती जिससे उसका जीना दुर्लभ होगया उसने सोचा कि किसी तरह जीवन का अन्त कर डाले। किन्तु कोई ऐसा सीधा साधा तरीका न था और इस तरह आत्म-हत्या करने में उसे यह डर था कि कहीं रधिया की हत्या का सम्बन्ध लोग इससे न जोड़ने लगें जिससे इसके प्रतिष्ठित घराने की बदनामी हो। फिर उसके मन में एक अजीब ख्याल आया कि वह अपने को उसी पेड़ के नीचे क्यों न कुच ले जहां उसने उस लड़की का गला घोंटा था। उसने जंगल कटवाने का इरादा किया, लेकिन उस वृक्ष से अपनी पसलियां कुचलवाने का उसे साहस न हुआ। इस पर घर आकर अपनी पिस्तौल उठाई थी मगर अपने ऊपर उसे दागने की हिम्मत न कर सका।

नौकर ने खाने की घंटी बजाई। वह नीचे खाने बैठा मगर कुछ खा न सका। वह फिर ऊपर कमरे में आ गया। उसको दिल में फिर आत्म-हत्या करने का ख्याल आया, मगर इसके लिये वह दो बार कायर साबित हो चुका है। वह बच्चों की तरह रोने लगा और बुड़बुड़ाया, यह मैं नहीं करूंगा। यह मुझसे नहीं होगा! और यकायक

अपने हृदय में दृढ़ विश्वास सा लेकर उठा। ये नहीं चलेगा, मुझे किसी तरह अपना खात्मा करना ही होगा।

मगर कैसे ? पिस्तौल के घोड़े पर तो उसके हाथ उसे धोखा दे जाते हैं। वह उन खूनी मुजरिम के सौभाग्य पर ईर्षा करने लगा जो सिपाहियों द्वारा फांसी घर की ओर ले जाया जाता है। काश, वह किसी से प्रार्थना कर सकता कि उसे कोई गोली मार देता। किसी अपने खास मित्र के सामने अपना जुर्म स्वीकार करके मौत की सजा पा जाता मगर ऐसा करेगा कौन ? हर मित्र उसकी आखों के सामने से गुजरने लगा, मगर इस तरह का कोई भी मित्रगन दिखाई दिया जो इस कठिन काम को कर सके। यकायक उसे एक पातलपन सूझा उसने मजिस्ट्रेट को एक पत्र लिखने की सोची जिसमें आपना सब जुर्म स्वीकार करके उससे प्रार्थना करे कि उसे कड़ी सजा दे। मगर वह जानता था कि मजिस्ट्रेट ऐसा न करेगा और पत्र को फाड़कर फेंक देगा।

यह तरकीब सोचकर उसके हृदय को शान्ति मिली। उसने सोचा वह धीरे-धीरे पत्र लिखेगा और सुबह होते ही अपने घर के नीचे लेटर-बक्स में डाल देगा और फिर मीनार पर चढ़कर डाकिये के आने का इन्तजार करेगा। जब डाकिये को खाकी वर्दी दिखेगी तो वह मीनार से लगे झंडे को हिलाने के बहाने ऊपर से गिर पड़ेगा और नीचे गिरते गिरते ही उसके बदन के छितरे-छितरे उड़ जायेंगे।

उसने खत लिखना आरम्भ कर दिया। तमाम हाल लिखकर अपने मित्र मैजिस्ट्रेट से प्रार्थना की थी कि उसके नाम पर कोई धब्बा न आने पाये। जब पत्र समाप्त हुआ तो दिन निकल आया था। उसने लिफाफा बन्द किया और कांपते हाथों से पत्र लेटर-बक्स में डाल दिया।

पत्र डालने के पश्चात् उसने सोचा कि इस रात तो उसे वह लड़की दिखाई नहीं दी। अगर वह इसी प्रकार व्यस्त रहे तो शायद वह कभी दिखाई न दे। माना कि अगर वह घर में दिखाई देगी तो वह घर छोड़ देगा। दुनिया बहुत बड़ी है और उसका भविष्य बहुत उज्जवल है। फिर वह क्यों आत्म-हत्या करे।

उसने मैदान के पास देखा कि डाकिये आ रहा है, रामसिंह के हृदय में टीस सी उठी। वह तेजी से ऊपर से खत लेने के लिए उतरा तो डाकिया बक्स से खत निकाल ही रहा था कि वह वहां आ पहुंचा। उसने कहा:—

कहो श्यामसिंह क्या कर रहे हो।

कुछ नहीं सरकार बड़ा राज का काम डाकिये ने सलाम करते हुए कहा।

श्यामसिंह इसमें मैंने एक खत डाला है उसे वापिस लेना है।

अच्छा मिल जायेगा सरकार।

श्यामसिंह ने ठाकुर का चेहरा देखा और देखकर सन्न रह गया। आंखों के इर्द-गिर्द काले घेरे, बाल उलझे, दाढ़ी बढ़ी हुई, ऐसा मालूम होता था कि रात को सोये नहीं।

क्या रात को सोये नहीं थे सरकार। डाकिये ने पूछा रामसिंह ने ताड़ लिया कि उसका चेहरा डरावना है। उसने हिचकिचाते हुए कहा नहीं, हां! नहीं नहीं ? मैं ये पत्र लेने बिस्तरे से उठकर आया हूँ।

डाकिये ने बात बदलते हुये कहा कौन, सा पत्र ?

वही जो तुम मुझे वापिस देने वाले थे।

डाकिया हिचकिचाने लगा। ठाकुर साहब का रूप स्वाभाविक

नहीं जान पड़ता था। उसने सोचा कि इस खत में कोई रहस्य है; कोई राजनीतिक रहस्य। उसने पूछा आप के खत पर किसका पता था? मेरे मित्र मजिस्ट्रेट का। तुम तो उन्हें खूब जानते हो?

डाकिये ने पत्र ढूंढ निकाला, और उसे उलट पुलट कर देखने लगा। वह सोच रहा था कि पत्र देकर अमानत में खयानत करे या ठाकुर साहब को अपना दुश्मन बनाले। उसकी हिचकिचाहट को देखकर रामसिंह ने पत्र छीन लेना चाहा। इस जल्दबाजी को देखकर डाकिये को विश्वास हो गया कि इसमें कोई जरूरी राज है और उसने निश्चय किया कि वह खत को नहीं देगा। उसने खत अपने झोले में डाला और बांधकर बोला! नहीं! मैं इसे नहीं दूंगा।

इस बात ने ठाकुर के हृदय को मथ डाला। उसने कहा, देखो श्यामसिंह तुम जानते हो कि मैं तुम्हें धोखा नहीं दे सकता। यह खत मेरा है और मुझे चाहिये।

नहीं, मैं इसे नहीं दूंगा।

इस पर रामसिंह का सर घूम गया। उसने डाकिये की बांह पकड़ ली और थैला छीन लेना चाहा, किन्तु डाकिये ने उछल कर अपने आप को छुड़ा लिया और बोला "मेरे पास न आना ठाकुर। नहीं तो अच्छा न होगा।

तमाम काम बिगड़ा हुआ देखकर रामसिंह रोने लगा और बोला यह पत्र मुझे दे दो, मैं तुम्हें सौ रुपये दूंगा।

डाकिया मुड़ा और अपने रास्ते चल दिया। रामसिंह उसके पीछे पीछे चलता रहा। उसने डाकिये के पास जाकर कहा, देखो मैं तुम्हें इस पत्र के हजार रुपये तक दे सकता हूँ। पर डाकिया चलता रहा। रामसिंह

ने कहा। सुनो ! तुम जो भी इस पत्र का माँगोगे मैं वही दूँगा। पचास हजार। अच्छा एक लाख। डाकिया मुड़ा और उसने लाल २ आँखें तरेरते हुये कहा बकवास बंद करो। वरना मैं तुम्हारी शिकायत मजिस्ट्रेट से कर दूँगा। रामसिंह एक दम रुक गया। बस खलास। वह मुड़ा और शिकार के जानवर की तरह अपने घर की ओर मुड़ा।

डाकिये ने मुड़कर देखा। रामसिंह मीनार की चोटी पर पहुँच चुका था फिर यकायक उसने दोनों हाथ ऊपर किये और हवा में कूद पड़ा। उसे उठाने के लिए डाकिया रामसिंह की ओर बढ़ा। किन्तु ठाकुर साहब का शरीर चीर-चीर हो चुका था।

वह दोनों

जून का महीना था चारों ओर सूर्य की किरणें चमक रहीं थीं। करीब साडे आठ बजे कोचवान ने दो घोड़ों की बग्घी दरवाजे के बाहर लाकर खड़ी करदी।

श्रीमती शान्ति सिन्हा अभी अभी सीडियों से उतरी ही थी कि उनके पति सामने से आते दिखाई दिये। पत्नी को देखकर चन्द्रशेखर के हृदय की धड़कन तेज हो गई। शान्ति का सौन्दर्य बेजोड़ था, उसके शरीर का गठन अद्वितीय था। बड़ी २ आंखें; छोटे, किन्तु सुन्दर बाल, हंस-मुख चेहरा, शरीर का प्रत्येक अंग मोहक था। शान्ति शेखर की ओर बिना ही देखे बग्घी पर जा बैठी। शेखर का हृदय ईर्ष्या से जल उठा। उसने बग्घी रोकते हुये कहा।

तुम घूमने जा रही हो शान्ति ?

यह तो तुम देख ही रहे हो, उसने कठोर स्वर में उत्तर दिया

चौपाटी की ओर ?

हूँ।

मैं भी तुम्हारे साथ चलू ?

गाड़ी आपकी है।

पत्नी के इस अपमान की ओर ध्यान न दे शेखर बग्घी में बैठ गया और कोचवान को बग्घी चौपाटी ले चलने को कहा।

दोनों अगली आगे की सीट पर जा बैठे। और गाड़ी धीरे २ चौपाटी की ओर बढ़ने लगी। पति-पत्नी दोनों चुप थे, शेखर सोच रहा था, बात का सिल सिला कैसे शुरू हो। लेकिन उसने कई बार चाहा भी पर शान्ति की ऐंडी भृकुटि देखकर वह चुप रह गया। अंत में उसने उदासीनता का भाव बनाते हुये शान्ति के दस्ताने छुए। लेकिन शान्ति ने चिढ़ कर अपना हाथ दूसरी ओर कर लिया। शेखर ने याचना भरी दृष्टि से कहाः—

"सतो"।

क्या है ?

आज तुम बहुत सुन्दर लग रही हो।

हूँ! शान्ति एक बिगड़ैल राजकुमारी की तरह अकड़ी बैठी सूर्य छिपने को था, सड़क पर गाड़ियाँ आ जा रहीं थीं।

"डीयर सतो"।

आखिर में तंग आकर शान्ति ने कहाः— मेरे ऊपर कुछ तो रहम करो, बस बहुत हो चुका। क्या मुझे गाड़ी में अकेले बैठने का दो क्षण भी अधिकार नहीं है।

पर शेखर ने बात जारी रखते हुए कहा आज तो तुम्हारा सौन्दर्य गजब ढा रहा है।

शान्ति का क्रोध सीमा को पार कर चुका था। तुम्हे मेरे सौन्दर्य से क्या मतलब। मैं सौगन्ध खा कर कहती हूँ कि आज से हम मियाँ-बीबी की तरह बन कर नहीं रहेंगे।

शेखर के हृदय में जैसे किसी ने गर्म फ़ौलाद [illegible]

उसका पुरुषत्व जैसे इस अपमान से पीड़ित होकर जल उठा हो। उसने अधिकार भरे स्वर में कहा:-

क्यों ?

लेकिन शान्ति ने इस डर से कि कहीं बाहर बैठे नौकर इस झगड़े को न सुन ले धीरे से जवाब दिया। हूँ, तुमने ठीक ही पूछा। क्यों ? इसलिये कि मैं तुम्हारी रग रग पहचानती हूं। कहो तो अभी सब बातें खोलकर रखदूं तुम्हारे सामने !

कहो. जरा सुनूं तो।

जब से तुम्हारी वासना-लोलुप स्वार्थी नजरों का शिकार हुई हूँ।अन्दर से मेरी आत्मा सड़ रही है।

शेखर का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। वह स्वस्थ शरीर का बलिष्ट व्यक्ति था, उसका समाज में मान था; वह एक आदर्श पति और पिता माना जाता था।

शान्ति ने कठोर स्वर में कहा:- तुम्हें आज सब कुछ सुनना ही पड़ेगा। यह ठीक है कि यह सारी बातें तुम्हें कड़वी लगेगी, लेकिन मुझे इसकी जरा भी परवाह नहीं है।

तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, शेखर की आवाज कांप रही थी।

मैं पागल नहीं हूँ, मेरा दिमाग ठीक है। तुम मुझे पिछले ग्यारह वर्ष से लगातार माँ बनाने की सजा दे रहे हो। मैं भी तो एक औरत हूं। मेरे भी हृदय है, उनमें इच्छायें हैं। मैं भी जीवन के कुछ क्षण आनन्द से बिताना चाहती हूँ।

शेखर का चेहरा मुरझा गया; मैं कुछ समझा नही हूँ! हृदय में तो खूब समझते होगे। अभी कुछ ही दिन पहले मैंने सातवें बच्चे को जन्म दिया। तुम चाहते हो मेरा सौन्दर्य नष्ट हो जाय, मेरा यौवन नष्ट हो जाय। मगर सभी प्रयत्नों के बाद भी तुम मुझे नष्ट नही कर सके। अब मैं तुम्हारे फंदे में नहीं आऊगी। क्या बकती हो! शेखर की आवाज में दबी हुई चीख थी। मेरी आयू अभी तीस वर्ष की है और मैं सात बच्चों की मां बन चुकी हूं। ग्यारह वर्ष पूर्व हमारा विवाह हुआ था। तुम सोचते होगे. दस वर्ष में तो मेरा सौन्दर्य नष्ट हो जायगा, और फिर मैं ईर्शा के योग्य न रहूँगी।

शेखर ने शान्ति को झकझोरते हुये कहा कल मैं तुम्हारी सब अकड़ निकाल दूंगा।

अब मेरा मूंह तुम बन्द नहीं कर सकते। मैं सब बात कहके रहूँगी। अगरतु मने बीच में रोका तो इतनी जोर से चीखुंगी कि सड़क पर चलते आदमी भी रुक जायें। इसीलिये मैं यह सब बात सड़क पर कह रही हूँ कि जिससे तुम अपने क्रोध पर संयम रख सको। मेरी बातें ध्यान से सुनो, मैं तुमसे घृणा करती हूँ। शान्ति का स्वर हकला चला था।

जब हमारी पहली मुलाकात हुई थी तो मैंने तुमसे कितनी आशायें की थी, कैसे सुनहरे सपने देखे थे, पर विवाह से पूर्व ही तुमने कुछ ऐसी हरकतें की जिससे मेरा हृदय घृणा से भर गया था। पर मैंने सोचा था कि सम्भवतः विवाह के बाद शायद हम दोनों की बन सके और यह सोचकर मैंने अपने आपको तुम्हारे समर्पित कर दिया था। पर विबाह के बाद तुम्हारे हृदय में ईर्षा की आग धधक उठी, तुम सदा ही एक जासूस की भांति मेरे हर कार्य पर नजर रखने लगे।

विवाह होने के कुछ दिन बाद ही चरित्र पर लांछन लगाया। कितनी शर्म की बात थी वह तुम्हारी इतनी हरकतों के बाद भी मेरा सौन्दर्य वैसा ही रहा, कई बार शहर की सबसे अधिक सुन्दरी होने के नाते मुझे "मैडल" मिले। पर तुम्हें यह बात अच्छी न लगी और तुमने मुझे गिराने की सोच ली। तुम चाहते थे कि मातृत्व का बोझ सभालते २ जल्दी बूढ़ी हो जाऊं और लोग मेरी शक्ल देखकर दूर भाग जायें, सच बताओ, क्या तुम यह नही चाहते थे ? तुमने अपनी बहन से भी एक बार कहा था, किन्तु उस बेचारी ने मुझसे कह दिया था। मुझे सब बातें बता दी थीं और उसी समय से मैं तुम्हारी नीयत भाप गई थी।

उसके बाद हमारे बीच कितनी खींचा तानी चली थी। कितनी बार तुमने मेरे सोने के दरवाजे तोड़े थे, कितनी बार तुमने मुझे ताले में बन्द करके रखा था। ग्यारह वर्ष तक तुमने मुझे बच्चा पैदा करने वाली घोड़ी बनाकर रखा। गर्भ-वती होते ही तुमने मुझे गाँव भेज दिया करते थे और फिर माँ बनने के बाद तुम मुझे बुला लिया करते थे और मैं अमिट-सा सौन्दर्य लिये लिये फिर तुम्हारे पास चली आती। मैं सोचती, अब की बार अच्छे घरानों की तरह मैं भी जीवन बिताऊँगी। लेकिन तुम्हारी ईर्षा फिर जाग उठती और तुम अपनी कुरुप वासना शान्त करने के लिये मुझ पर टूट पड़ते। तुम्हे मेरे सौन्दर्य की चाह नही थी, तुम्हें चाह थी मेरे शरीर की और इच्छा थी, उसे शीघ्र ही मिटा डालने की।

तुम्हारे मन में बच्चों के प्रति मोह था। तुम मुझे मां के रूप में देख कर कितने प्रसन्न होते थे। जब मेरे पेट में गर्भ होता तो तुम मुझे अपने साथ घुमाने में कितना गर्व करते थे। मैंने कई बार देखा था कि बच्चों को देखकर तुम्हारी आँखों में एक विशेष प्रकार की चमक पैदा हो जाती थी। क्योंकि तुम बच्चों में मेरे सौन्दर्य की पराजय

देखते थे। जब किसी पार्टी में लोग मेरे सौन्दर्य की प्रशंसा करते, तो तुम जानबूझ कर बच्चों की सेना लेकर एक विजेता की तरह उनके सामने खड़े हो जाते।

शेखर ने जोर से उसकी कलाई पकड़ ली और धीरे से बोला, मैं अपने बच्चों को प्यार करता हूँ यह ठीक है, पर जो तुमने अभी कहा है, क्या वह किसी माँ को शोभा देता है? पर फिर भी तुम मेरी हो, मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, स्वामी, समझी।

शेखर ने जोर से उसका हाथ मसल दिया उसकी उगलियाँ चटकने लगीं। शान्ती पीड़ा से छटपटाती हुई अपना हाथ छुटाने की कोशिश कर रही थी। कुछ हाथ ढ़ीला पड़ते ही उसने कहा—"तुम्हारा क्या ख्याल है, मैं चरित्र-वान औरत हूँ?"

शेखर आश्चर्य से उसकी ओर देखता हुआ बोला हां,हो।

क्या तुम यह जानते हो कि मैं भगवान के सामने झूठ नहीं बोलुगी?

नहीं।

क्या तुम मेरे साथ मन्दिर चल सकते हो?

किसलिये?

मन्दिर में ही पता लग जायगा।

तुम अगर यही चाहती हो, तो चलो।

शेखर ने जोर से पुकारा, "कोचवान घोड़ों को मन्दिर की ओर फेर दो।"

कोचवान ने बग्घी मन्दिर को फेर दी।

रास्ते में दोनों मौन रहे. गाड़ी मन्दिर के द्वार पर जाकर ठहर गई। शान्ति गाड़ी से उतरकर मंदिर में चली गई और पीछे शेखर भी,

बीच में शान्ति कहीं भी न रुकी वह सीधी वेदी के पास जाकर खड़ी हो गई। और दोनों हाथ से मूंह छिपा कर धीरे-धीरे प्रार्थना करने लगी। शेखर पीछे खड़ा था। उसे महसूस हुआ कि शान्ती रो रही है, बहुत धीरे २ जैसे कि औरतें गहन व्यथा के अवसर पर अकसर चुप-चाप रोतीं हैं। उसका सारा शरीर कांप रहा था।

शेखर को लगा कि यह सब व्यर्थ का नाटक है,केवल दिखावा है। उसने शान्ति का कंधा पकड़ कर हिलाया। शेखर के स्पर्श से उसे चेत हुआ वह उठ खड़ी हुई, उसकी आखों में दृढ़ निश्चय था।

मैं जो तुम से कहना चाहती थी अब कहूंगी, मुझे किसी बात का डर नही। इसके बाद जो तुम्हारे मन में आये तुम कर सकते हो। अगर चाहो तो मुझे गोली से मार देना। तुम इन बच्चों में से एक के पिता नही हो, केवल एक ही तुम बाप नहीं हो! मैं भगवान के सामने सौगन्ध खाकर कहती हू। तुम्हारी सब भयानक क्रूरताओं के बदले में तुमने जो लगातार मातत्व का भार ढोने का जो पण मुझे दे रखा है, उसके बदले में मैं तुम से केवल यही प्रतिशोध ले सकती थी। मेरा प्रेमी कौन था? इसका पता तुम कभी नहीं लगा सकते। तुम हर पुरुष पर संदेह करते फिरो फिर भी तुम्हें उसका पता नही लग सकता।

मैंने उसे अपना शरीर सौपा केवल तुम्हें धोका देने के लिये, और उसने मुझे माँ बना दिया। इन सात बच्चों में ही उसका एक बच्चा है, वह बच्चा कौनसा है? यह तुम जीवन भर नही जान सकते। पता लगा देखो। बस मैं तुम्हें यही बता देना चाहती थी। धोका देकर किसी भी आदमी से उस समय तक पूरा बदला नहीं लिया जा सकता, जब तक उसे धोके का ज्ञान न हो जाये। इसीलिये मुझे यह सब तुम्हें बतलाने की जरूरत पड़ी। बस मुझे इतना ही कहना था।

वह बड़े वेग से मन्दिर के द्वार की ओर भागी, वह सोच रही थी कि उसे पकड़ने शेखर उसके पीछे जरुर भागेगा। और पीछे से आकर उसके इतनीं जोर से घूंसा देगा कि वह चक्कर खाकर पृथ्वी पर गिर पड़ेगी। पर उसे पीछे से कुछ शब्द सुनाई नही दिया। उसने पीछे मुड़ कर देखा, शेखर सर झुकाये धीरे २ चला आ रहा था। शान्ति का हृदय फटने लगा, वह चुपचाप गाड़ी में बैठ गई, और कोचवान से बग्घी घर की ओर ले चलने को कहा।

रात को भोजन के समय शान्ति अपने कमरे में उस अपराधी की भांति इन्तजार कर रही थी जिसे फांसीं की सजा सुनाई जाने वाली हो वह सोच रही थी, वह क्या करे, क्या शेखर घर लोट आया? अगर लौट आया तो इस समय वह क्या सोच रहा होगा? घर में पूरण नीरवता छाई हुई थी! खाने के समय खानसामां ने दरवाजे पर आ कर पुकारा!

"क्या वह घर पर आ गये?"

'जी हाँ, वह खाने के कमरे में हैं!'

शान्ती कपड़े बदल कर खाने के कमरे में गई, शेखर सर नीचा किये मौन मुद्रा में बैठा था। कभी-कभी सर उठा कर पास बैठे बच्चे की ओर देख लेता मानों उस बच्चे को पहिचानने का प्रयत्न कर रहा हो जो उसका नहीं था। शान्ती का हृदय पीड़ा से फटा जा रहा था। एक-एक पानी का गिलास शान्ती के हाथ से गिरा और कर टूट गया। गिलास की आवाज से शेखर चौंका। उसने शान्ती की ओर देखा, और फिर निगाहें नीची कर ली। एकाएक शेखर उठा, उसने शान्ति की ओर देखते हुये कहा।

क्या यह सत्य है शान्ति?

हूँ। शान्ती ने केवल सर हिला दिया।

शेखर ने हाथ का गिलास जोर से मेज पर दे मारा और खट-खट करता हुआ अपने कमरे में चला गया। और शान्ती ने चैन की सांस ली। उसने अपने बच्चों को और देखते हुये कहा जो इस कान्ड से बहुत भयभीत हो गये। "बच्चों! जो भी तुम्हारे पिता ने किया है तुम उस पर ध्यान न देना, उन के हाथ से शायद अनजाने में ही गिलास गिर पड़ा था।"

अपनी सुन्दरता की रक्षा करने में आज वह सफल रही थी। वह बहुत दिनों से सोच रही थी कि किसी प्रकार शेखर से बदला ले। और आज शेखर तिलतिल कर के जल रहा था। उसने मन में कहा: जलता है तो जले, उसने ही कब परवाह की है उसकी, जिन्दगी भर रुलाया है। और वह कमरे के दरवाजे बन्द कर के सो गई।

सुबह नौकरानी के किवाड़ को थपथपाने से उसकी आंख खुली। उसने किवाड खोले, नौकरानी चाय लिये खडी थी। उसने चाय के साथ-साथ शेखर का एक पत्र भी दिया जिसमें लिखा था कि वह कुछ समय के लिये बाहर जा रहा है! वह खर्चे के लिये जितना रुपया चाहे बैंक से ले सकती है।

३

सिनेमा में आज बहुत भीड थी, ऐसा लगता था कि सारी बम्बई आज "लिबर्टी" पर ही टूट पडी हो।

दो मित्र बाक्स में बैठे, एक बहुत सुन्दर स्त्री की ओर देख रहे थे। उनमें से एक का नाम विपन था और दूसरे का हरीश। शान्ती को देखते हुये विपन ने कहा "देखो हरीश! यह है श्रीमती शेखर, अब भी कितनी सुन्दर लगती है।"

हरीश ने शान्ती की ओर देखा जो उस समय सारे बाक्स की दृष्टि का केन्द्र बनी हुई थी।

'मित्र ! बिल्कुल मूर्ति सी लग रही है। बालों का कटव, और शरीर का गठन कितना सुन्दर है। उसकी आयू क्या होगी ?'।

"मेरे विचार से छत्तीस या सैंतीस।"

'बिल्कुल गलत।"

"भाई मुझे पता है।"

"देखने में तो यार, बीस, बाईस से अधिक नहीं लगती।"

"सरकार ! उसके सात बच्चे है !"

"झूठ।"

"मैं उनके घर प्रायः जाता हूँ, मैंने वह फौज, अपनी आंखों से देखी है।"

"भला इतनी सुन्दर स्त्री सात बच्चों की मां कैसे हो सकती ? और अगर यह सत्य है, तो कितना बड़ा अन्याय है कि एक सुन्दर औरत को ग्यारह वर्ष तक एक बच्चा बनाने की मशीन यंत्र बना कर रखा गया हो।"

'मगर यह तो तो प्राकृतिक **नियम** है।"

"हूं, विनय ने सर हिलाते हुये कहा-अगर यह प्रकृति का नियम है तो प्रकृति हमारी दुशमन है, संसार से सौन्दर्य मिटा देना चाहती है। भगवान ने संसार में एक भी सुन्दर और अच्छी वस्तु नहीं बनाई ! इन्सान ने ही केवल बुद्धि के बल पर सौन्दर्य पैदा किया है, कवियों के गीत गा कर, चित्रकारों ने चित्र बना कर, विद्वानों ने उसका विवेचन कर के, भगवान को भगवान बनाया है ! उसे महान्ता प्रदान की है !

भगवान ने बनाये हैं अल्प-बुद्धि वह मिट्टी के घरोंदे जिनका केवल यही उदेश्य है कि वह अपनी वासना को बुझाते हुये नये-नये मौडल बनाये।"

भगवान शायद स्त्री-पुरुष को संतान-उत्पत्ति का ही माध्यम बनाना चाहता था, पर इन्सानों ने प्यार की उत्पात कर भगवान को मूंह तोड़ जवाब दिया। मनुष्य ने ही काव्यमयी और साहित्यक भाषा से प्यार को सौन्दर्य के ऊँचे शिखर पर चढ़ा दिया।

"हरीश ने हंसते हुये कहा-तुम्हारी बात में दम है मित्र! पर कोई समझे जब ना।"

हाल की बत्तियां बुझ चुकी थी और तस्वीरें बेजान पर्दे पर नाचने लगी थी।

४

सिनेमा हाल से शान्ती बाहर निकली और अपनी गाडी की ओर बढ़ी। वह दरवाजा खोल कर गाडी में बैठना ही चाहती थी कि उसने देखा कि शेखर मौजूद है। उसका कन्ठ खुशी से गदगद हो गया। वह चीख ही पडना चाहती थी "शेखर तुम ? पर उसने अपनी खुशी हृदय से ही दबा ली। वह चुपचाप जाकर उसकी बराबर में बैठ गई, बग्घी घर की ओर जा रही थी! एकाएक शेखर बोला!"

संतो!

"तुम—चाहते क्या हो ? शान्ती ने अपने मन पर पत्थर रखा!"

"तुम नहीं जानती संतो यह स्थिति अब बहुत दिनों तक नहीं चल सकती।"

"कौन सी स्थिति ?"

"तुमने मुझे पिछले छः वर्षा से भयानक दण्ड दे रखा है। मेरी आत्मा को चैन नहीं है, मैं अपने बच्चों में से किसी को भी प्यार नहीं कर सकता। जब भी किसी बच्चे को मैं गोद में लेकर बैठता हूं उसी क्षण जैसे कोई भीतर से कहने लगता है। यह बच्चा तेरा नहीं! मेरी जिन्दगी भार बन गई, यह सन्देह मुझे घुन की तरह खाये जाता है मैं पागल हो जाऊगा संतो! पागल हो जाऊगा।"
क्या तुम वास्तव में दुखी हो शेखर? शांती ने आंखों में आंसू भरते हुये कहा।

"हां, शान्ती। शेखर ने रुधे हुये कण्ठ से बोला।"

जो तुम जानते हो, मेरा अपराध उस से भी बडा है। पर लगातार गर्भावस्था में जिन्दगी बिताना मेरे लिये कितना कठिन हो गया था? तुम्हें अपनी खाट से दूर रखने का और कोई उपाय ही नहीं था, शेखर, इस लिये मैंने झूठ बोला. भगवान की झूठी कसम खाई, इस झूठ से मैं जानती थी कि तुम मुझे गोली से उडा सकते थे, इसमें मेरी जिन्दगी का खतरा था, पर उस ग्यारह साल की जिन्दगी से यह एक बार की मौत अच्छी थी। विश्वास रखा शेखर मैंने तुम्हारे साथ विश्वास-घात नहीं किया। मैंने तुम्हारी इज्जत को बट्टा नहीं लगाया।"

"शेखर ने शान्ती के दोनों हाथ अपने सीने से लगा लिये। क्या यह सच है संतो?"

"हाँ, शेखर।"

शेखर के आंसू शान्ती के हाथों को धो रहे थे।

"तुमने कितनी बड़ी सजा दी है संतो! शेखर ने शान्ती के पक्ष पर अपना सर रखते हुये कहा।"

शान्ती के हाथ शेखर के वालों में थे। "अगर मैं ऐसा न करती तो छः साल में छः और न होते।

शेखर ने शान्ती के मूंह पर हाथ रख दिया गाड़ी चली जारही थी।

रोमांस

प्यार—प्रेम ! पीरी ने कान्धों को झटका देते हुये अपने मित्रों से कहा !

कौन कहता है कि संसार में प्रेम नहीं है। प्यार तो बहुत है जनाब ! परन्तु प्यार करने वाले नहीं है। प्यार की पींगें बढ़ाने और प्रेम के दीवाने खत्म हो गये ! वरना प्यार तो अब भी गली-गली और कूंचे-कूंचे में बिखरा पड़ा है। प्रेम के अखाड़े में कूदने के लिये कुछ हिम्मत चाहिये साहब ! आज कल के प्रेमियों की हिम्मत को तो जंग लग गया है, जरा सा भी खतरा मोल लेने से डरते हैं। बस जरा कहीं खतरे का सामना हुआ नहीं कि सारा प्रेम रफू चक्कर और श्रीमान प्रेमी, यह जा वोह जा !

यदि आदमी आंखे बन्द करके थोड़ा भी हिम्मत और दिल से काम ले तो आज भी मन चलों के लिये प्रेम के दरवाजे खुले हैं।

मित्रों ! मैं कभी प्रेम विरेम के धन्धों में नहीं पड़ता, परन्तु एक बार तो मैंने भी हिम्मत कर डाली। घटना इस प्रकार है !

एक बार मुझे "फिलोरंस" जाने का अवसर मिला, जहाँ की रंग रोलियां प्रसिद्ध है ! मुझे इस शहर के बारे में अधिक तो नहीं, हाँ, केवल इतनी जानकारी अवश्य थी, कि यहाँ कभी कभी रातों को कुछ

शरीफ कहलाने वाले सफेद पोश दलालों से मुटभेड़ हो जाती है जो बड़ी चालाकी से दबे-दबे शब्दों में परदेसियों को अपने साथ चलने को कहते हैं। इन व्यक्तियों का पेशा परदेसियों को गांठ कर अपने घर की चार दिवारी में ले जाना होता है जहां बड़े शांत वातावरण में उनके घर की स्त्रियां अपने परिवार के मुखिया के नेतृत्व में स्थाई व्यवसाय किया करती थी। इस प्रकार की अय्याशी में सबसे बड़ा लाभ यह था कि ऐसे शान्त वातावरण में भय को कोई स्थान नहीं रहता।

एक दिन जब मैं राह में खड़ा हुआ···की सुन्दरता देखने में मग्न था कि पीछे से किसी ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा। मैंने घूम कर देखा तो एक स्त्री जिसकी उम्र लगभग पचास वर्ष होगी खड़ी मुस्करा रही थी। उसने मुझ से पूछा।

क्या श्रीमान। फ्रांस के रहने वाले हैं ?

जी हां ! मैं फ्रांसीसी हूँ ! मैंने उत्तर दिया।

क्या आप किसी सुन्दर स्त्री से मिलना चाहेंगे ?

क्यों नहीं, अवश्य, मुझे बड़ी खुशी होगी। मैंने मुस्कराते हुये कहा।

यह निराले ढंग का निमंत्रण जिस गम्भीरता तथा शान्ति से इस बुढ़िया ने मेरे सामने उपस्थित किया था इस में एक खास ढंग का भोला पन भी था। जरा सोचिये तो। यह प्रेम का बुलावा, यह चलती फिरती राह में, मैं जाने के लिये उतावला हो गया।

वह मुझे से टूटी फूटी फ्रांसीसी में बात कर रही थी। उसने अपने बात जारी रखते हुये और टूटी फूटी फ्रांसीसी भाषा को और भी चकना चूर करते हुये कहा तुम ऐसी क्रियायें तो नहीं करते जो प्रायः फ्रांस में

की जाती हैं। है कैसी क्रियायें ? मैंने जरा घबराते हुये पूछा। वह कौन सी क्रियायें हैं जो केवल फ्रांस में ही कीजाती हैं और स्थानों पर नहीं ?

खैर ! जब वह ; ... अपना आशय समझा पाई तो उस धूर्त को तो कोई लज्जा का आभास न हुआ। परन्तु मुझे शर्म आ गई और मैंने दबे शब्दों में उसे विश्वास दिलाया कि मैं उन फ्रांसिसियों में से नहीं हूँ। लज्जा की रेखायें तो मेरे मूंह से मिट गई परन्तु मैं पूर्णतः पीला पड़ गया। जब बुढ़िया ने मुझ से कहा।

इसकी तसल्ली करने के लिये मुझे पहले स्वयं तुम्हारी परीक्षा करनी पडेगी।

और यह सब कुछ उसने अपने ऊपर ऐसा भरोसा करते हुये कहा कि हंसी के स्थान पर मेरा चहरा पीला पड़ गया।

तो क्या''''''। मैंने कहा''''''पहले मुझे तुम से''''''''''''''' ! मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।

पहले तो यह निराली बात सुन कर मुझे हैरानी हुई, परन्तु जब उसने बात जरा साफ की तो मैं बिलकुल पागल सा हो गया। बड़ी अजीब घटना थी। मुझे ऐसा लगा कि मेरे कान मुझे धोका दे रहे हैं।

खैर ! उसने स्पष्ट रुप से यह बतलाया कि वह इस शहर के उच्च परिवार के जर्मन स्त्री की प्रमुख सेविका है। और उसकी मालकिन की यह इच्छा है कि वह किसी उच्च सोसाइटी के अच्छे फ्रांसीसी के साथ कुछ घड़ियां अच्छे ढंग से व्यतीत कर सके। परन्तु साथ ही साथ फ्रांसीसी व जर्मनी के अच्छे और शरीफों के रिवाज का खास ख्याल रखे। और बढ़िया होने का प्रमाण दे। साथ ही साथ साधारण फांसीसीयों के रिवाज को न अपनायें।

परन्तु इस भेंट की सब से पहली शर्त यह थी कि मैं सब से पहले इस बुढ़िया के सामने अपनी बढ़िया रुचि का प्रमाण दूं।

हे भगवान! मैंने मन ही मन कहा यह जर्मनी औरत देखने में कितनी भोली लगती थी, पर वास्तव में है कितनी धूर्त। उसने मुझे फंसा ने के लिये हंसते हुये कहा।

मेरी मालकिन बहुत सुन्दर हैं, वह पूर्णिमा के चांद की तरह स्वच्छ, बसन्त की तरह रंगीन और फूलों की तरह कोमल है। तुम एक बार उन से.........।"

परन्तु क्षमा करना। मैंने बीच में टोकते हुये कहा-" तुम तो अपनी रानी की भाँति सुन्दर नहीं हो, हो सकता है शायद मैं तुम्हें इतनी खुश न कर सकूं, जितना तुम्हारी मालकिन को।

यह सुन कर वह कुछ सकपका सी गई और लड़खड़ाती जबान में बोली।

नहीं! नहीं!! मैं तुम्हारा मन खट्टा करना नहीं चाहती; केवल परखना चाहती हूँ। और उसने सब साफ साफ खोल दिया।

आखिर यह पक्का हुआ कि वो मुझे "भाई पतिता" के विख्यात चकले में ले जायगी जहाँ मैं तो किसी जवान और सुन्दर लौंडियाँ से.........! और वह इस मेल मिलाप के समय वहां रह कर मेरी बढ़िता रुचि की परीक्षा लेती रहेगी।

मित्रों! आप लोग यदि आज्ञा दें तो शर्म के कारण मैं अपना मूंह अपने हाथों से छिपा लूं।

पर मैं इतना दोषी नहीं हूँ जितना कि आप लोग समझ रहे हैं। मेरा दोष केवल इतना था कि मैं जवान था, और जवानी में आदमी अन्धा हो जाता है।

हाँ ! तो माई पतिता" भोग विलास भवन एक बहुत बड़ा भवन है। वहाँ मुझ जैसे निर्धन व्यक्तियों का पहुंचना बिल्कुल ही असम्भव था। मैं तो वहां का स्वप्न भी नहीं देख सकता। वहां का साधारण रेट पाँचसो फ्रेंक्स था, भला मैं इतनी बड़ी रकम कहां से लाता ? इस लिये मैंने बुढ़िया का फोकट का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

मैं यह नहीं कहता कि मैंने अच्छा किया था बुरा किया, पर इतना जरूर कहूगा कि वह बुढ़िया जर्मन जाति की थी। हम फ्रांसीसियों ने युद्ध के समय लाखों रुपये हरजाना दिया है। कम से कम मैंने इतना तो किया कि इस हानि की बीड़ रकम में से अधिक नहीं तो थोड़ी सी ही एक जर्मन की जेब से वापिस वसूल तो करली।

हाँ तो "माई पतिता" की वैश्या बड़ी रंगीली निकली। बुढ़िया ने भी अपने परिक्षण के समय में अधिक रोक टोक नहीं की, इस परीक्षा मे मैं पूरा उतरा और मैंने अपने अच्छे होने का प्रमाण दे दिया और भगवान की दया से मैंने शत्रुओं की भूमि पर फ्रांस की इज्जत के झन्डे गाड़ दिये।

दूसरे दिन मैं अस्टीमू के पास खड़ा उसकी प्रतिक्षा कर रहा था। वैसे यह कृत्य बड़े ही लज्जा का था, परन्तु सत्य तो यह है कि मुझे इस बुरे काम में भी बड़ा आनन्द आता था। पर कितनी लज्जा की बात है कि हम फ्रांसीसी विदेशों में जा कर कितने उच्छृङ्खल और कुकर्मी हो जाते हैं।

निश्चित समय पर बुढ़िया आई। उस समय बहुत अधेरा छा चुका था, मैं चुपचाप उसके पीछे हो लिया। पर न जाने क्यों उस समय मेरा हृदय मुझे कुछ धिक्कार रहा था। राह मुझे वो कल रात वाली 'माई पतिता" के विलास भवन वाली लौंडियाँ याद आ रही थी और मैं उस के ध्यान में मग्न उसके पीछे-पीछे चला जा रहा था। मुझे पता ही नहीं

था कि मैं कहां जा रहा हूँ। मैं अपने स्वप्न से उस समय चौंका, जब बुढ़िया ने मुझ से कहा लो हम लोग अपने स्थान पर आ गये। मेरे अच्छे युवक। मेरी हर बात का ध्यान रखना और अपने अच्छे होने का उसी प्रकार प्रमाण देना जैसे कल रात तुमने "माई पतिता" के विलास भवन में दिया था।

हम उस समय ऊँची ऊँची दीवारों वाले एक बडे महल के पिछले द्वार पर खड़े थे। बुढ़िया ने आगे बढ़ कर धीरे से दरवाजा खोल दिया।

मेरा मन चाह रहा था कि मैं यहां से भाग जाऊं। मुझे कुछ ऐसा लगा कि यह बुढ़िया मुझे यहां फांस कर लाई है। मेरी तुच्छ और कम जानकारी से स्वयम् लाभ उठाना चाहती है। मेरा मन यहां से भाग जाने के लिये झटपटाने लगा।

अन्दर आजाओ। उसने कहा। डरते क्यों हो? मेरी मालकिन बहुत सुन्दर है, उस कल रात वाली छोकरी से हजार गुना सुन्दर।

मैं डरते २ अन्दर गया। मुझे ऐसा लगा कि मेरी आंख मुझे धोका दे रही है। मेरी आंखों के सामने अलिफ लैला की जादू भरी कहांनियां सत्यता का रूप धारण किये सामने चली आ रही है। मैंने सोचा भय किस बात का है? यह कोमल-सुन्दरी भला मुझे क्या हानि पहुंचा सकती है। और मैं उसके साथ चला गया।

मित्रों! कितनी सुन्दर घड़ियां थी वो। एक घन्टे तक मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं पृथ्वी पर नहीं स्वर्ग की परी के साथ इन्द्र के सिंहासन पर बैठा हुआ स्वर्ग के मजे ले रहा हूँ।

मैं अपनी इन भावनाओं को शब्द नहीं दे सकता। महल के

विलासी वातावरण में वह सुन्दरी परियों के देश की राज कुमारी लग रही थी। वह जर्मन स्त्री कितनी सुन्दर थी। मुझे पहली बार पता लगा कि एक जर्मन स्त्री-भी-कितनी-सुन्दर हो सकती है। इस जलपरी के बाल कितने सुन्दर थे, बड़ी-बड़ी सुन्दर मस्त आंखे, और शरीर तो बिल्कुल रेशम की तरह मुलायम था।

कुछ देर बाद एकाएक मेरी वह जलपरी बिस्तरे से कूद कर अलग खड़ी हो गई। उसकी आंखों से घृणा और क्षोम के अंगारे बरसने लगे। फिर वो कपड़े बदलने के लिये पर्दे के पीछे चली गई और जर्मन भाषा में मुझे जोर-जोर से गालियाँ देने लगी। मैं ठगा सा रह गया, मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि यह एकाएक क्या हुआ। इसी समय बुढ़िया ने दौड़ कर कमरे में प्रवेश किया। और घबड़ाये स्वर में मुझ से बोली- "जल्दी से कपडे पहन कर यहां से भाग जाओ, नहीं वह तुम्हारा सरे काट लेगा।"

मैंने अधिक सवाल जवाब करने में समय नष्ट नहीं किया। इसके अलावा वह बुढ़िया भी इतनी हड़बड़ा गई थी कि मुझे समझाने के लिये उसे फ्रांसीसी शब्द ही नहीं मिल रहे थे। वह पागलों की भांति बुड़बुड़ा रही थी। मैंने समय की चाल को पहिचानते हुये जल्दी से कपड़े पहने और जूता बगल में दबा कर सीड़ियों से उतरता हुआ सर पर पाँव रख कर सरपट भागा।

दस मिनट दौड़ने के पश्चात मुझे कुछ होश आया। मुझे यह भी ध्यान न रहा कि मैं कितनी गलियां पार कर आया हूँ। बड़ी कठिनाई से रास्ता ढूंढता हुआ अपने होटल में पहुचा, और चोरों की भाँति छुपता हुआ अपने कमरे में दाखिल हुआ।

होटल में दूसरे रोज सुबह को हर तरफ इस कत्ल की चर्चा हो रही थी;

एक जर्मन ने अपनी स्त्री को कत्ल कर दिया परन्तु बयान लेने के बाद पुलिस ने उसे जमानत पर छोड दिया। उसने अपने बयान में कहा के (जिसकी पुष्टि उसकी स्त्री की खास नौकरानी ने की थी) इस स्त्री का विवाह इस व्यक्ति के साथ जबरदस्ती कर दिया था। वह अपने पति से घृणा करती थी। (घृणा का कारण छुपा कर रखा गया था) उसने अपने पति से बदला लेने के लिये एक रात को चार गुण्डों की सहायता से खूब पिटवाया (इस बयान की पुष्टि उन गुण्डों ने की थी) और इसके पश्चात् जब पति जंजीरों ने जकडा खडा था तो पति के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने के लिये उसके ही सामने उसकी पत्नि ने एक फ्रांसीसी के साथ संभोग किया और अपने देश का अपमान एक फ्रांसीसी के हाथों करवाया। ज्यों ही इस जर्मन पति को कैद से छुटकारा मिला उसने तुरन्त अपनी बेवफा पत्नी को गोली से उडा दिया।

फिर तुमने क्या किया ? पीरी के पास बैठे हुये एक मित्र ने कहा। "मैंने वही किया जो एक बहादुर फ्रांसीसी को करना चाहिये। मैं उससे मिला और मैंने उसे द्वन्द युद्ध के लिये ललकारा। वह तो यह चाहता ही था कि मुझ से बदला ले, वह तलवार निकाल कर मुझ पर टूट पडा। वह पूरे जोर के साथ मुझ पर आक्रमण कर रहा था। एक बार तो उसकी तलवार मेरे कान के पास से लपलपाती हुई निकल गई। उसने झुंझलाते हुये कहा। मेरी पत्नी की हत्या तुम्हारे कारण ही हुई है मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा। उस जलपरी का नाम सुनते ही मेरा खून खौल उठा। मैंने फ्रांस की जय, फ्रांस जिन्दाबाद का नारा लगाया, और उस हत्यारे जर्मन को कुछ ही क्षणों में गाजर की तरह काट कर रख दिया।

अपने ब्युरो के असिस्टेंट के यहाँ पार्टी थी। मास्टर सोहराव की उस रमणी से पहली मुलाकात वहीं हुई। और वह पहली नजर में ही उसे अपना हृदय दे बैठे।

वह किसी देहाती डाक्टर की लड़की थी। और एक महीने पहले ही इस शहर में आई थी। उसकी माँ प्रायः उसे लेकर अपने परिचितों के यहाँ जाया करती थी। इससे वह समझती थी कि कहीं किसी पार्टी में शायद इसके योग्य वर मिल जाये।

वह लड़की बहुत ही सुन्दर और सुशील लगती,ऐसी लड़की को हर समझदार युवक अपनी पत्नी बनाने में अपना सौभाग्य समझता है। उसके सरल सौन्दर्य में एक विशेष आकर्षण था। उसके होंठों पर हर समय खेलती हुई मुस्कान उसकी पवित्र आत्मा की द्योतक थी। सब लोग उसकी दिल खोलकर प्रसंशा किया करते, प्रायः लोग कहते थे; वह पुरुष धन्य होगा जिसका इसे प्यार मिलेगा। पत्नी-रूप में इससे अच्छी लड़की और कहीं नहीं मिल सकती।

मिस्टर सोहराव की इनकम ७०० रु० महावार थी, वह सोचते थे कि उनकी इनकम इतनी है कि वह दाम्पत्य जीवन की जिम्मेदारियाँ सम्भाल सके। उन्होंने इस लड़की से विवाह का प्रस्ताव किया, और उसने यह प्रस्ताव मंजूर कर लिया।

इस लड़की के साथ सोहराव के दिन बड़े आनन्द से बीतने लगे। यह घर को कम खर्च और इतनी होशियारी से चलाती थी कि जिससे ऐसा लगता कि वह बहुत बड़े अमीर हों जो बहुत बड़े ठाठ-बाट से रहते हैं। वह सोहराव का बड़ा ही ध्यान रखती थी। उसके घर में आने से एक ऐसी मधुरता और रौनक आ गई थी कि विवाह के छः साल बाद भी सोहराव को ऐसा लगता था कि हर दिन हनिमून की रात समान आनन्द दायक है।

पर उसे अपनी पत्नी से शिकायत थी तो केवल दो बातों की एक तो उसका सिनेमा देखने का शौक, दूसरी उसके झूठे हीरा मोती पहनने की प्रवृति से। उसकी कुछ सहेलियाँ उसके लिए सीट का प्रबन्ध कर दिया करती थीं। अक्सर मिस्टर सोहराव को भी अपनी इच्छा के विरुद्ध उसके साथ सिनेमा देखने जाना पड़ता था। और यह उन्हें रुचि-कर न था कि सारे दिन ऑफिस में जी तोड़कर महनत करने के बाद वह रात को दो दो बजे तक जागे।

कुछ दिन बाद सोहराव ने अपनी पत्नी से कहा कि हर रोज उसे अपने साथ न घसीटा करे, और वह अपनी किसी भी सहेली के साथ सिनेमा देखने चली जाया करे। पहले तो उसकी पत्नी ने यह मानने से इन्कार कर दिया मगर सोहराव के बहुत आग्रह करने पर वह मान गई, इस पर सोहराव को बहुत प्रसन्नता हुई।

सिनेमा के शौक के साथ २ उसे अपने शरीर को सजाने का भी शौक था। उसकी पोशाक बहुत ही सादी, पर सुरुचिपूर्ण होती थी। लेकिन वह अपने शरीर को तरह २ के हीरों से सजाने लगी। जो झूठे होने पर भी सच्चे हीरों की भाँति चमकते थे।

मिस्टर सोहराव को यह सब पसन्द न था वह इस पर ऐतराज करते हुए कहते थे :—

'सुनो शीला ! हम लोग सच्चे हीरे खरीदने की स्थिति में नहीं हैं। किन्तु इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम इन नकली मोतियों से अपने आप को सजाकर, लोगों को, अपने आप को धोका दो। मेरे विचार से तुम तो इतनी सुन्दर हो कि तुम्हें किसी हीरे-मोती की आवश्यकता नहीं। तुम अपने स्वाभाविक सौन्दर्य और शील से सजकर सिनेमा जाया करो नारी जाति के तो यही अनुपम गहने हैं ।"

लेकिन शीला धीरे से मुस्करा देती। और कहती :—

मैं क्या करूं ? मुझे हीरे-मोती पहनने का चाव है, या यूं कहो ये मेरी कमजोरी है, और हर कमजोरी इतनी शीघ्र दूर नहीं हो सकती।

इसके बाद वह नकली हीरों का हार उंगलियों पर लपेट कर नचाने लगती। और अपना सर सोहराब के सीने से सटा देती और कहती -"देखो यह कितने सुन्दर हैं। कोई कह सकता है कि ये झूठे है ?"

और सोहराब मुस्करा कर कहते तुम्हारी रुचि राजशीय है शीला।

प्रायः संध्या के समय जब दोनों पति पत्नी आग के सामने बैठ कर प्रेमालाप करते तो शीला अपने जेवरों के बैग को लाकर मेज पर रख देती। उस बेग को सोहराब हमेशा "खुराफात" का बेग कहते थे। शीला अपने जेवरों को हमेशा बड़े भावपूर्ण, दत्तचित्त हो कर देखती, मानों उन जेवरों का सम्बन्ध उसके जीवन का एक रहस्य हो।

वह कभी कभी हार अपने पति के गले में जबरदस्ती पहना देती। हार पहना कर वह मुक्त हास्य हंसती और कहती 'तुम बिल्कुल "जोकर" से लगते हो। और फिर अपने आप को सोहराब के शरीर पर डाल कर उसका चुम्बन ले लेती।

सर्दी के दिन थे एक दिन वह सिनेमा देखने गई। जब लौटी तो शीत उसकी नस-नस में समा चुकी थी।

दूसरे दिन उसने खांसना शुरु कर दिया और उसके बाद उसके फेफड़ों पर सूजन आ गई जिस से वह मर गई।

मिस्टर सोहराब को अपनी पत्नी की मृत्यु का इतना सदमा बैठा कि उनके बाल एक महीने में ही सफ़ेद हो गये। उनका समय दिन रात रोने में ही बीतने लगा। शोक से उनका हृदय फटा जाता था। हर समय उन्हें अपनी पत्नी की सुन्दर आंखे, सरल मुस्कान, संगीतमय स्वर-लहरी की याद सताती रहती।

समय भी उनके घाव न भर सका। दफ्तर में जब लोग उनके बारे में चर्चा करते थे तो उनकी आंखों में आंसू भर आते और वह वेदना को हल्का करने के लिए सुबक-सुबककर रो उठते। शीला के कमरे की चीजे उन्होंने ज्यों की त्यों रख दी थी। उसके कमरे में हर शाम वह जा कर बैठ जाते और सारे दिन का भार रो कर हल्का कर लेते।

सोहराब पर कुछ कर्जा भी चढ़ गया और कुछ ही दिनों में उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई।

एक दिन जेब बिल्कुल खाली थी। उन्होंने घर की कुछ चीजें बेचने का फैसला किया। और उसी क्षण उन्हे सूझा, यह शीला के नकली हीरे मोती क्यों न बेच डाले। आज भी इन नकली हीरों के प्रति सोहराब के मन में उतनी ही घृणा थी जितनी कि शीला के सामने। पहले उन्हें देखकर चिढ़ हुआ करती थी। और अब,अब उन्हें देखकर पत्नी की याद आती थी। उसने सोचा क्यों न इन्हें आंखों से दूर कर दिया जाय।

शीला मौत के अन्तिम दिन तक वह झूठे मोतियों के जेवर खर द ती रही थी। सोहराब ने शीला का सबसे भारी हार बेचने का फैसला कर लिया। जिसे वह अधिक चाव से पहना करती थी। उसने सोचा इसे बेचकर चार-पांच रुपये तो मिल ही जायेंगे। हालां के हार नकली था, किन्तु फिर भी बड़े सुन्दर तरीके से बना हुआ था।

हार उन्होंने अपनी जेब में रखा, और जौहरी की दुकान की ओर चल दिये। वह बाजार के जौहरी की सबसे पहली दुकान में घुस गये। अपनी गरीबी को इस प्रकार जाहिर करते हुये, और सस्ता माल बेचते हुये उन्हें आत्म ग्लानी हो रही थी।

जौहरी से उसने कहा—क्या आप बता सकते यह हार कितने रुपये का होगा अन्दाजन ?

जौहरी ने हार को देखा-परखा, और अपने नौकर को बुलाया उससे धीरे से कुछ कहा, फिर हार को दूर रखकर उसकी चमक को देखने लगा।

मिस्टर सोहराब इस जाँच-पड़ताल से खीज से उठे। और कहने वाले ही थे, कि जांच-पड़ताल व्यर्थ है। मैं जानता हूँ यह सब नकली है। कि उसी समय जौहरी बोल उठा। सरकार इस हार की कीमत बारह-हजार से पन्द्रह हजार तक है। पर मैं इसे जब नही खरीदूंगा, जब तक आप मुझे यह विश्वास न दिला दें कि इसे आपने कहां से लिया, और यह आपका ही है।

यह सुनते ही सोहराब की आंखें खुली की खुली रह गईं। उन्हें अपने कानों पर सहसा विश्वास नहीं आया ! उन्होंने हकलाते हुये कहा "तु···म, आ···प," क्या ठीक कहते हैं। जौहरी ने कहा। "आप और जगह दिखा लें पन्द्रह हजार से अधिक कोई नहीं देगा। अगर पन्द्रह हजार में देना है तो कृपया मुझे ही दीजियेगा।"

आश्चर्य और हृदय में तूफान लिये वह लौट आये वह एकान्त में बैठकर इस पर स्थिर बुद्धि से विचार करना चाहते थे।

बाहर निकलकर उन्हें उस जौहरी की मूर्खता पर हंसी आ रही थी।

अगर मैं उसके सौदा पर राजी हो जाता, मूर्ख को सच्चे और झूठे हीरों की पहिचान भी नहीं है।

घूम-फिरकर वह दूसरे जौहरी की दुकान पर पहुँचे दुकानदार उस हार को देखते ही चिल्ला उठा। इस हार को मैं पहचानता हूँ! यह तो मेरी ही दुकान से खरीदा था।

इसकी कीमत क्या है ?

मैंने इसे बीस हजार रुपये में वेचा था। अब मैं इसके अठारह हजार रुपये दे सकता हूँ। लेकिन हमारे नियम के अनुसार आपको यह बतलाना होगा कि यह आपके पास कहां से आया।

पहले आप ठीक तरह जांच कर लीजिये। मेरे विचार से यह झूठा है। जौहरी ने सन्देह की दृष्टि से पूछा। जनाब आपका नाम क्या है ?

सोहराब—मैं गृहमन्त्री के दफ्तर में काम करता हूँ! शातरा गली २७, नम्बर के मकान में रहता हूँ।

जौहरी ने अपनी रसीद बुक खोली। उसमें देखकर बोला श्रीमती सोहराब के नाम यह हार मैंने २४ अगस्त को वेचा है।

दोनों ने एक दूसरे की आंखों को देखा—सोहराब की दृष्टि में आश्चर्य था, और जौहरी की दृष्टि में चोर की गन्ध। आखिर जौहरी ने शान्ति भंग करते हुये कहा।

क्या आप चौबीस घण्टे के लिये यह हार मेरे पास छोड़ सकते हैं ?

हां, हां, क्यों नहीं। और जौहरी की दी हुई रसीद को जेब के हवाले करते हुये वह दुकान से निकल पड़े।

सोहराब बहुत देर तक सड़कों पर बिना किसी काम के घूमते रहे, उनके विचारों में तूफान उठा हुआ था। उन्होंने तर्क की शरण

ली वह अपने पैसे से इतना कीमती हार कैसे खरीद सकती है, तो फिर यह हार ...? जरूर किसी ने भेंट किया होगा। भेंट किसने किया होगा भेंट ? और उसकी पत्नी को भेंट दी किस लिये होगी ? फिर ! वह सड़क के बीचों-बीच खड़े रह गये। मानो उन्हें किसी ने जकड़ दिया हो। एक भयानक सन्देह ने उनके मन में जन्म लिया। तो क्या....वह भी ऐसी थी ? तब तो सभी गहने उसे भेंट में मिले होंगे, वह सभी सच्चे होंगे ! उनके पैरो की जमीन काँपने लगी। सामने खड़े हुये पेड गिरते नजर आने लगे। वह घर की ओर दौड़े और शीला वाले कमरे में रात भर सुसक-सुसक कर रोते रहे।

दूसरे दिन सुबह वह दफ्तर जाने लगे। पर किसी भी काम में उनका मन न लगता था, काश ! वह हार बेचने न जाते। काश ! वह जौहरी उस हार को झूठा बता देता। उनसे कोई काम न होता, आखिर उन्होंने दफ्तर से छुट्टी ले ली।

उन्हें याद आया उन्हे हार लेने जौहरी की दुकान पर जाना है। वहाँ जाने के लिये शर्म के मारे उनके पैर नहीं पड़ते पर इतना कीमती हार भी कैसे छोड़ सकते हैं, उन्होंने कपड़े पहने और जौहरी की दुकान की ओर चल दिये।

मौसम बड़ा सुन्दर था, नीला आकाश नीचे बसे हुये नगर पर मुस्करा रहा था। जेब में हाथ डाले लोग सड़कों पर टहल रहे थे।

सोहराब मन ही मन सोच रहे थे,वास्तव में धनी लोग कितने सुखी होते हैं। धन से बड़ी से बड़ी व्यथा को भुलाया जा सकता है,अगर धन हो तो चाहे जहाँ जाये, चाहे जो करे, काश ! मेरे पास धन होता ?

उन्हें भूक लगी थी, जेब में हाथ डाला, पर वह तो कंगाल के पेट की तरह खाली थी। उन्हें फिर हार की याद आई। अठारह हजार। कितनी बड़ी रकम होती है,

वह तेजी से जौहरी की दुकान की ओर बढ़े। कुछ दूर चलने पर सामने ही जौहरी की दुकान थी। अठारह हजार रुपये! कई बार वह दुकान में जाने का पक्का इरादा करते पर उनके मन की हया उनके कदमों में जंजीर का काम करती। उन्हें भूक लगी थी, जोर की भूक, और उनकी जेब में एक पैसा भी न था, पेट की क्षुधा मिटाने के लिये वह एक दम जोर से दौड़े, कि कहीं उनका फिर विचार न बदल जाये, और जौहरी की दुकान में घुस गये।

जौहरी सामने आया, और उसने बड़ी शिष्टता से सोहराब से बैठने के लिये कहा। पास ही खड़े क्लर्क ने उन्हें इस प्रकार घूरा मानो वह सब कुछ जानता हो।

जौहरी ने कहा: सोहराब जी मैंने इसकी जाँच-पड़ताल कर ली है। अगर आपका विचार हार बेचने का है, तो मैं इसके अठारह हजार आपको दे सकता हूँ। "जी""जी, मैं बेचने को तैयार हूँ!" सोहराब ने हकलाते हुये कहा।

जौहरी ने अठारह हजार के नोट, सेफ में से निकाले, एक बार गिने और सोहराब के हवाले कर दिये! और सोहराब ने कंपकपाते हाथों से उन्हें जेब के हवाले कर दिया।

दुकान से बाहर निकलते हुये जौहरी की ओर देखा, वह मुस्करा रहा था, सोहराब को उसकी यह मुस्कान हृदय में छिदती सी लगी। किन्तु उन्होंने आत्मा को कुचलते हुये जौहरी से पूछा: मेरे पास ऐसे और भी जेवर हैं, जो मुझे अपनी पत्नी से मिले थे, क्या आप उन्हे खरीद सकते हैं?

जौहरी ने विश्वास दिलाते हुये सर हिलाया, "क्यों नहीं! मैं जरूर खरीद लूंगा।"

अच्छा तो मैं आपके पास ले आऊंगा। सोहराब ने गम्भीर मुद्रा में कहा और एक घण्टे बाद सब जेवर जौहरी की दुकान पर थे।

कानों के बुन्दे २ हजार के थे। कंगन आठ हजार के, मूंगा और पन्ना का एक सैट बीस हजार का था। और भी बहुत सी चीजे थीं जिनकी कीमत कुल मिलाकर चालीस लाख रुपये बैठती थी।

जौहरी ने मजाक करते हुये कहा। क्या आपकी पत्नी ने आपका सब पैसा जेवरों में ही लगा दिया था।

सोहराब फीकी हंसी हंसते हुये बोले, पैसे को सुरक्षित रखने का यही एक सुन्दर तरीका है।

उस दिन उन्होंने शहर के सबसे बड़े होटल में बैठकर चाय पी। फिर उन्होंने गाड़ी किराये पर लेकर पूरे शहर का चक्कर काटा। और पास से गुजरने वाले धनी लोगों की ओर थूकते हुये मन ही मन कहा देखो मैं भी धनी हूँ, मेरे पास भी चालीस लाख रुपया है।

फिर अचानक उन्हें अपने मालिक का ध्यान आया, उन्होंने टैक्सी वाले से दफ्तर की ओर मुड़ने को कहा।

दफ्तर में घुसते ही उन्होंने अपने मालिक से कहा। सर! मैं इस्तीफा देने आया हूँ। मैं अभी अभी चालीस लाख का वारिस बना हूँ। उन्होंने अपने पुराने साथियों से हाथ मिलाया और फिर वह खाना खाने एक बड़े होटल में चले गये।

आज सबसे पहली बार अपनी रुचि से सिनेमा देखने गये। और बाकी रात उन्होंने रंगरेलियों में बिताई।

कुछ दिन बाद उन्होंने दूसरा विवाह कर लिया। इनकी दूसरी पत्नी सती-साध्वी औरत थी पर उसका स्वभाव बहुत ही तेज था। उसने सोहराब को बहुत दुःख दिया।

माँ की खाट के सिरहाने खड़ा किसान युवक डाक्टर से बातें कर रहा था। मौत का हाथ पकड़े बुढ़िया बिल्कुल शान्ति और विरक्त भाव से दोनों की ओर देखती हुई उनकी बातें सुन रही थी। उसे पता था, वह दो ऊपर नब्बे की हो चुकी है, वह अब किसी तरह नहीं बच सकती। वह समय के उस चौराहे पर थी, जब मनुष्य के मर जाने पर पर खुशी मनाई जाती है, गम नहीं।

छत के खुले हुये मोघों से धूप छन-छन कर कमरे में आ रही थी और करीब चार पीढ़ी से ठोक-ठोक कर बनाये हुये फर्श पर पड़ रही थी। गरमी के दिन थे, गर्म हवा के झोंके के साथ-साथ खेतों की खुशबू भी अन्दर आ रही थी----भूसे, अनाज और पत्तों की खुशबू जो दोपहर की कड़ी धूप से जल रहे थे।

डाक्टर ने ऊँचे स्वर से कहा, हीरा! तुम अपनी माँ को इस हालत में अकेला नहीं छोड़ सकते। वह किसी भी समय मर सकती है। और हीरा निराशा में दोहरा हुआ जा रहा था। 'पर मुझे अपने गेहूँ भी तो उठाने हैं डाक्टर? वह बहुत समय तक तो खेत में पड़े नहीं सकते, उनके उठाने का यही तो समय है। क्यों माँ?" उसने चारपाई से लगी माँ की ओर देखा जो सूख कर हड्डियों का ढांचा मात्र रह गई थी।

मरती हुई औरत ने किसानी-स्वाभाविक लोभवश, पुत्र को अपनी सहमति दे दी कि वह गेहूँ उठवा ले, वह अभी नहीं मरती। लेकिन डाक्टर अपना क्रोध न रोक सका और पैर पटकता हुआ बोला नहीं, नहीं मैं ऐसा नहीं होने दूंगा ! तुम हृदय-हीन हो. पाषाण हो ! तुम्हारी मां मौत की घड़ियां गिन रही है, और तुम खलिहान में काम करने जाओगे। हीरा विचलित हो उठा, "डाक्टर साहब आप नहीं जानते, मेरी मां अभी एक दो दिन नहीं मरेगी। फिर भी मैं इसे अकेला नहीं छोड़ूंगा। इसकी देख-रेख के लिए चुनियां मौसी को चार दिन के लिये नौकरी पर रख लूंगा, चाहे वह कुछ भी क्यों न ले "

हीरा आवेश में चुनियां को नौकर रखने की बात कह तो गया. पर अब वह सोच में पड़ गया था। एक ओर समाज का भय, और दूसरी ओर धन न खर्च करने की घोर अनिच्छा। वह लड़खड़ाती जबान में डाक्टर से बोला :—

पर डाक्टर ! चुनियां कितने रोज पर मान जायेगी ?

"मुझे क्या पता" डाक्टर चीखा, "तुम कुऐं में जाओ और ऊपर से चुनियां। पर मैं इतना बताये देता हूँ कि बुढ़िया को अकेला न छोड़ना, यह किसी भी समय मर सकती। मेरा काम समझाना है, आगे तुम जानो तुम्हारा काम।" और वह चला गया।

डाक्टर के चले जाने के बाद हीरा ने मां से कहा:-माँ ! मैं चुनिय क बुलाने जा रहा हूँ। और वह घर से बाहर हो गया।

चुनियां मौसी को गाँव के सभी छोटे बड़े मौसी कहते थे। मौसी के और कोई न था वह अकेली रहती थी। जो और कोई किसी काम को न कर पावे, यह काम पैसा लेकर मौसी हँसी खुशी कर दिया करती थी।

जब हीरा चुनियाँ के घर पहुँचा तो चावल बीन रही थी। वह बोला—

राम राम मौसी, क्या कर रही हो ?

चावल बीन रही हूँ बेटा ! चुनियां ने हीरा की ओर देखते हुए कहा कहो कैसे आये ? बैठ जाओ,

मेरी मां बीमार है, क्या तुम उसकी देख-भाल कर सकती हो ?

क्यों क्या हाल है ?

बस अब चला चली का मामला है।

चुनि याँ ने अपने हाथ की थाली एक तरफ रखते हुए बड़ी हमदर्दी से पूछा। "क्या हालत अधिक खराब है ?"

डाक्टर कहता था कि आज की रात पकड़ जाये तो बहुत है।

हूँ, तब तो हालत काफी बिगड़ चुकी है।

हीरा कुछ हिचकिचाया। शायद उसे अपने मन की बात सीधे कह देना अच्छा न लगा। पर हेर-फेर कर बात कहने के लिये भी तो कोई बात न थी आखिर उसने हिम्मत करते हुए कहा :—

क्या उसके मरने तक तुम उसकी देख-रेख कर सकती हो ? मगर तुम जानती हो मौसी मैं नौकर रखने की स्थिति में नहीं हूँ। पर समय ही कुछ ऐसा है कि बिना तुम्हारे काम भी तो नहीं चल सकता।

चुनियां ने व्यापारिक ढंग से कहा :—

दाम दो प्रकार के हैं, अमीरों के लिये एक रुपया दिन का, और दो रुपये रात के। और तुम्हारे लिये आठ आने और एक रुपया।

हीरा सोच में पड़ गया। वह अपनी मां को जानता था। उसकी मजबूत हड्डियों को जानता था।

वह डाक्टर की राय के बावजूद भी आठ दिन चल सकती है। उसने निश्चयपूर्वक कहा।

यह ठीक न होगा। मेरे विचार से यह ठीक होगा कि तुम उसकी मौत तक का ठेका मुझ से कर लो। यह हम दोनों के लिये एक जुआ है। डाक्टर कहता है वह आज रात भी मुश्किल से पकड़ेगी। अगर ऐसा हुआ तो तुम फायदे में रहोगी, और मैं नुकसान में और अगर वह कल तक या आगे तक लटकती रही तो मैं फायदे में रहूँगा और तुम नुकसान में।

बुढ़िया मौसी ने उस आदमी को विस्मित नेत्रों से देखा। ऐसा ठेका उसने जीवन में कभी नहीं किया था। वह कुछ हिचकिचाई : पर जुए का विचार आकर्षित कर रहा था। उसने सोचा इसमें जरूर कोई चाल है। "जब तक मैं तुम्हारी मां को मैं देख न लूं मैं यह नहीं कर सकती। उसने कहा?"

हाँ, हाँ, चलो चलकर देख लो।

उसने अपने हाथ धोये और हीरा के साथ चल दी।

रास्ते भर वह दोनों आपस में कुछ न बोले। केवल डग भरते हुए जल्दी जल्दी चले जा रहे थे।

धूप से घबड़ाकर छाया में बैठी गौओ ने उनकी ओर आलस भाव से देखा और हरी घास पाने की आशा में धीरे-धीरे रम्भाने लगी।

घर पहुँचकर हीरा बुदबुदाया। "हो सकता है सब काम खत्म हो चुका हो।

लेकिन बुढ़िया मरी नहीं थी। वह अब भी छोटे-छोटे पाओं वाली चारपाई पर पड़ी थी। उसके दुबले-पतले उभरी हुई गांठों से भरे हुये हाथ ऐसे लग रहे थे जैसे दो भयानक केंकड़े।

चुनियां खाट के पास गई, और हंसकर बोली :— "कैसी हो हीरा की मां ?" और बातों ही बातों में मरणासन्न बुढ़िया की परीक्षा करने लगी। नब्ज देखी, ठोक कर सीना देखा, सांस सुनी और इस बड़े परीक्षा के बाद वह कमरे से बाहर आ गई। पीछे-पीछे हीरा भी बाहर आ गया। चुनियां के मन में इस विचार ने पक्का घर कर लिया था कि बुढ़िया आज की रात भी नहीं पकड़ सकती। 'देख लिया मौसी ? हीरा बोला।"

हां ! मेरा ख्याल है कि दो दिन अभी नहीं मरेगी। हो सकता है तीन भी ले जाये। मैं सब मिलाकर पांच रुपये लूँगी।

पांच रुपये ! हीरा चीखा। क्या तुम पागल हो गई हो मौसी, मां केवल तीन-चार घण्टे की महमान है।

बड़ी देर तक सौदा होता रहा। आखिर बात चार रुपये पर तै हो गई। चुनियां खुश थी कि केवल दो तीन घण्टे ही बैठने पड़ेगा। और हीरा के मुँह पर भी शिकायत न थी, क्योंकि वह जानता था कि उसकी बूढ़ी मां की सींक सी हड्डियों में इतनी जान है कि वह अभी कम-से कम आठ दस दिन तक मौत से आंख-मिचौनी खेल सकती है। जब तक वह खलिहान से अपना गेहूँ उठा लेगा और उसके बाद अगर चुनियां मौसी वायदे से फिर भी गई तो वह देख-भाल खुद कर लेगा। वह खुशी-खुशी गेहूँ संभालने के लिये खेत पर चला गया। चुनियां ने अन्दर जाकर देखा बुढ़िया खाट पर हाथ पटक रही थी। सहसा उसने पूछा:—

हीरा की मां ! तुम्हारे कान में पडित जी ने वह मन्त्र डाल दिया ? जो आखिरी समय डाला जाता है ?

बुढ़िया ने सर हिला दिया।

चुनियाँ का हृदय खुशी से उछल पड़ा, वह उलाहने भरे स्वर में बोली:—

हाय, हाय, जभी तो नहीं हो रहा है बेचारी का उद्धार। मैं भी तो कहूँ, बेचारी का चोला क्या नहीं छूटता। मैं जाकर अभी पंडित जी को बुलाकर लाती हूँ। और वह तेजी से पंडित जी के घर की ओर लपकी उसे भागती देखकर बच्चे समझे कि हीरा की मां चल बसी, और चुनियाँ मौसी हीरा को खेत पर से बुलाने जा रही है। उस छोटे से गाँव में यह खबर हवा की तरह फैल गई, गांव की औरतें हीरा के घर आ-आ कर जमा होने लगीं। हीरा को यह खबर लगी तो उसे कुछ आश्चर्य हुआ वह भी काम छोड़कर घर की ओर लपका।

घर जाकर हीरा ने देखा कि सभी औरतें उसके घर जमा थीं, और पंडित जी उसकी माँ के कान में राम-नाम का जाप कर रहे थे। वह भी खाट के पाँइते जाकर बैठ गया।

दिन ढलने को हो गया; पर माँ की हालत वैसी ही थी, जैसी वह सुबह छोड़कर गया था। गांव की औरतें एक-एक करके चली गईं थीं। पर निष्क्रिय भाव से आँखें खोले पड़ी बुढ़िया अब भी शान्ति से मौत की प्रतीक्षा कर रही थी, जो पास होने पर भी विलम्ब कर रही थी। उसके रुंधे हुये गले से जल्दी-जल्दी चलती हुई साँस के कारण घौं घौं का शब्द उत्पन्न कर रही थी।

उसने चुनियां से कहा :—

मौसी। तुम जाकर सो जाओ सुबह जल्दी उठना, मुझे खेत पर जाना है।

सुबह जब चुनियां उठी तो हीरा खेत पर जाने की तैयारी कर रहा था। चुनियाँ ने पूछा "कहो, तुम्हारी माँ मर गई?"

नहीं, आज कुछ ठीक सी लग रही है। उत्तर देते समय हीरा की आंखों में कुछ कुटिलतापूर्ण चमक थी। और वह खेत पर चला गया।

इसी तरह चार दिन बीत गये। कृपण चुनियां चिन्तित हो चली थी, उसने बुढ़िया की ओर देखा, उसकी दशा में कोई अन्तर नहीं आया था। वह बिना हिले-डुले पड़ी थी, खुली हुई आंखे, वही रुकती-रुकती सी सांस। चुनियां ने सोचा यह हालत अभी दो दिन भी चल सकती है, चार दिन या एक सप्ताह तक भी। उसके कृपण हृदय में डर समा गया। साथ ही यमराज के प्रति गुस्से का एक तूफान उठ रहा था उसके हृदय में, जो उस बुढ़िया को छलावा दे रहा था। और साथ उस बुढ़िया के प्रति भी जो मरती ही न थी।

दोपहर को हीरा खाना-खाने आया, वह सन्तुष्ट था, प्रसन्न था। और सोच रहा था, अब दो दिन में वह अपने सभी गेहूँ खलिहान से घर पहुँचा देगा। वह खाना-खाने के बाद फिर खेत पर चला गया।

चुनियां का क्रोध बढ़ता ही जा रहा था। बीतता हुआ प्रत्येक क्षण उसे भारी और व्यर्थ लग रहा था। वह लुटी जा रही थी। समय ही तो उसका धन है। उसके हृदय में एक विचार उठा, क्यों न इस बुढ़िया का गला घोल दे जो इसका समय खाये जा रही है। दो उँगलियां गले पर, और मामला साफ। पर नहीं यह तो खतरनाक होगा, फिर उसके हृदय में एक विचार उठा, वह बुढ़िया के बिस्तर के पास गई और उससे बोली:—

तुमने कभी यमदूत देखा है, हीरा की मां ?

बुढ़िया ने सर हिलाया।

चुनियां उसके पास बैठ गई, और उसके दिमाक में भय घुसेड़ने

के लिए उसे भयानक कहानियां सुनाने लगी। उसनें बताया। हीरा की मां, मरने से कुछ पहले, मरने वाले के सामने यमदूत प्रगट होता है। उसके हाथ से झाड़ू होती है, सर पर खाना पकाने का बर्तन होता है। और वह जोर-जोर से चीखता है। जब यह सब दिखाई दे जाये, तो समझ लो सब कुछ समाप्त होने वाला है। मरने वाले के जीवन में कुछ ही क्षण शेष है। और उसने कई लोगों के नाम गिना दिये जो उसके सामने मरे थे। पन्ना का सीता। रामरखा की लड़की, क्या नाम था उसका ? मोती पंडित का छेदा, आदि आदि।

उसकी कहानी का बुढ़िया पर पूरा प्रभाव पड़ चुका था। वह बिस्तरे के चारों ओर सर घुमाकर देखने का प्रयत्न कर रही थी।

एकाएक चुनियां सिराहने की ओर खड़ी हो गई। उसने अलगनी पर पड़ा सफेद चादरा उठाया, और उसे अपने चारों ओर लपेट लिया। अपने सर पर खाना पकाने का एक कटोरदान रखा और उस पर तीन ओर को तीन सींग से बना लिये। दायें हाथ में झाड़ू पकड़ी, और बायें हाथ में टीन की बाल्टी पकड़ कर जोर से जमीन पर दे मारी। बाल्टी के जमीन पर पड़ते ही जोर का धमाका हुआ और धमाके के साथ ही चुनियां बुढ़िया के सामने आ गई। वह बाल्टी के अन्दर जोर-जोर से चीखती जाती थीं और झाड़ू से बुढ़िया की ओर कुछ इशारा करती जाती थी, जैसे सचमुच यमदूत उसकी आत्मा खीचने के लिये मन्त्र पढ़ रहा हो।

डर से बोखला कर बुढ़िया ने उठकर भाग जाने की व्यर्थ कोशिश की, और उसी क्षण डरकर वह ढेर हो गई, सब कुछ शान्त हो गया।

चुनियां ने शान्त भाव से सब चीज जहां की तहां रख दी।

जब शाम को हीरा घर लौटा तो चुनियां को रोती देखकर उसने

हिसाब लगाया कि वह आठ रुपये के नफे में रहा है। और चुनियां सोच रही थी, अगर मैं यम का डर न दिखाती, तो बुढ़िया अभी चार छः दिन और न मरती, मुझे करीब आठ-दस रुपये का नफा ही रहा।

दोनों खुश थे, दोनों ही सोच रहे थे कि नफे में वही रहा है और दूसरा घाटे में।

मिस बानू अपने कमरे में आराम कर रही थी। उनके पलंग पर बिछे हुए कीमती कपड़े, फूल की पंखड़ियों की तरह मुलायम और जवान प्रेमी के चुम्बन की तरह सुखद थे। समस्त कमरा हिना की खुशबू से महक रहा था।

मिस बानू को पता था कि आज उनका खाली दिन है। आज के दिन कोई सूटिंग नहीं थी। और इस लिए उन्होंने सोचा था कि वह ग्यारह बजे से पहले नहीं उठेगी। इसी लिए वह आज नौ बजे तक मीठे और सुखद सपने ले रही थी।

अचानक किसी के पैरों की आहटसे उसकी नींद उचट गई,वह उठी आकर देखा कि उनकी प्रिय सहेली शीला सरकार नौकरानी से झगड़ रही। शीला उनकी प्रिय सहेलियों में से थी, बीसियों चित्रों में उनके साथ काम कर चुकी थी।

हल्लो शीला ! क्या बात है, सवेरे सवेरे कैसे ?

तुम्हारी नौकरानियाँ बड़ी मूर्ख हैं बानू, आने ही नहीं देती थी ऊपर।

मैंने ही इन्हें मना कर रक्खा है शीला ! अरे--गैर लोग आकर व्यर्थ में आकर तंग करने लगते हैं।

मगर सरकार हमारी गिन्ती ग़रों में है या ग़ैरों में ?

छोड़ो भी, तुम ने बात का बतंगड़ बना दिया। अच्छा यह बतलाओ सवेरे-सवेरे कैसे ? अभी तो नौ भी नहीं बजे।

यह सुनते ही शीला का चेहरा क्रोध और घृणा से लाल हो गया। उसने भराई हुई आवाज में कहा तुम से कुछ बात करने आई हूँ। कल रात को एक भयानक घटना घटित हो गई।

चलो अन्दर बैठ कर बातें होंगीं। बानू ने हाथ पकड़ते हुए कहा। और दोनों सहेलियाँ अन्दर चली गईं। बानू ने शीला को खाट पर बिठाल कर नौकरानी को खिड़कियाँ खोलने का आदेश दिया और नौकरानी के चले जाने के बाद शीला से बोली:—"अब सुनाओ अपनी राम कहानी।"

तुम को पता ही है बानू, वह पुरानी नौकरानी आज से छः महीने पहले काम छोड़ कर चली गई थी। उसके बाद मैंने कई नौकरानियों को रक्खा, पर कोई भी काम अच्छी तरह से नहीं करती थीं। मैंने थोड़े-थोड़े दिन रख कर सब को निकाल दिया। एक दिन मैंने एक अखबार में एक युवती का विज्ञापन पढ़ा, जो सीना, पिरोना, बाल सवांरना यानी घर का सब काम काज जानती थीं। विज्ञापन में यह भी लिखा था कि वह पहले कई शरीफ घरानों में काम कर चुकी है।

मैंने दूसरे दिन पत्र डालकर उसे बुलाया। देखने में बड़ी सुन्दर और सीधी-साधी लगती थीं। बाल छोटे, किन्तु सुन्दर जिनसे वह बिना चुटेले के दो छोटी-छोटी चोटियाँ बनाये हुए थी। मोटी-मोटी सुन्दर आंखें सफेद सलवार और कमीज, बात करने का ढंग; सभी कुछ सुन्दर था। मैं उससे बड़ी प्रभावित हुई और मैंने उसे नौकर रख लिया। उसका नाम कमला था।

कुछ ही दिन में उसने अपने काम से मुझे मुग्ध कर लिया। वह बहुत ही चुस्त और अपने काम में मुस्तैद थी।

वह बड़े सुन्दर ढग से बाल-सवांरती, कपड़े पहनाती और सुन्दर से सुन्दर ढंग के घर पर ही कपड़े सी लेती थी। मैं अपने भाग्य पर फूली न समाती थी! भला ऐसी नौकरानी और इतने सस्ते पैसों में कैसे मिल सकती थी।

तुम्हें तो पता है कि मुझे नौकरानियों की स्पर्श से भी घृणा है। मगर उसकी उगलियाँ मेरे बदन में एक सिहरन सी पैदा कर देती थी। जिससे मुझे एक अनुपम आनन्द की आवृति होती थी। धीरे-धीरे मैं इतनी आराम-तलब बन गई कि जूते पहनाने से चोली पहनाने तक का काम कमला को करना पड़ता था।

स्नान के बाद मैं खाट पर लेट जाती और कमला सभी अंगों पर धीरे धीरे मालिश करती। और दिनों-दिन मेरा प्रेम उसकी ओर बढ़ने लगा? मैं उसे नौकरानी नहीं, सहेली मानने लगी।

कल शाम को खानसामा मेरे कमरे में आया उस समय मैं आराम कर रही थी। उसने घबड़ाते हुए कहा, मालकिन, दरोगा साहब नीचे बीस सिपाहियों को लिये खड़े हैं।

उन्हें मुझ से क्या काम है?

यह लोग घर की तलाशी लेना चाहते हैं।

तलाशी, क्या हम लोग चोर हैं। मैं क्रोध से पागल सी हो उठी।

वह लोग समझते हैं कि इस घर में कोई अपराधी छुपा हुआ है। खानसामा ने डरते-डरते कहा।

मैं कुछ डर सी गई, डरती-डरती नीचे दरोगा के पास पहुँची।

दरोगा की बोलचाल शिष्ट ढंग की थी उसने मुझ से क्षमा याचना करते हुये कहा :—

मुझे खबर लगी है कि आप के घर में एक पुराना अपराधी छुपा है।

मेरा सारा शरीर डर और आश्चर्य से कांप उठा। मैंने उससे कहा कि मेरे घर के नौकर सभी विश्वास पात्र हैं और बहुत पुराने हैं। मगर फिर भी मैंने उसकी दिलजोई के लिए घर के सभी नौकरों को बारी बारी से उसके सामने बुलाया। और सबका परिचय देती गई !

यह है खानसामा दीनू, पहले फौज में काम करता था।

दरोगा ने सिर हिलाया, यह नहीं है।

यह कोचवान; हरीपुर का रहने वाला है।

नहीं।

यह रधिया, घर के सब काम काज करती है।

जी, यह भी नहीं है।

तो आपको धोका हुआ है, दरोगा जी।

हो सकता है। मगर क्या आप अपने सभी नौकरों को एक साथ बुलवा सकती हैं। एक बार और तसल्ली हो जायगी।

क्यों नहीं, मैंने सभी नौकरों को एक लाइन में खड़े होने की आज्ञा दी।

क्या आपके सब नौकर यही हैं ?

जी हां, केवल एक मेरी खास नौकरानी बाकी रह गई है; अगर आप कहें तो उसे भी......

जरूर । दरोगा ने बीच में बात करते हुए कहा ।

मैंने घंटी बजाई और कमला कमरे में आ गई। उसे देखते ही दरोगा ने इशारा किया, और दो पुलिस वालों ने बढ़ कर कमला के हाथ में हथकड़ियां डाल दी । मैं कुछ कहना ही चाहती थी कि दरोगा ने मेरी ओर देखते हुए कहा :—

यह बनावटी युवती वास्तव में युवक है । इसे आज से दो वर्ष पूर्व बलात्कार और हत्या के अपराध में फांसी की सजा हुई थी यह किसी प्रकार पुलिस को धोका देकर भाग निकला और जब से पुलिस लगातार इसकी खोज में थी ?

मुझ पर मानों आकाश टूट पड़ा हो । मुझे विश्वास नहीं हुआ । मैंने हकलाते हुये कहा:-क्या......क्या आप........ ।

जी, हाँ, दरोगा ने बीच में टोकते हुए कहा— मैं आप को एक निशानी बताता हूँ, जिसे देखकर आप को मेरी बात पर विश्वास हो जायगा । इसके दायें हाथ पर एक चोट का निशान है ! यह देखिये । उसने आगे बढ़ कर कमीज ऊपर को उठाते हुए कहा । उस की बात सच निकली ।

दरोगा ने हंसते हुए कहा: "मेरा विचार है कि अब आपको किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं पड़ेगी" और वे लोग उस कमला रूपी पुरुष को पकड़ कर ले गये ।

बानू ! मुझे इस बात का दुख नहीं कि वह इतने दिनों तक मुझे कपड़े पहनाता रहा, मेरे समस्त शरीर पर मालिश करता रहा । मगर मुझे रंज तो इस बात का है कि उसने मेरा अपमान किया—मेरे सौन्दर्य का अपमान किया, इसे मेरे विचार से कोई भी स्त्री सहन नहीं कर सकती । तुम समझ गई ना ?

नहीं मैं नहीं समझ नहीं पाई।

जरा विचार तो करो। इस कम्बखत को—बलात्कार के अपराध में सजा हुई थी; पर······पर उस भले आदमी ने मुझे..........मेरा अपमान किया, समझ गई तुम ?

बानू के चेहरे पर रहस्यमय मुस्कान खेल रही थी, जो प्रायः औरतों के मुँह पर ही दिखाई देती है।

———

आराम कुर्सी पर कुछ ऊंघते हुए से एडमिरल दांता बेली ने बुढ़िया औरतों जैसी आवाज में कहा—एकबार मेरे साथ भी एक प्रेम की अजीब घटना घटित हुई क्या आप लोग उसे सुनना चाहेंगे ? उसके होंटों पर सदा रहने वाली शुष्क मुस्कान थी । जिसके कारण उसे लोग भयानक नास्तिक समझते थे ।

मेरी आयु उस वर्ष लगभग तीस वर्ष की होगी, मैं नौ सेना में लेफ्टीनेन्ट था, जबकि मुझे ज्योतिष सम्बन्धि खोजों के लिये महान भारत भेज गया । अंग्रेजी सरकार ने मेरी खोज के लिये हर प्रकार की सुविधायें दी थीं और मैं अपने सहयोगियों के साथ उस विचित्र, विशाल और अनोखे देश में अपने कार्य में तल्लीन हो गया ।

मैं अपनी यात्रा का वर्णन नहीं करूंगा । क्योंकि अगर मैं उसे लिखने बैठूं तो मोटी २ जिल्द की कई किताबें भर जायेंगी । भारत में मैं अजीबो गरीब इलाकों से गुजरा । अनेकों सुन्दर राजकुमारों ने बहुत ही अच्छे ढंग से आवभगत की और मेरे सम्मान में बहुत बड़े २ प्रीति-भोज दिये ।

पहले २ दो महीने मुझे ऐसा लगा कि मैं कल्पना के उड़नखटोले पर सवार होकर परियों के देश का भ्रमण कर रहा हूँ । मैंने गहन वनों

के बीच हीरों के सुन्दर और चमकीले खंडहर खोज निकाले। असाधारण से खंडहर, रेशम से चमकीले और पहाड़ों से अनन्त थे। जिन्हें देखते ही दर्शक शारीरिक और आध्यात्मिक आनन्द से अविभूत हो जाता था। उनकी आकार-प्रकार के प्रति इस प्रकार का मोह हो जाता है जैसे किसी अप्सरा को पा लिया है।

अपने सफर के अन्तिम दिनों में मैं गंगाधर पहुँचा जो आज कल बड़ी अवनत अवस्था में है। लेकिन किसी समय यह मध्यभारत के सबसे वैभव शाली नगरों में था। गंगाधर का राजा धनिक, हिंसक, उदार तथा बहुत ही क्रूर था। राजा का नाम मदन था। वास्तविक अर्थों में वह पूर्वीय पौरुष का द्योतक था। सुकोमल और बरबर, सुन्दर और खूनी, सुकोमल सौन्दर्य और निर्दय क्रूरता का अद्भुत मेल था।

गंगाधर एक घाटी की तराई में छोटी झील के किनारे बसा हुआ था। उसे देखने में ऐसा लगता मानों चारों ओर बने महलों की दीवारें उस झील के पानी में स्नान कर रही हों।

दूर से देखने में यह शहर एक सफेद धब्बा सा लगता पर जैसे २ हम पहुँचते जाते वह धब्बा बड़ा होता जाता और साथ ही हमको भारतीय स्मारक और स्तम्भों की सीधी मिनारें और उसके शिखरों की उंचाई और गोलाई साफ नजर आने लगतीं।

नगर के मुख्य द्वार से लगभग एक मील की दूरी पर राजा मदन की ओर से अगवानी को भेजे गये हाथियों और सैनिकों ने मेरा स्वागत किया और बड़ी धूमधाम के साथ राजमहल में ले गये।

पहले मैंने सोचा था कि कोई खास पोशाक पहन कर राजा से मिलूंगा किन्तु वह तो मुझे मिलने के लिये इतना अधीर हो उठा

कि मुझे कपड़े बदलने का समय ही न मिल सका। मेरा परिचय पाने लिये उसने बड़ी उत्सुकता दिखाई।

मुझे गुम्बदों से जुड़े एक विशाल भवन में ले जाया गया जहं मेरे रास्ते के दोनों ओर सैनिक सम्मान में सर झुकाये खड़े थे। मैंने देखा कि सामने तख्त पर भड़कीले वस्त्रों में राजा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। तख्त हमारे यहाँ के बागों में रक्खे बिना पीठ की बैन्चों जैसा होता है।

मदन गहरे पीले रंग की पोषाक पहने हुए था। इस पोषाक का मूल्य हमारे देश के सिक्कों में करीब दो करोड़ फ्रेंक रहा होगा। यही नहीं इसके अलावा उसके चौड़े माथे की पगड़ी पर "दिल्ली का तारा" नामक हीरा चकाचौंध कर रहा था।

मदन की उम्र बीस और पांच पच्चीस की ही थी। मेझे ऐसा लगा कि उसकी नसों में हब्शी का खून बह रहा हो। परन्तु था वह शुद्ध हिन्दु जाति का। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थी, होंट भारी और मोटे, दाढ़ी हल्की घुंघराली और पेशानी कम चौड़ी थी।

उसके दांत सफेद हंसों के समान थे और थोड़ी सी मुस्कराहट से सहज ही में दीख जाया करते थे। उसने मुझ से अंग्रेजी ढंग से हाथ मिलाया और अपने नजदीक ही उस बैन्च जैसे सिंहासन पर बिठा लिया। यह सिंहासन इतना ऊँचा था कि इस पर बैठकर मेरे पैर जमीन तक नहीं पहुँच सकते थे जिसके कारण मैं बड़ी असुविधा अनुभव कर रहा था। उसने शीघ्र ही दूसरे दिन का कार्य क्रम बनाया और मेरे सामने शेर के शिकार का प्रस्ताव रखा। उसके दो ही खास कार्य थे शेर का शिकार और दूसरा खेल। कोई भी व्यक्ति इसके अलावा किसी चीज के बारे सोच सकता है। यह उसकी समझ में न आता था। और मैंने

भी उसे इस बात का यकीन दिला दिया कि मैं उसके इस मनोरंजन का साथी बनने के लिए तैयार हूँ तो वह बहुत खुश हुआ।

मुझे अपने काम में उसके सहयोग की बहुत अधिक जरुरत थी। इस लिये मैंने उसकी रुचि की प्रशंसा करके उसकी खुशामद की जिससे वह बहुत ही खुश हुआ और उसने प्रसन्न होकर मुझ से अपने पहलवानों की कुस्ती देखने के लिये कहा। वह मुझे चौकोर स्थान पर ले गया वह लोग इस स्थान को अखाड़ा कहते थे।

आज्ञा होते ही दो नंगे धड़ंगे आदमी अखाड़े में कूद पड़े। उनके हाथ फौलाद जैसे कठोर थे। उन्होंने फौरन ताल ठोक कर आपसमें वार करना आरम्भ कर दिया और थोड़ी ही देर में उनके नुकीले पंजो के कारण दोनों के शरीर से खून की धारा बह निकली।

काफी समय तक यह कुस्ती होती रही यहां तक कि उन दोनों पहलवानों के शरीर छलनी हो गये। ये दोनों एक दूसरे की देह को तेज पंजो से नोच रहे थे राजा इस भयानक कुस्ती को देखकर आनन्द ले रहा था। बार २ वह आनन्दित हो कर बढ़ावा देने लगा। पहलवानों की हरेक हरकत की अपने आप नकल कर उठता। और कभी २ चिल्ला उठता—जोर लगा······!······और जोर से !······अरे, मार मार ! ······मार।

उनमें से एक पहलवान पृथ्वी पर बेहोश होकर गिरपड़ा। वह खून से बिलकुल सराबोर हो गया था। राजा ने बड़ी निराशा का भाव दिखाया। शायद उसे इस बात का दुख था कि खेल इतनी जल्दी बन्द हो गया।

उसने मेरी राय जानने के लिये मेरी ओर मूंह फेरा। मेरे हृदय में बड़ी पीड़ा हो रही थी। पर मैंने अपने हृदय की पीड़ा को छुपाते हुए

मैंने उसे बधाई दी। उसने मेरे ठहरने का प्रबन्ध विलास गृह में किया था। विलास गृह शाही महल के बगीचे के दूसरे छोर पर था और इस महल की एक दिवार झील के पानी में बनी हुई थी। इसका आकार चौकोर था और इसमें गुम्बदों की तीन पंक्तिया थीं। प्रत्येक कोने में नीचे झुके और महरावदार मीनार थे।

ये एक २ या साथ २ जोड़े के रूप में खड़े थे जो देखने में एक दूसरे से बिलकुल भिन्न थे। इन मीनारों के लिये क्या कहूँ, ऐसे लगते थे मानो पूर्वीय शिल्प के तरु की डालियों पर खिले हुए फूल हों इन मीनारों पर छतें बनी हुई थीं जो हमारे यहां की सर्वश्रेष्ठ टोपियां सी लगती थीं।

बारादरी के बीच बड़ी वाले मीनार के पास एक गुम्बद की गोलाई किसी स्त्री की उभरी हुई छाती की तरह उठी हुई थी। ऊपर से नीचे तक सारा महल नयनाभिराम नक्काशी से भरा था। स्थान स्थान पर ऐसी अनेक मूर्तियाँ और आकृतियां गढ़ी हुई थीं, जिनके हाव भाव और जिनकी क्रियाएँ भारतीयों के रहन-सहन की कथा कह रही थीं।

"सारे कमरों में झालरदार महराब वाली खिड़कियों से प्रकाश आता था। खिड़कियों से बगीचे दीखते थे। संगमरमर के फर्श पर विविध प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों की चित्रावलियाँ अंकित थीं।

"मैंने कठिनाई से स्नान किया होगा, कि हरिबना आ गया। हरिबना राजा का खास दरबारी था। मेरे और राजा के बीच संदेश पहुँचाने का भार उसी पर था। हरिबना ने आते ही सूचना दी, कि मुझसे मिलने को महाराज पधार रहे हैं।

"केशरिया वस्त्रों में सुसज्जित राजा ने प्रवेश कर, मुझसे हाथ

मिलाया और कुशल-क्षेम पूछने के बाद अनेक प्रकार के प्रश्न करने लगा। वह लगातार मुझसे अपनी राय पूछता रहा। अपनी सम्मति देने में मुझे काफी परेशानी हुई, क्योंकि राजाओं की बातों पर राय प्रकट करना आसान बात नहीं। उनकी पसंद दुनियां से निराली, और उनकी आदतें साधारण मनुष्यों से विचित्र होती हैं। फिर उसने अपने पुराने राजप्रसाद के ध्वंसावशेष दिखाने की इच्छा प्रकट की, जो बगीचों के उस पार थे।

"सचमुच ही वह पाषाणों का सजीव खंडहर था, जिसमें बंदरों की पूर बस्ती आबाद थी। हमारे प्रवेश करने पर बंदर दीवारों पर चढ़ गये औरी विभिन्न प्रकार की भयानक शक्लें बना-बना कर हमें सिढ़ाने लगे। अपने कलेजे से बच्चों को चिपकाये बंदरियाँ वहाँ से नौ-दो ग्यारह हो गईं। राजा खिलखिला कर अट्टहास करने लगा, और मेरा ध्यान खींचने के लिए उसने मेरी बाँहों में जोर-जोर से चुटकियाँ काटनी शुरू दीं। यों उसने अपने विनोद का समर्थन चाहा, और वहीं-खंडहरों में बैठने का इशारा किया। हमारे आस-पास चारों ओर दीवारों के सिरों पर कई सफेद गलमुच्छों वाले अजीब-अजीब जानवर, यानी बंदर हमें दिखा-दिखा कर जीभ दिखाने लगे और मुट्ठियाँ तानने लगे।

"काफी समय तक यह सब देख लेने के बाद, वह पीत-वस्त्रधारी राजा उठा, और मुझे अपनी बगल में लिए, चलने लगा। मेरे पहुँचने के दिन ही मुझे इतनी विविध वस्तुयें दिखा कर, उसे संतोष हो रहा था और बराबर वह मुझे याद दिला रहा था, कि कल मेरे सम्मान में शेर का शानदार शिकार होने वाला है।

"दूसरे दिन हम शिकार पर गए। फिर तो कई दिनों तक लगातार यही होता रहा। उस देश में पाए जाने वाले पशुओं में से कई का

शिकार हमने किया—चीते, भालू, हाथी, बारहसिंघे और मगरमच्छ आदि, यों समझिए कि संसार में पैदा होने वाले आधे से अधिक पशुओं का। इतना अधिक रक्त बहता देख कर, मैं तो उदास तथा अवसन्न हो गया। मेरा चित्त शीघ्र ही इस निष्ठुर आमोद से उचट गया। कुछ दिन बीतने के बाद राजा का जोश भी ठंडा पड़ गया और साथ ही मेरे निवेदनों का भी असर पड़ा और मुझे फुर्सत का कुछ समय अपना काम करने के लिये मिला।

"पर काम को वक्त भी उसने मुझे नहीं छोड़ा। अपने मन को सन्तोष देने के लिए बहुमूल्य भेंट और कीमती तोहफे भेजता रहा। उसने मेरे लिए हीरे-जवाहरात, वस्त्राभूषण और जानवरों की खालें वगैरा भेजीं। ये सब चीजें हरिबना भेंट करने आता, और इतने सम्मान से पेश करता, मानों मैं कोई देवता या चाँद, सूरज हूँ। लेकिन मन ही मन हरिबना मुझसे द्वेष रखता था।

"सेवकों का पूरा जलूस का जलूल राजमहल में प्रतिदिन बननेवाले विविध भांति के भोजनों की रेशमी रूमालों से ढकी हुई कई थालियाँ मेरे लियेलाता था। नित्य नई चीजों और नये कार्यक्रमों द्वारा महाराज मेरा मनोविनोद करने का प्रयत्न करते। नाच-गाने और राग-रंग होते, जादूगर मदारी, संगीतज्ञ और चित्रकार आते। कभी-कभी फौजी परेड भी होती। मैं सदैव इस बात का प्रयत्न करता कि अधिक से अधिक प्रसन्नता प्रकट करूं ताकि उसके हृदय को आघात न पहुँचे क्योंकि अपने इच्छानुसार वह मुझे उस अनोखे देश का दर्शन उसके सम्पूर्ण आकर्षण, मनोमोहकता और गौरव के साथ करा रहा था।

"ज्यों ही मुझे कुछ क्षणों का अवसर मिलता, मैं अपने काम में जुट जाता या बन्दरों को देखने चला जाता, जिनका साथ मुझे उनके मालिक महाराज अधिक सुहाता था।

"एक संध्या को जब मैं सैर से वापस आया, तो देखा कि हरिबना मेरे महल के द्वार पर खड़ा है। उसने रहस्यमय लहजे में मुझे बताया, कि महाराज ने आज मेरे लिये एक विशेष भेंट भेजी है, जो कमरे में पहुंच चुकी है। उसने यह भी कहा महाराजा ने क्षमा चाहते हुये, इस बात पर अत्यन्त खेद प्रकट किया है, कि उन्हें इतने दिन तक इस चीज का ख्याल नहीं आया और इसी कारण मैं इतनी लम्बी अवधि तक इस से लाभ उठाने से वंचित रहा।

"उस विस्मयकारी विवरण के साथ वह 'राजदूत' हरिबना सलाम कर के चला गया। जब मैं भीतर गया तो मैंने कि छः छोटी-छोटी लड़कियाँ दीवार के सहारे अचल और पंक्तिबद्ध खड़ी हैं, ठीक सींक में पिरोई हुई मछलियों की तरह। उनमें सब से बड़ी शायद दस वर्ष की थी। पहले तो बड़ी देर तक मेरी समझ में नहीं आया, कि मेरे कमरे में यह कन्या पाठशाला खोलने की आवश्यकता क्यों कर पड़ी। फिर मुझे महाराजा की नाजुक-ख्याली का ध्यान आया। उसने तो मुझे एक अच्छा-खासा हरम ही भेंट कर दिया था। अपनी उदारता के आधिक्य के कारण उस ने बहुत ही नादान और कमसिन लड़कियाँ चुन-चुन कर मुझे भेजी थीं। उस देश में फल जितना कच्चा होता है, उतना अधिक सम्मान उसे दिया जाता है। वहाँ कली का मोल फूल से कहीं अधिक ज्यादा है।

"काफी समय तक मैं बड़ी परेशानी में रहा, असमंजस में पड़ा रहा। उन बालिकाओं के सामने मैं शर्म से गड़ा जा रहा था। वे अपनी बड़ी-बड़ी, गंभीर और मासूम आँखों से मुझे टुकर-टुकर कर निहार रही थीं, और उन्हें इस बात का भान हो गया था। कि वे मेरे पास किस लिये भेजी गई हैं।

"समझ में नहीं आ रहा था, कि उन्हें क्या कहूँ, क्या न कहूँ।

इच्छा हुई, कि उन्हें तुरन्त वापस भेज दूँ। पर क्या महाराज के तोहफे को लौटाना क्या आसान बात है ? इसका तो स्पष्ट अर्थ होता है उस का घोर अपमान, उसकी पसन्द से चुन-चुन कर मँगाई गई अमूल्य वस्तुओं का निरादर और तिरस्कार, जिस पर मेरा सिर धड़ से अलग भी हो सकता था ! अजब मुसीबत में फँसा था मैं। अतएव मजबूर हो यह पल्टन की छावनी मैंने महल में लगवा ही दी ।

"वे अचल भाव से मुझे देखती रहीं। उन्हें मेरी आज्ञा की प्रतीक्षा थी, और वे खड़ी-खड़ी मेरी आंखों में मेरे विचारों को पढ़ने का प्रयत्न करती प्रतीत होती थीं। भाड़ में जाय ऐसी भेंट ?

"अन्त में यह सोच कर, कि यों खड़ा रहना तो अच्छा नहीं लगता और ये समझती होंगी, कि यह फिरंगी भी अजीब जानवर है, मैंने उन में से सब से बड़ी का नाम पूछा।

"चोली?' उसने कहा।

"वह नन्हीं लड़की अपने सुन्दर स्वरूप में बड़ी भली लगरही थी। उसमें आश्चर्यजनक मधुरता थी, और उसका रंग पीला था, जैसे पुराना हाथी दाँत !

"वह एक पूर्ण प्रतिमा थी अपने सुन्दर चेहरे और समस्त आकार-प्रकार सहित !

"उसका जवाब जानने के लिये और उसे किसी हद तक परेशान करने के लिये, मैंने यों ही पूछा—'तुम यहाँ क्यों आई हो ?'

"उसने अत्यन्त सुरीले स्वर से उत्तर दिया—'अपने स्वामी की सेवा के लिये, और उसकी सारी इच्छायें पूरी करने के लिये !'

"सच मानिए, वह तन-मन समर्पिता थी।

"तब मैंने यही प्रश्न सब से छोटी लड़की से किया—उसने तत्काल अपनी पतली, महीन आवाज में उत्तर दिया—'स्वामी, आप जो आज्ञायें दें, उन्हें पूरा करने आई हूँ।'

"यह लड़की क्या थी? एक छोटी चुहिया-जैसी थी, वह और अन्य लड़कियों की तरह लुभावनी थी। अतः मैंने उसे अपनी बांहों में उठाकर चूम लिया। शेष लड़कियाँ यह जान कर, कि मैंने अपने पसन्द की लड़की चुन ली है, जाने लगीं' किन्तु मैंने उन्हें रुकने का आदेश दिया और भारतीय ढंग से जमीन पर बैठ कर उन सब को अपने चारों ओर बिठा लिया। अब तक मैं हिन्दुस्तानी बोली बोलने लगा था, उन्हें मैं परियों की कथा सुनाने लगा।

"बड़े ध्यान से वे सुनती रहीं। कथानक के प्रवाह में प्रवाहित होती हुई, वे भयानक घटनाओं वर्णन पर कांप उठतीं, और दुख के स्थलों पर अपनी अंगुलियाँ चटखाती। बेचारी लड़कियाँ कुछ ही समय में यह भूल गई, कि मेरे पास किस लिये भेजी गई थीं।

"कहानी पूरी होने पर, मैंने अपने निजी नौकर लछमन से कुछ मिठाईयाँ मंगवाई, जिन्हें लड़कियों ने इतना छक कर खाया, कि वे बीमार भी पड़ सकती थीं।

' इस प्रकार कुछ समय बीत जाने पर मुझे यह कार्य तमाशा लगने लगा। मैंने अपनी इन पत्नियों के मन-बहलाव के लिए कई तरह के खेलों की अयोजना की। ये खेल-कूद और मजे काफी सफल हुये। मैंने अपनी टांगों का पुल बनाया, और वे छहों उसमें से गुजरीं? सब से छोटी आसानी से निकल गई, पर सब से बड़ी चूंकि अधिक नहीं झुक सकती थी, इसलिये धकेलती हुई निकली। इस पर खूब खिलखिला कर हँसी।

"इस प्रकार मेरे विशाल महल के कमरे-कमरे में बाल-सुलभ खेल-कूद, चपलता और जीवन की हँसी की खिलखिलाहट गूंजने लगी।

"इसके बाद मैंने अपनी रखैलों के लिये सोने के कमरे ठीक करवाये राजा की ओर से इन के साथ ही जो चार दासियाँ आई थीं, उन्हें शयन-कक्ष के द्वार पर नियुक्त कर दिया, ताकि वे इनकी पूरी-पूरी देख भाल कर सकें।

"हफ्ते भर तक इन जीवित गुड़ियों के प्रति पिता का अभिनय निभाने में मुझे अतिशय आनन्द मिला। पकड़ दौड़ और आंख-मिचोनी के खेल हमें सबसे अच्छे लगते। प्रतिदिन मैं उन्हें नये-नये खेल सिखाता, जिनसे उन्हें बहुत खुशी होती। अब तो मेरा महल एक बाल-मन्दिर सा नजर आने लगा था। मेरी ये छोटी-छोटी सहेलियाँ, जरी के अनमोल वस्त्रों से सजी और चाँदी-सोने के जेवरों में जगमग होतीं, महल के कमरों में इधर-उधर दौड़ती फिरतीं।

"चेली बड़ी प्यारी बालिका थी, भोली और मासूम। कुछ ही समय में मुझे बहुत ज्यादा चाहने लगी थी। उसमें कुछ लज्जा और कुछ झिझक थी। वह योरपीय नैतिकता से जैसे भय खाती हो। अतएव लावण्यपूर्ण कौमार्य लिए, वह कभी एक दम गम्भीर और कभी बहुत सचेत पर चंचल रहती। मैं उसे इस प्रकार चाहने लगा, जैसे मैं ही उसका पिता होऊँ। चेली हर वक्त मेरे पास रहती, जब कि शेष लड़कियाँ बिल्ली के बच्चों की तरह महल में उछलती फिरतीं। जब मैं महाराजा से मिलने जाता, तो वह दुखी हो जाती।

"हम दोनों ने प्राचीन प्रासाद के खंडहरों में अपने मित्र बन गये, बंदरों के बीच बड़ी ही सुन्दर घड़ियाँ व्यतीत कीं। वह मेरे घुटनों पर

लेट जाती, और बड़ी देर तक वहीं स्थिर रहती। न जाने कैसी-कैसी विचित्र बातें वह करती, कभी सोच-सोच कर, और कभी बिना सोचे-समझे ही। और उस समय की उसकी आकृति और उसका चेहरा कितना सुन्दर लगता। आखिर वह उस स्वर्ण देश के सुसभ्य और सुसंस्कृत लोगों की सन्तान थी, शानदार, आदर्शवादी और स्वप्न-लोक में विचरण करने वाले महामानवों की सुपुत्री, जिसे देख कर मुझे लगता, कि सचमुच ही वह कोई पवित्र प्रतिमा है।

एक दिन उन खंडहरो में हम पीतल की बड़ी थाली में पूड़ी-मिठाई और फल ले गये। अपने सहमे हुये शिशुओं को चिपटाये, सारे बन्दर हमारे बहुत करीब आ गये, और मिठाइयाँ बंटने का बाट जोहने लगे। तब एक बड़ा बन्दर सरदार मेरे निकट आया; और भिखारी की तरह हाथ फैला कर खड़ा हो गया। मिठाई ले कर, उसने अपनी रानी बँदरिया को खिला दी। इस घटना पर शेष सारे बंदर क्रोध और ईर्ष्या से चीखने-चिल्लाने लगे। इस शोर-गुल को बन्द करने का एक-मात्र उपाय यही था, कि मैं शेष पदार्थ शीघ्रता से उन्हें बाँट दूं।

"इन खंडहरो में पर्याप्त सुविधा और एकान्त मिला। मैंने अपने सारे कागजात और औजार वहीं मंगवा लिए, ताकि वहीं बैठ कर अपना काम जारी रख सकूं। लेकिन जब वानर-दल ने मेरे वैज्ञानिक यंत्रों पर लगी तांबे की नलियों को देखा, उन्हें विनाशक हथियार जान, वे भयानक हलचल और चित्कारों के साथ वहां से चारों दिशाओं में भागने लगे। मैं अक्सर विहार-झील वाले बराम्दे में चेली को लिये अपनी संध्यायें बिताता। एक रात को बड़ी देर तक हम पूर्ण मौन धारण किये, आकाश पर फिसलते चन्द्रमा को देखते रहे' जो झील के लहराते जल पर चाँदी का तरल आवरण फैला रहा था। समुद्र तटों

पर मंदिरों के शिखरों की छतरियां पानी डूबे में डंठलों वाले कलापूर्ण कुकुरमुत्तों की पंक्ति-सी प्रतीत होती थी।

"अपनी इस गृह-स्वामिनी का सिर दोनों हाथों में ले, मैंने उसकी स्वच्छ, रेशमी पलकों पर एक दीर्घ और सुकोमल चुम्बन अंकित कर दिया। फिर उसकी बड़ी और नोकदार कजरारी आँखें चूमीं-जिन में उस प्राचीनतम अद्भुत देश का सारा रहस्य निहित था। उसके अर्द्ध मुकुलित अधरों पर भी मैंने अपने स्नेह की छाया मुद्रित की। इन चुम्बनों ने मुझ में एक प्रकार की कंपकंपी भर दी। सशक्त और कवितामय रोमांच से मेरे मन में बिजली की-सी गुदगुदी दौड़ने लगी, और ऐसा प्रतीत हुआ, मानो इस एक लड़की में इसकी सारी जाति समाई हुई है—वह रहस्यमय, जिससे संसार की समस्त जातियों और समस्त देशों ने अपनी कथित संसकृतियों और सभ्यताओं का मूलाधार पाया है।

"अब महाराजा की बात सुनिए। वह अब भी मेरे लिये तोहफे भेजता जा रहा था। एक दिन उसने मुझे एक अप्रत्याशित नई चीज भेजी, जो चेली को बहुत पसन्द आई। यह काठ का छोटा-सा सन्दूक था, जिसके बाहर चारों ओर शंख और घोंघे जड़े हुये थे। योरप में तो किसी भी बन्दरगाह पर ऐसी चीज़ कौड़ियों में मिल सकती है, पर भारत के सागरतट से कोसों दूर मध्य भारत में तो वह वस्तु अनमोल हीरा-जवाहर-सी बन गई। यही नहीं, उस रियासत में आने वाली अद्भुत वस्तुओं में वही विशेष प्रकार की समझी गई। मैंने सन्दूक को यों ही मेज़ पर रख दिया। इस बात को सोच-सोच कर, मैं विस्मित हो रहा था, कि अपना बाजार छोड़ कर कौड़ी की कीमत वाली इस नन्हीं-सी वस्तु का मूल्य कितना अधिक बढ़ गया है।

"लेकिन चेली उसे देखती थकी नहीं। पुलक-पुलक कर, वह

उस की प्रशंसा करती। बार-बार वह मुझसे पूछती—मैं इसे छू सकती हूँ ?' मेरी आज्ञा पा कर, उसने उसे धीरे-धीरे उठाया, ढक्कन थोड़ा खोला, और घोंघों पर हल्के-हल्के हाथ फिराना उसे अच्छा लगा। फिर उसने उसे बन्द कर दिया ? मुझे ऐसा लगा, मानो इस सारे कार्य-कलाप से उसे वास्तविक शारीरिक सुख प्राप्त हुआ।

"अब मैं अपना वैज्ञानिक कार्य समाप्त कर चुका था, और मेरे पेरिस लौटने का समय आ गया था। काफी दिनों तक मैं आज कल पर टालता रहा, क्योंकि मुझे अपनी नन्हीं सहेली के नाजुक दिल पर चोट लगने का भय था ! अन्त में अपनी वापसी की तारीख निश्चित करने को मैं मजबूर हो गया।

"मेरी विदाई के उपलक्ष में महाराजा की आज्ञा से फिर कुश्तियां और शिकार होने लगे। पन्द्रह दिनों तक इस आनन्द का रस ले कर, मैंने उनसे कहा, कि अब मेरा अधिक ठहरना असंभव है। महाराजा ने मुझे अपनी मर्जी पर छोड़ दिया।

"मेरी विदाई का दिन आ गया। चेली से विलग होना हृदय को दो भागों में बांटे दे रहा था। उसका बड़ा बुरा हाल था। वह मेरे सीने पर सिर टिका, फूट फूट कर रोने लगी, और सिसकियों से उस का शरीर काँपने लगा। मुझे यह न सूझा, कि उसे किस तरह दिलासा दूं। मेरे चुम्बन भी उसे शान्त न कर सके।

"सहसा मेरे मस्तिष्क में एक विचार कौंध गया। मैंने घोंघे-जड़ा सन्दूक चेली के हाथों में रख दिया—'लो, यह आज से तुम्हारा है।'

"तब मैंने उसके चेहरे पर मंद मुस्कान देखी। आंतरिक आनन्द से उसका सारा चेहरा आलोकित हो उठा। उसका यह आनन्द ऐसा

आनन्द था, जिसकी प्राप्ति असंभव स्वप्नों की आकस्मिक मूर्ति पर निर्भर होती है। उसने मुझे बड़े प्यार से अपनी बाँहों में समेट लिया। किन्तु अंतिम विदाई के समय वह पुनः पहले की तरह हिचकियाँ लेने लगी।

"मैंने अपनी सभी सहेलियों को पिता की तरह चूमा, और राज-प्रसाद को छोड़ दिया, अपने घर की लम्बी यात्रा पर चल पड़ा।

"दो वर्ष बाद बम्बई में अंग्रेजी सरकार को फिर मेरी सेवाओं की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि मैं अच्छी तरह हिन्दुस्तानी बोलने लग गया था। इस प्रकार मैं दूसरी बार हिन्दुस्तान रवाना हुआ।

"अपना काम जितनी जल्दी हो सका मैंने पूरा किया। और इस तरह मैंने फुर्सत निकाल ली। अपने मित्र महाराजा मदन और नन्हीं सहेली चेली को एक बार और देखने का निश्चय किया। मेरा ख्याल था, कि चेली अब काफी बदल गई होगी!

"महाराजा मुझसे मिल कर बहुत आनन्दित हुआ, और पहले दिन तो उसने कठिनाई से क्षण भर को अकेला छोड़ा होगा। रात में जब मुझे किसी कदर एकान्त मिला, तो मैंने हरिबना को बुला भेजा। उस के आने पर मैंने इधर-उधर के कई प्रश्न किये। अन्त में पूछा—'क्यों, वह चेली कहाँ है, जो राजा साहब की ओर से मुझे मिली थी?

"तत्काल ही उसका चेहरा उदास और वेदना से पूर्ण हो गया। फिर घबराहट के स्वर में वह बोला—'हुजूर, अब तो उसकी चर्चा न करना ही बेहतर है।'

"क्यों? वह तो बड़ी भली लड़की थी?'

"वह बड़ी बुरी साबित हुई, साहब।'

"'कौन चेली ? ...उसका क्या हुआ ? कहाँ है वह ?'

"'मेरा मतलब है, हुजूर, कि उसका बड़ा बुरा अन्त हुआ।'

"बुरा अन्त ! क्या वह मर गई ?"

" 'जी हुजूर। उसने बड़ा भयानक काम किया था।'

'मुझे बड़ा दुःख हुआ। अपने हृदय की धड़कनें मुझे साफ-साफ सुनाई देने लगीं। मेरे सीने पर जैसे किसी ने दुख का पहाड़ रख दिया हो। मैंने हरिबना पर जोर डाला, कि वह सारा हाल बताये, कि चेली का क्या कुसूर था, और क्या उसका परिणाम हुआ।

"वह और अधिक परेशान और संतप्त हो गया, और बड़-बड़ाया—'यह अच्छा होगा, कि हुजूर आगे न पूछें।'

"'लेकिन मैं जानना चाहता हूँ।'

" उसने चोरी...'

" किसने, चेली ने ? उसने क्या चुराया था ?'

" एक चीज, जो आपकी थी।'

" मेरी चीज ! क्या कहते हो ?'

" आपकी बिदाई के ही दिन उसने वह छोटा सन्दूक चुरा लिया था, जो महाराजा ने आपको दिया था। वह उसके हाथों में पकड़ा गया।

" 'तुम कौन-से सन्दूक की बात कर रहे हो ?'

" 'घोंघे वाले सन्दूक को, 'हुजूर।'

" 'लेकिन, वह तो मैंने उसे दिया था।'

"हरिबना मेरी ओर मुँह बाए बेवकूफों की तरह देखने लगा। फिर बोला—'साहब' लाख-लाख सौगन्ध खा कर उसने कहा था, कि

'सन्दूक आपने ही उसे दिया है। लेकिन किसी ने इस बात पर विश्वास नहीं किया, कि आप एक दासी को महाराजा साहब की दी हुई भेंट भी दे सकते हैं। इसी लिए महाराजा साहब ने उसे सजा दी'

"क्या सजा मिली उसे ? उसके साथ क्या किया गया ?'

'वह बाँध कर एक बोरे में बन्द कर दी गई, और फिर इस खिड़की से झील में फेंक दी गई। इसी कमरे की उस खिड़की में, हुजूर। यहीं उसने चोरी भी की थी।'

"मुझे अति असह्य पीड़ा का अनुभव हुआ। मेरे जीवन मे ऐसे दुख का प्रवेश पहले कभी नहीं हुआ था। मैंने हरिबना को चले जाने का इशारा किया, ताकि वह मेरी आँखों के आँसू न देख सके।

"झील वाले बरामदे में ही खड़े-खड़े मैंने वह रात काटी। उसी के बरामदे में अकसर उस मासूम बच्ची को मैंने अपने घुटनों पर खिलाया था। मेरा हृदय वेदना से टूक-टूक होने लगा। मेरी आँखों में रह-रह कर यह चित्र घुमने लगा—नीचे झील की अनन्त, काली गहराई में बोरे में बन्द उसकी नन्हीं सुन्दर देह पड़ी है। बोरे में दम घुट जाने से उसका मनोहर मुखड़ा विकृत हो गया है।"ओह!

दूसरे ही दिन मैं वहाँ से रवाना हो गया हालाँकि महाराजा ने बहुत रोका, और उन्हें दुख भी हुआ।

"मुझे आज, इस क्षण तक भी यही प्रतीत होता है कि जैसे मैंने जीवन-भर चेली के सिवाय किसी अन्य लड़की से प्रेम नहीं किया।

सुन्दर रात की परछाइयाँ धीरे-धीरे गिर रही थीं। औरतें भवन के गोल कमरे में बैठी थीं और आदमी बाग में रखी शराब के खाली प्यालों से भरी, एक बड़ी मेज के चारों ओर बैठे धूम्रपान कर रहे थे। अन्धकार क्षण-प्रतिक्षण बढ़ता ही चला जा रहा था और उस अंधकार में उन लोगों के सिगार आँखों की तरह चमक रहे थे। पिछली रात यहाँ जो डरावनी दुर्घटना हो गई थी, उसी के सम्बन्ध में ये लोग बात-चीत कर रहे थे। कल रात सामने वाली नदी में इन मेहमानों के देखते-देखते, दो आदमी और तीन औरतें डूब गई थीं।

जनरल डी० जी० ने टिप्पणी की—'हाँ, ये चीजें डराने वाली हैं, परन्तु इन्हें दहशत पैदा करने वाली घटनायें नहीं कही जा सकतीं। इस तरह की एक दुर्घटना हमें द्रवित कर सकती है, कम्पा सकती है, परन्तु वह दहशत पैदा करने के लिए सिर्फ आत्मा की उत्तेजना ही काफी नहीं है, भयंकर मौत का दृश्य भी उसके लिए काफी नहीं है, उसके लिए कंपा देने वाला रहस्य या अत्यन्त असाधारण भय की अनुभूति का होना ही आवश्यक है। ऐसा रहस्य या भय, जो प्रकृति की सीमा से भी बाहर का हो। किसी आदमी की अत्यन्त नाटकीय परिस्थितियों में होने वाली मौत भी दहशत पैदा नहीं कर सकती। युद्धक्षेत्र दहशत पैदा नहीं कर सकता, खून दहशत पैदा नहीं कर सकता,

बुरे से बुरे अपराध भी प्रायः दहशत पैदा नहीं कर सकते । पर मेरे जीवन की दो ऐसी घटनायें हैं, जिन्होंने मुझे महाभयंकर दहशत का मतलब समझा दिया–

'सन् १८७० के युद्ध के दिनों की बात है। हमारी सेनायें हारकर रोअन के रास्ते पोएट-ओडमीर की ओर वापस आ रही थीं। इस फौज में बीस हजार अव्यवस्थित, विशृंखल, थके- हारे और उत्साह-हीन सैनिकों को छावरे में पुनः संगठित होना था।

जमीन बर्फ से ढकी पड़ी थी। रात हो रही थी। पिछले ४८ घण्टों से उनके पेट में कुछ भी नहीं गया था और इस अर्से में वे लगातार पीछे हट रहे थे। जर्मन सेनाएं उनसे दूर नहीं थीं। भारी हो रहे काले आसमान के नीचे, बर्फ से भरा हुआ नीले रंग का उजाड़-सा यह नार्मन प्रदेश दूर तक फैला हुआ था।

निर्जीव सान्ध्य-प्रकाश में भागती हुई फौजों के उलझे हुए शब्द के अतिरिक्त और कोई ध्वनि वहाँ सुनाई नहीं देती थी। मार्च के शब्द, घोड़ों की टापें हथियारों की खड़खड़ाहट सबकी सब अव्यवस्थित। झुके हुए, गोल-कन्धों वाले, मैले, बहुत-से तो बिल्कुल चिथड़ों में लिपटे हुए मनुष्य उत्साह-हीन हो कर शीघ्रता के साथ इस बर्फ पर लगातार चले जा रहे थे।

उनके हाथ अपनी बन्दूकों के घोड़ों पर चिपटे हुये थे। उस रात सर्दी बहुत अधिक थी। मैंने देखा कि एक फौजी बर्फ पर नंगे पैर चल रहा है। उसका जूता उसे इतना अधिक काटता था। यह भी मैंने देखा कि अपने प्रत्येक कदम के साथ वह सफेद बर्फ पर खून का बड़ा सा निशान बनाता चला जा रहा है। कुछ देर को जरा दम लेने के लिए वह जमीन पर बैठ गया, मगर उसके बाद वह उठ नहीं सका। जो

आदमी एक बार भी दम लेने को बैठा, अकड़ कर वहीं बैठा रह गया।

इस तरह मरनेवालों की संख्या क्रमशः बढ़ती चली गई। फौज में जो बेचारे कमजोर थे, वे निराहार रहे और लगातार चलने ने उन्हें और भी अशक्त बना दिया था। मैं देख रहा था, क्रमशः उनकी चाल धीमी पड़ती है। फिर वे सहसा रुक जाते हैं, जैसे कोई उन्हें किसी निश्चित स्थान पर सी देता हो। अगले ही क्षण उनके शरीर लकड़ी के समान अकड़ जाते थे, जैसे हम लोग जगह-जगह पत्थर की आदमकद मूर्तियाँ छोड़ते चले जा रहे हों।

हम लोगों में से जिनका स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अच्छा था, जिस-किसी तरह उस बर्फ पर आगे बढ़े जा रहे थे। हमारी मज्जा तक जमी जा रही थी। उस उजाड़ और मौत के प्रदेश में दर्द, हार और निराशा से पिसे हुए हम लोग ैसे-तैसे चले जा रहे थे। परित्याग, मौत और शून्यता की अत्यन्त अप्रिय अनुभूतियाँ हमें हर वक्त बनी रहती थीं।

ऐसे वक्त मैंने देखा कि दो सैनिक एक अजीब-से दिखाई देनेवाले आदमी को पकड़कर लिए आ रहे हैं। छोटा-सा और बूढ़ा-सा दिखाई देने वाला आदमी सचमुच बहुत अजीब मालूम पड़ता था। दोनों सैनिकों का खयाल था कि वह जासूस है, और इसी कारण वे किसी अँफसर की तलास में थे। 'जासूस' शब्द ने लड़खड़ाकर चलते हुये सभी सैनिकों को जैसे चौकन्ना कर दिया। सैकड़ों सैनिकों ने उस कैदी को घेर लिया सहसा किसी ने चिल्लाकर कहा—इसे गोली से उड़ा देना चहिए। इस चिल्लाहट ने उन थके-मांदे सैनिकों में एक विशेष प्रकार का उत्साह, एक विशेष प्रकार के पाशविक क्रोध की लहर पैदा करदी और वे सबके सब खून करने पर उतारू हो गए।

मैंने कुछ कहना चाहा। मैं उनका सबसे बड़ा अफसर था; मगर

इस वक्त वे किसी अफसर की भी सुनने को तैयार नहीं थे। वे मुझे भी गोली मार सकते थे।

एक सैनिक ने कहा—पिछले तीन दिनों से यह आदमी हमारा पीछा कर रहा है। हर एक से हमारी फौज के बारे में अजीब-अजीब तरह का सवाल करता है।

मैंने उस आदमी से पूछा—'तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम क्या चाहते हो? फौज के पीछे-पीछे तुम क्यों चले आ रहे हो?

वह शायद बहुत अधिक घबरा गया था लड़खड़ाती-सी देहाती जबान में उसने जो कुछ कहा, वह किसी की समझ में नहीं आया। वह आदमी सचमुच बहुत अजीब सा दिखाई दे रहा था। वह कमजोर-सा, घबराया-सा बूढ़ा-सा, बेढंगा आदमी मेरी निगाह में कभी जासूस तो हो ही नहीं सकता था। अव्यक्त सी ध्वनि में कुछ कह कर दीन और गरीब-सी निगाह से वह मेरी ओर देखने लगा।

इसी वक्त फौजी चिल्लाए—'इसे गोली से उड़ा दो! इसे उड़ादो!' मैंने अब साथ के सैनिक से पूछा—'तुमने इससे कुछ पूछा है?'

मैं अपनी बात समाप्त भी न कर पाया था कि भीड़ से एक धक्का आया और मैंने पाया कि मैं दूर धकेल दिया गया हूँ। क्षण भर में उत्तेजित सिपाहियों ने उस आदमी को धक्का देकर गिरा दिया और साथ के एक वृक्ष के साथ बांध दिया। बर्फ पर पड़ा वह आदमी पहले ही मरा हुआ-सा दिखाई दे रहा था।

और उसी वक्त बीसों गोलियाँ एक साथ उस के शरीर पर लगीं। उत्तेजना ने मेरे सैनिकों को निरा पशु बना दिया। अन्धकार ही में वे बार-बार उस आदमी के क्षत-विक्षत निर्जीव शरीर पर गोलियाँ चलाने

लगे। जिस तरह अर्थी पर गुलाबजल का छिड़काव किया जाता है, उसी तरह उस वक्त व्यक्ति पर मेरे फौजी लगातार गोलियाँ चलाए जा रहे थे।

परन्तु अचानक एक चिल्लाहट सुनाई दी—'जर्मन! जर्मन!!' और सभी फौजी जिधर बन पड़ा, भाग खड़े हुए। थोड़ी ही देर में मैंने देखा कि मुझे और मेरे दो शरीर-रक्षक सैनिकों को छोड़ कर उस वृक्ष के नीचे और कोई भी व्यक्ति बाकी नहीं रहा है। उन दोनों सैनिकों ने उस खून से भरे चिथड़े हुए शरीर को उठाया।

मैंने कहा—'हमें इसकी परीक्षा करनी चाहिए।'

"मेरी जेब में दियासलाई की एक डिबिया थी। मैंने वह एक सैनिक को दी। दूसरे सैनिक के पास भी दियासलाई थी। मैं उन दोनों सैनिकों के बीच में था।

दियासलाई जली, जो सैनिक शरीर की परीक्षा कर रहा था, बोला—'नीला ब्लाउज, पतलून, जूते।'

पहली दियासलाई समाप्त हो गई। हम लोगों ने दूसरी दियासलाई जलाई। सैनिक ने अब के जेबों को टटोला—एक सींगवाला चाकू, एक रुमाल, सुँघनी की एक डिबिया, थोड़ा सा धागा, रोटी का एक टुकड़ा।'

दूसरी दियासलाई समाप्त हो गई। हमने तीसरी दियासलाई जलाई। सैनिक तलाशी लेता रहा और बाद में बोला—'और कुछ नहीं।'

मैंने कहा—'उसके कपड़े उतारो, शायद अन्दर कोई चीज मिले।'

अब मैं दियासलाईयाँ जलाने लगा और वे दोनों सैनिक उस व्यक्ति के खून से भरे क्षत-विक्षत कपड़ों को उतारने लगे। एक-एक करके सब कपड़े उतार दिये गए। माँस का वह बड़ा-सा कटा-फटा लोथड़ा इस वक्त तक भी ठंडा नहीं हुआ था। मैंने एक दियासलाई और जलाई। सहसा एक सैनिक चिल्लाया 'ओह मेरे भगवान! साहब यह तो एक औरत है।'

दोनों सैनिक चुपचाप बुत से खड़े रहे। जैसे वे मेरी राय जानना चाहिते हों। मगर मुझे समझ ही नहीं आया कि इस वक्त क्या सोचूँ, । किस नतीजे पर पहुँचूँ।

आखिर एक सैनिक ने कहा—'शायद इस बूढ़ी औरत का बेटा फ्रांसीसी फौज में होगा और यह उसकी तलाश में यहाँ तक आई होगी।'

दूसरा सैनिक बोला—'शायद क्यों? जरूर यह अपने बेटे की तलाश में निकली होगी।'

और मैं, जिसने अपनी जिन्दगी में सैकड़ों अत्यन्त भयंकर बातें देखी हैं, उस वक्त बरबस रोने लगा। बर्फीली ठंडी रात में उस क्षत-विक्षत नारी देह की मौजूदगी में मुझे समझ आया कि 'महाभयंकर दहशत' किस चीज का नाम है। मैंने डर कर आंखें बन्द कर लीं। हे भगवान, वह औरत थी।

वह कौन था ?

बहुत दिनों के बाद अब मैं यह तय कर पाया हूँ कि वह घटना जो कुछ दिनों पहले मेरे साथ घटी थी, लिख ही डालूं। कितनी रहस्य पूर्ण थी वो घटना, बिल्कुल एक कल्पित जासूसी उपन्यास की तरह। शायद आप इस घटना को कल्पित समझेंगे, और अगर यह मेरे साथ न घटी होती तो मैं भी उसे एक कल्पना, कोरी कहानी ही समझता। पर यह घटना अलीबाबा की, "खुल समसम की तरह कल्पित नहीं है, यह वास्तव में वह सत्य है जो मैंने अपनी आँखों से देखा।

मुझे अपने घर को सजाने का बहुत शौक है। मेरा घर, मेरे लिए एक अलग दुनियां है। मैं अपनी मेज कुर्सियों और दूसरे फर्नीचर, मूर्ति आदि को इतना प्यार करता हूँ, जितना कोई अपने भाई या मित्र को करता है। मैंने अपने घर को बड़े सुन्दर ढंग से सजाया था। मैं वहां बैठकर उसी प्रकार शान्ति का अनुभव करता था, जिस प्रकार कोई अपनी प्रियतमा की बाहों में बैठकर सुख का अनुभव करता है।

एक दिन शाम को मैं सिनेमा देखकर लौट रहा था, उसके सुन्दर दृश्य मेरी आँखों के सामने नाच रहे थे। मैं धीरे धीरे गुनगुनाता हुआ चला जा रहा था। घर के पास आकर देखा तो घर के बाहर बाग के पास की बत्ती खराब हो गई थी जिसके कारण वहाँ अंधेरा छाया हुआ था। मैं मन ही मन माली पर खीजा, कि उसने यह बत्ती ठीक क्यों नहीं करा ली।

अब मैं बाग के फाटक पर पहुँच चुका था। मैंने धीरे से बाग का फाटक खोला; उस अंधेरे में मेरा मन घबड़ा रहा था। मैं बाग के बीचों बीच पहुँचकर रुक गया। वहां बिल्कुल शान्ति थी, एक पत्ता तक नहीं हिल रहा था, ऐसा लगता था मानो हवा भी साँस रोके खड़ी है। मुझे कुछ डर-सा लगने लगा। फिर मैंने हिम्मत करी, यह मुझे क्या हो रहा है? मैंने अपने मन से पछा। मैं इसी तरह दस वर्ष से बारह बजे ही घर पर लौटता था, किन्तु कभी भी इस प्रकार के भय ने मुझे नहीं घेरा। मैंने अपने मन ही मन में कहा—अंधेरा है तो क्या हुआ, मेरे पास रिवाल्वर है और मैं किसी भी खतरे से भागने की बजाय मुकाबला करना अच्छा समझूंगा।

मैं धीरे-धीरे घर की ओर बढ़ने लगा, पर लाख ढाढस देने पर भी मेरे पांव कांप रहे थे। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे आज कुछ होने वाला है। आखिर में, मैं अपने बरामदे की कुर्सी पर बैठ गया और कुर्सी पर सर टिकाकर बहुत देर तक सामने पेड़ों के झुरमुट को घूरता रहा। एकाएक मुझे हलकी गड़गड़ाहट सी सुनाई दी। किन्तु मैंने उसकी उपेक्षा कर दी।

अब यह सुनाई देने वाली गड़गड़ाहट और भी तेज होती जा रही थी। मैंने कान लगाकर आहट ली, यह गड़गड़ाहट का शब्द मेरे मकान में से ही आ रहा था। मैं साँस रोककर दरवाजे की ओर देखने लगा। यकायक जो मैंने देखा उसे देखकर मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। मेरे घर की सभी चीजें एक एक करके बाहर आ रही थीं और वह भी स्वचलित। वे बड़ी-बड़ी कुर्सियां, ऊंचे और आराम देह सोफे अपने छोटे-छोटे पांवों से रेंगते हुए बाहर आ रहे थे!

अब आप ही सोचिये उस समय मेरी क्या हालत होगी। मैं पास

ही झाड़ियों में घुस गया और छिपकर अपनी इन मेज कुर्सियों के इस रेले को देखने लगा। एक एक करके घर की सारी चीजें फुदकती हुई बाहर चली आ रही थी। थोड़ी देर में मेरा प्यानो निकला, वह प्यानो जो संगीत से मेरे सारे घर को गुंजा देता था अब बेपरवाही से भागा जा रहा था; बलगाम घोड़े की तरह। छोटे बड़े ब्रश, शीशे, बोतलें, चीटियों की तरह कतार बांधे रेंगते चले जा रहे थे।

अब मैं अपने आप पर काबू न रख सका और दौड़कर मेज के पाये को कसकर पकड़ लिया। वह भागने के लिये जोर लगा रही थी और मैं उसे अपनी ओर खींच रहा था। हम दोनों आपस में ऐसे गुथे हुये थे जैसे कोई मालिक चोर को भागते हुये देखकर गुथ जाता है। मैंने बहुत जोर लगाया अन्त में मेज का पाया मुझ से छूट गया और मैं रास्ते में गिर पड़ा। मेरे पीछे और घर की चीजे आ रही थी, उन्होंने रुकने के बजाय मुझे कुचलकर आगे बढ़ना शुरू कर दिया।

अन्त में मैं जान बचाकर उनके रास्ते से खिसक आया और भागकर पेड़ों के पीछे छुप गया। मैं आँखे फाड़-फाड़कर अपने घर की छोटी से छोटी चीज घर से भागते देख रहा था।

अब मैं वहां बहुत देर तक रुक न सका और भागकर शहर की राह ली। शहर में पहुँचकर एक जाने पहचाने होटल का दरवाजा खटखटाया किसी तरह कपड़े की धूल झाड़कर अपनी शक्ल ठीक की और होटल वालों से कहा कि मेरी तालियों का गुच्छा कहां खो गया है। मैं होटल वाले को यह आदेश देकर कि मेरे नौकर को सुबह खबर पहुँचा दी जाय, मैं सो गया।

मेरे नौकर ने सुबह आकर दरवाजा खटखटाया मैंने देखा, कि वह बुरी तरह घबराया हुआ था।

"रात में बड़ी भयानक घटना हो गई सरकार।" उसने कहा।

"क्यों, क्या हुआ ?"

"घर की सारी चीजें चोरी चली गईं, सरकार कुछ भी तो नहीं बचा घर में।

उसकी यह बात सुनकर मुझे कुछ शान्ति-सी मिली। क्यों ? यह मैं खुद नहीं जानता।

इसके पश्चात् महीनों पुलिस की जांच चलती रही किन्तु मैंने जो देखा था किसी को कुछ न बताया। मेरे गहनों, कपड़े लत्तों में से एक चीज का भी पता न लगा और नहीं कोई सुराग चोर का मिला।

उस घटना के पश्चात् मैंने अपने घर को बसाने की कोशिश नहीं की। क्योंकि मुझे भय था कि जो एक बार हो चुका है वह फिर भी हो सकता है। फिर मैं उसके बाद उस घर में गया ही नहीं और शहर के एक होटल में जाकर ठहर गया। मैंने डाक्टरों से अपने स्वास्थ्य के बारे में राय ली। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारा घूमना फिरना ही तुम्हारे रोग का इलाज है और मैं उनकी राय मानकर यात्रा पर निकल पड़ा।

सबसे पहले मैं काशमीर पहुँचा। वहां की आब हवा का अच्छा प्रभाव पड़ा। उस के बाद शिमला, मंसूरी, नैनिताल, जितने भी स्थान स्वास्थ्य के लिये सुन्दर कहे जा सकते थे उन सभी स्थानों पर मैं थोड़े २ दिन ठहरा। अब मेरा शरीर काफी हृष्ट-पुष्ट हो गया था।

एक दिन मैं शाम को लाहौर की बड़ी २ सड़कों पर घूम रहा था। सड़क के दोनों ओर पुराने ढंग के बड़े २ मकान थे। एकाएक मेरी नजर पुरानी मेज कुर्सियाँ बेचने वाले की दुकान पर पड़ी। यहां पर पुरानी कुर्सियां, सोफे, नई और पुरानी चाल की मेजें, सुन्दर खुदाई की चौकियां देवताओं और सन्तो की मूर्तियां रखी हुई थीं।

मैंने इस दुकान के अन्दर जा कर वहां की वस्तुओं को देखना शुरू किया। मैं सब चीजें देख ही रहा था, कि एकाएक मेरी नजर एक चीज पर पड़ी। उसे देख कर मैं दंग रह गया। मैंने देखा कि पुरानी चीजें के अम्बार के एक कोने में मेरा सुन्दर और कीमती डब्बा रखा है। इसके आसपास और भी कई कीमती चीजे बेतरकीब पड़ी थीं!

मैं कांपता हुआ अपने डब्बे की ओर बढ़ा। मैं इतना घबड़ा गया था कि उसे छूने की हिम्मत न कर सका। कुछ देर हिचकिचाने के बाद मैंने उसे उठा लिया, अलट पलट कर देखा, डब्बा मेरा ही था। इस में मुझे कोई भी संदेह न रहा।

अपनी इन प्रिय और दुर्लभ वस्तुओं को एक कबाड़ीखाने में बिक्री के लिये पड़ी देख कर मेरी क्या दशा हुई होगी। इसका आप सहज में ही अनुमान लगा सकते हैं। मैं साहस करके और अन्दर घुसा और काफी देर तक उस दुकान में घूमता रहा। मुझे समय का भी पता न लगा।

अब रात हो गई थी मैं बाहर आकर एक आराम कुर्सी पर बैठ गया और दुकानदार की प्रतिक्षा करने लगा!

काफी समय पश्चात् मैंने किसी के पैरों की हल्की सी आवाज सुनी। परन्तु यह आवाज कहां से आ रही थी इसका मैं पता न लगा सका, कि यकायक पास वाले कमरे से रोशनी हुई फिर किसी ने पूछा—
"कौन है?"

"एक ग्राहक" मैंने उत्तर दिया!

"समय बहुत हो गया है अब कल आइएगा!"

"लेकिन मैं तो आपकी एक घंटे से प्रतिक्षा कर रहा हूँ।"

"ठीक है ! कल आइएगा ।"

"कल तो मैं रहूँगा ही नहीं ! मैं बाहर जा रहा हूँ ।"

मैं अपनी जगह से ही बात कर रहा था और वह व्यक्ति भी मेरे पास नहीं आया ।

मैंने फिर आवाज दी । "क्या आप आ रहे हैं ?"

"मैं आपका इन्तजार कर रहा हूँ ।" उसने कमरे में से ही उत्तर दिया ।

मैं उठकर उसके कमरे की ओर चल पड़ा । वहाँ पहुँचकर मैंने देखा कि एक बड़े कमरे में एक नाटा, मोटा, गुट्टा-सा आदमी दिखाई दिया । उसकी खोपड़ी बिल्कुल गंजी थी । लम्बी और पतली सी दाढ़ी बड़ी भद्दी मालूम हो रही थी । उसने अपने फैले हुये हाथों में एक मोमबत्ती थाम रखी थी, जिसे उसने मेरा मुंह देखने को उपर को उठाया । मोमबत्ती के प्रकाश में उसकी गंजी खोपड़ी उस पुरानी मेज कुर्सी की दुकान में चाँद की तरह चमकने लगी । उसके चहरे पर बुरी तरह झुर्रियां पड़ी हुई थीं । अपनी छोटी-छोटी आंखों को उसने और भी सिकोड़ लिया था । मोल भाव में वह बहुत शख्ती कर रहा था । काफी कहन सुनन के पश्चात् मैंने अपनी तीन कुर्सियों का भाव पटाया और उसे कुछ रकम देकर अपने होटल का पता बता दिया । यह तय हुआ कि दूसरे दिन सवेरे कुल कुर्सियां मेरे पास पहुंचा दी जाएगी ।

मैं दुकान से बाहर निकला । शिष्टाचार प्रदर्शित करने के लिये वह मुझे दर्वाजे तक छोड़ने आया ।

मैं उसी क्षण पुलिस स्टेशन पहुंचा और अपनी चोरी और खोज का सारा किस्सा पुलिस को कह सुनाया ।

दरोगा ने मुझसे कहा कि मैं अभी उस पुरुष को पकड़वा बुलाता

हूँ। क्योंकि हो सकता है कि वह चोरी का माल रातों ही रात गायब कर दे। और सब पूछ ताछ आपके सामने ही करूंगा आप एक घंटे के पश्चात् आ जाय ! मैं धन्यवाद दे कर अपने होटल खाना खाने चला आया।

मैं एक घण्टे के पश्चात् पुलिस स्टेशन पहुँचा तो मुझे देखते ही चीफ इन्सपैक्टर ने कहा:—

"हमारे सिपाही उस दुकानदार को ढूंढ न सके।"

"खेर आपने उस दुकान का तो पता लगा ही लिया होगा ?"

हां। जब तक वह वापिस नहीं आता मेरे आदमी उस मकान को घेरे रहेंगे। परन्तु वह पुरुष अभी तक गायब है।

"गायब ?

"हां, गायब। हमें पता लगा है कि वह व्यक्ति में एक शाम को अक्सर अपने पडोसी के यहां रहता है। उसके पडोस अजीब सी विधवा बुढिया रहती है जो खुद भी इस तरह की टेबिल कुर्सियों की दुकान खोले हुये है।" पुलिस स्टेशन पर बहुत देर प्रतिक्षा करने के बाद मैं अपने होटल चला आया।

सुबह जब मैं पुलिस स्टेशन पहुँचा तो पुलिस इन्सपैक्टर मुझे साथ लेकर उस दुकान की तरफ चल दिया जहां कल शाम को मैंने अपना चोरी का सामान रखा देखा था।

जब हम दुकान पर पहुंचे तो दुकान का ताला बन्द था। उन लोगों ने दुकान का ताला तोड दिया। जब मैं पुलिस वालों के साथ इस दुकान में घुसा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वहां मेरी एक भी चीज न थी। मैं आंखें फाडफाड कर सारी दुकान में देख रहा था। न तो वहां मेरी संदूकची थी और न डब्बा ही। कुर्सी, मेज, आदि

कुछ न था जो मैं कल देख गया था। अपने सारे सामान के इस प्रकार गायब हो जाने से मैं आश्चर्य चकित तो था ही, पुलिस वालों के सामने मेरी स्थिति और भी नाजुक हो गई।

इन्सपैक्टर ने मुझे तसल्ली देते हुये कहा, "शायद उसे हमारा आना पता लग गया और उसने सामान रातों रात गायब कर दिया। खैर हम उसका पता जल्दी ही लगा लेंगे!

मैं पन्द्रह दिन लाहौर में रहा, पर वह दुकानदार न लौटा। उस जैसे व्यक्ति का पकडा जाना आसान काम नहीं था। सोलवें दिन मेरे खाली मकान के चौकीदार और माली का एक अजीब पत्र मिला। उसमें लिखा था श्रीमान्। कल रात यहां एक ऐसी घटना हुई है जिसके बारे में सोचना भी कठिन है। पुलिस तक उस घटना से हैरान है। सारा सामान वापिस आ गया है। कोई छोटी से छोटी वस्तु नहीं जो वापिस न आई हो। मकान उसी ढंग से सज पडा है जैसा चोरी वाले दिन था।

हम यहां पर आपकी प्रतिक्षा कर रहे है

आपका सेवक

हीरा माली

पत्र पढने के बाद मैं पुलिस स्टेशन गया और पुलिस इन्सपैक्टर को पत्र दिखाया। वह बोला:—"इस मामले में हमें एक अच्छे चोर से सामना पडा है। पर हम उसे पकड़ कर ही रहेंगे।

परन्तु वह पकड़ा नहीं गया और न कभी पकड़ा जावेगा। पता नहीं वह कौन था।